इस विशेष आवरण को संत शिरोमणि दिगम्बराचार्य श्री विद्यासागर जी मुनि महाराज के 50वां संयम स्वर्ण महोत्सव के उपलक्ष्य में
श्री दिगम्बर जैन संरक्षिणी सभा जबलपुर के माध्यम से दिनांक 17 जुलाई 2018 को
मध्यप्रदेश डाक परिमण्डल भारतीय डाक विभाग के परिमण्डल शाखा द्वारा 5/- रूपये में जारी किया गया।

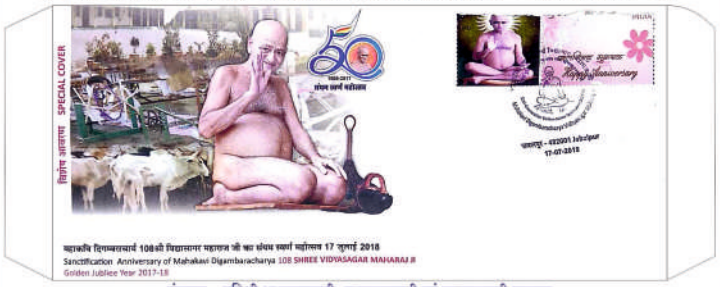

संकलन - मुनिश्री अभयसागरजी, प्रभातसागरजी एवं पूज्यसागरजी महाराज

इस तरह की और भी जानकारी इस लिंक पर देख व पढ़ सकते हैं - knowledge.sanskarsagar.org

दि.	वार	तिथि	नक्षत्र
		नवम्बर 2022	
16	बुधवार	अष्टमी	आश्लेषा
17	गुरुवार	अष्टमी	मघा
18	शुक्रवार	नवमी	पूर्वाफाल्गुनी
19	शनिवार	दशमी	उत्तराफाल्गुनी
20	रविवार	एकादशी	हस्त
21	सोमवार	द्वादशी	चित्रा
22	मंगलवार	त्रयोदशी-चतुर्दशी	स्वाती
23	बुधवार	अमावस	विशाखा
24	गुरुवार	प्रतिपदा	अनुराधा
25	शुक्रवार	द्वितीया	ज्येष्ठा
26	शनिवार	तृतीया	मूल
27	रविवार	चतुर्थी	पूर्वाषाढ़
28	सोमवार	पंचमी	उत्तराषाढ़
29	मंगलवार	षष्ठी	श्रवण
30	बुधवार	सप्तमी-अष्टमी	धनिष्ठा
		दिसम्बर 2022	
1	गुरुवार	नवमी	पूर्वाभाद्रपद
2	शुक्रवार	दशमी	उत्तराभाद्रपद
3	शनिवार	एकादशी	रेवती
4	रविवार	द्वादशी	अश्विनी दि/रा
5	सोमवार	त्रयोदशी	अश्विनी
6	मंगलवार	चतुर्दशी	भरणी
7	बुधवार	पूर्णिमा	कृत्तिका
8	गुरुवार	पूर्णिमा	रोहिणी
9	शुक्रवार	प्रतिपदा	मृगशिरा
10	शनिवार	द्वितीया	आर्द्रा
11	रविवार	तृतीया	पुनर्वसु
12	सोमवार	चतुर्थी	पुष्य
13	मंगलवार	पंचमी	आश्लेषा
14	बुधवार	षष्ठी	मघा
15	गुरुवार	सप्तमी	पूर्वाफाल्गुनी

तीर्थंकर कल्याणक

19 नवम्बरः भगवान महावीरस्वामी तप कल्याणक
24 नवम्बरः भगवान पुष्पदंत जन्म तप कल्याणक
02 दिसम्बरः भगवान अरनाथ जी तप कल्याणक
03 दिसम्बरः भगवान मल्लिनाथ जन्म-तप कल्याणक
03 दिसम्बरः भगवान नमिनाथ ज्ञान कल्याणक
06 दिसम्बरः भगवान अरनाथ जन्म कल्याणक
07 दिसम्बरः भगवान संभवनाथ तप कल्याणक
10 दिसम्बरः भगवान मल्लिनाथ ज्ञान कल्याणक

माह के प्रमुख व्रत

20 नवम्बरः मुक्तावली व्रत
26 नवम्बरः मुक्तावली व्रत
08 दिसम्बरः रोहिणी व्रत

सर्वार्थ सिद्धि

20 नवम्बरः 06/43 बजे से 24/36 बजे तक ।
23 नवम्बरः 21/37 बजे से 24-19/37 बजे तक ।
27 नवम्बरः 12/38 बजे से 30/48 बजे तक ।
28 नवम्बरः 10/29 बजे से 30/49 बजे तक ।
02 दिसम्बरः 29/45 बजे से 30/52 बजे तक ।
04 दिसम्बरः 06/52 बजे से 30/52 बजे तक ।
07 दिसम्बरः 06/55 बजे से 30/55 बजे तक ।
11 दिसम्बरः 20/36 बजे से 12-23/36 बजे तक ।
13 दिसम्बरः 06/58 बजे से 26/33 बजे तक ।

शुभ मुहूर्त

दुकान प्रारंभः नवम्बर-20,21,24,28
दिसम्बर-2,4,8,9
मशीनरी प्रारंभ : नवम्बर-21,24,25 दिसम्बर-3
वाहन खरीदनेः नवम्बर-30 दिसम्बर-3,9

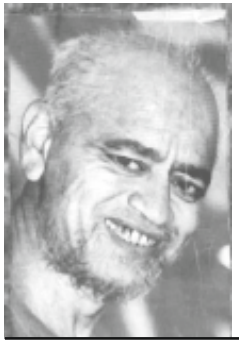

संस्कार सागर

• वर्ष : 25 • अंक : 284 • नवम्बर 2022
• वीर नि.संवत 2547 • विक्रम सं. 2079 • शक सं. 1942

लेख

• आवश्यक कर्म और नियमसार 13
• प्रतियोगिता क्यों 19
• जैन विद्या संस्कृति प्रश्न मंच 20

1000 प्रश्न
अंतिम दिनांक
23 फरवरी 2023

• अंगुलिबेढ़ा के दर्द से पार होने के उपाय 57
• एमबीबीएस की पढ़ाई होगी अब हिंदी माध्यम से 58

बाल कहानी

• असावधानी देती विपत्ति 60

कविता

• इस नेता से प्रभु बचाना 9
• निश्चय व्यवहार 10
• जज्बा 14
• मैं निर्दोषी 56

कहानी

• गौरव गाथा 52

नियमित स्तंभ

पाती पाठकों की : 5 • भक्ति तरंग : 6 • संस्कार प्रवाह : 7 • संयम स्वास्थ्य योग : 8
चलो देखें यात्रा : 11 • आगम दर्शन :12• माथा पच्ची : 15 • पुराण प्रेरणा : 16
• इसे भी जानियेः 17 • कैरियर गाइड : 18 •दिशा बोध : 51
हमारे गौरव : 56 • हास्य तरंग-शरीर विकास के कुछ खेल : 59
• बाल संस्कार डेस्क : 60 • संस्कार गीत व बाल कविता : 61 • समाचार : 62

प्रतियोगिताएं : वर्ग पहेली : **66**

प्रेरणा – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य
एलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज

प्रधान संपादक
ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर–6232967108

प्रबंध संपादक
ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़–94251 41697

कार्यकारी संपादक
ब्र. सुदेश जैन कोठिया इन्दौर–9826548159

सलाहकार संपादक
श्री हुकुमचंद सांवला, इन्दौर–95425053111
पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस–9575634411
डॉ. मुकेश जैन 'विमल', दिल्ली–9818855130

महिला संपादक
डॉ. ज्योति जैन, खतौली–94128 89449
डॉ.ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर–8989845294

अतिथि सम्पादक
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर–97938 21108
अभिनंदन सांधेलीय, पाटन–9425863244
डॉ. पंकज जैन, भोपाल–9584201103
विनीत जैन प्राचार्य, साढूमल–9721419696
अक्षय अलया, ललितपुर – 9453031432

संयोजना
इंजी. अभिषेक जैन 'रिंकू', इन्दौर–9827282170

प्रकाशक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ,इन्दौर (म.प्र.)

✲ आंतरिक सज्जा ✲
आशीष कुशवाह, इन्दौर 9179169060

कृपया, संस्कार सागर मासिक पत्रिका का
बाकी सदस्यता शुल्क
जो पत्रिका के लिफाफे पर चिपकी पते की स्लिप पर छपा है, अविलंब भेजकर सहयोग करें ।

सदस्यता शुल्क

-आजीवन	: 2100/-	(15 वर्ष)
-संरक्षक	: 5001/-	(सदैव)
-परम सम्मानीय	: 11000/-	(सदैव)
-परम संरक्षक	: 15001/-	(सदैव)

अपने शहर के

• स्टेट बैंक ऑफ इंडिया –**संस्कार सागर**
खाता क्र. 63000704338 (IFSC : SBIN0030463)

• भारतीय स्टेट बैंक –**ब्र. जिनेश मलैया**
खाता क्र. 30682289751 (IFSC : SBIN0011763)

•आईसीआईसीआय बैंक
श्री दिगम्बर जैन युवक संघ
खाता क्र. 004105013575 (IFSC : ICIC0000041)

में भी अपने पूर्ण पते सहित राशि जमा कर हमारे कार्यालय को सूचित कर सकतेहैं।

कार्यालय –संस्कार सागर
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर,
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड़, इन्दौर –10
फोन नं. : 0731–2571851, 4003506
मो. : 89895–05108, 6232967108
website :www.sanskarsagar.org
e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

◆ लेखक के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
◆ संस्कार सागर में प्रकाशित रचनाएँ बिना आज्ञा, किसी भी प्रकार से उद्धृत नहीं की जाना चाहिए।
◆ कथा–साहित्य में नाम संस्था काल्पनिक होतेहैं। किसी से समानता मिलना संयोग मात्र है।
◆ पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा।

•श्री दिगम्बर जैन युवक संघ द्वारा श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, ए.बी. रोड़, इन्दौर–10 से प्रकाशित एवं मोदी प्रिंटर्स (76, बी–1, पोलोग्राउंड, इन्दौर) द्वारा मुद्रित।

पाती पाठकों की....

• सम्पादक महोदय, विगत दिनों आई एस अधिकारी की पत्नी ने अपने घर में काम करने वाली आदिवासी महिला के साथ जो दुर्व्यवहार किया वह अमानवीय तो रहा साथ ही झारखण्ड की राजधानी रांची की प्रसिद्ध रहम परम्परा को आंदोलित कर दिया । जब हम उच्चवर्गीय अधिकारीयों से अच्छे व्यवहार की अपेक्षा रखते हों वहीं पर उनकी पत्नी मानवीय अस्मिता पर आक्रमण करे तो ऐसा लगता है जैसे कि रक्षक ही भक्षक बन गया है। अब समय आ गया है कि नौकर या सर्वेन्ट शब्द का प्रयोग करना पूर्ण रूपेण अनुचित घोषित हो। इसके स्थान पर हेल्पर या सहयोगी शब्द का प्रयोग किया जाये तो उचित होगा। जब हम किसी नौकर को डांटते फटकारते हैं तो वे हमें कभी हृदय से हमारी सेवा नहीं कर सकते हैं सहयोगी के साथ रूखा व्यवहार नहीं किया जाना चाहिये अतः हमें अपने रूतबे को छोड़कर नौकर के साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिये यही मानवता है।

गौतम जैन, इंदौर

• सम्पादक महोदय, संस्कार सागर के विगत माह अंक 283 में दयालु बदमाश शीर्षक से कहानी को पढ़ा। कहानी की कथा वस्तु सत्य घटना पर आधारित है। यह बात स्वीकारने के लिये मेरा मन अभी भी तैयार नहीं है। अब यदि मैं इस घटना को सत्य मान भी लूं तो निश्चित तौर पर वह बदमाश धन्यवाद का पात्र होगा किन्तु एक ममता को हृदय में रखने वाली पत्नी इतनी क्रूर कैसे हो सकती है। जो अपने पति की सुपारी देकर मृत्यु तक पहुँचाने के लिये अमादा हो जाए। कहानी सरल सुबोध और ममर्स्पशी है । ऐसी कहानी पढ़कर हमारे मन में क्रूरता को त्यागने का संकल्प स्वभाविक रूप से पनपेगा।

अनीता जैन, इंदौर

• सम्पादक महोदय, टाटा समूह के पूर्व अध्यक्ष साइरस मिस्त्री की सड़क दुर्घटना में मृत्यु हो गई परन्तु सड़क दुर्घटना क्यों हुई यह प्रश्न आज भी जिंदा है। कहा ये जाता है कि अतितीव्र गति से वाहन चलाने के कारण यह घटना हुई उनका वाहन 100 कि.मी प्रति घण्टा की रफ्तार से रहा था। पर क्या हम यह नहीं कह सकते हैं कि देश की जानी मानी हस्तियां भी कभी-कभी यातायात के नियमों को तोड़ देती हैं जिससे दुर्घटना होने को रोका नहीं जा सकता है। परन्तु जिन मानवीय शक्तियों को हम खो देते हैं। वह हमारे राष्ट्र के लिये अपूर्णीय क्षति होती है। यदि यातायात के सामान्य नियमों का पालन किया जाये तो हम अपनी राष्ट्रीय प्रतिभाओं को खोने से बचा सकते हैं। अति विश्वास में वाहन चलाना खतरे से खाली नहीं होता है। इस बात को ध्यान में रखना सभी के लिये अनिवार्य है।

अम्बर जैन, पूना

• सम्पादक महोदय, डॉ. आशा जैन का संस्कार सागर अक्टूबर के अंक में अनिद्रा एक महारोग शीर्षक से लिखा गया लेख एक गंभीर समस्या को रेखांकित कर रहा है। प्रस्तुत लेख के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया गया है कि काम, क्रोध, लोभ, अंहकार, असंतोष जैसे मानसिक, विकार मस्तिष्क को अशांत बनाते हैं। और जब मस्तिष्क अशांत हो जाता है। तब निद्रा का उड़ना स्वभाविक है। फिर नींद की गोलियाँ खाना उल्टी दिशा में चलने के सिवाय कुछ भी नहीं है। आध्यात्मिक शरण लेने से अनिद्रा जैसे महारोगों से छुटकारा मिलने में देर नहीं लगेगी। अतः हमें मानसिक विकारों पर विजय प्राप्त करने के लिये सही दिशा में चिंतन करना होगा। सरल और सुबोध भाषा में लिखा गया लेख मुझे बहुत प्रभावी लगा।

कोशल जैन, सिलवानी

भक्ति तरंग
सुमर सदा मन आतम राम

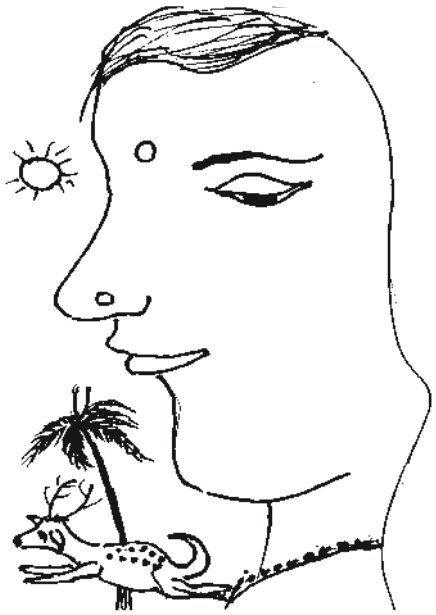

सुमर सदा मन आतमराम,
सुमर सदा मन आतम राम ।। टेक ।।
स्वजन कुटुंबी जन तु पोषै,
तिनको होय सदैव गुलाम ।
सो तो हैं स्वारथ के साथी,
अंतकाल नहीं आवतकाम ।।1।।
जिमि मरीचिका में मृग भटकै ,
परत सो जब ग्रीष्म अति धाम ।
तैसे तु भवमाहीं भटकै,
धरत न इक छिनहू विसराम ।।2।।
करत न ग्लानि अबै भोगन में,
धरत न वीतराग परिनाम ।
फिर किमि नरक माहिं दुख सहसी,
जहाँ सुख लेश न आठों जाम ।।3।।
तातैं आकुलता अब तजिकै,
थिर है बैठो अपने धाम ।
भागचन्द्र वसि ज्ञान नगर में ,
तजि रागादिक ठग सब ग्राम ।।4।।

हे मेरे मन ! तुम सदा अपनी आत्मा का स्मरण करो, अपनी आत्मा का, उसके स्वरूप का चिन्तवन करो।

हे मानव ! तुम अपने कुटुम्बी जनों का पालन-पोषण करते रहते हो, उनकी कामनाओं की तुष्टि के लिये सदैव उसी प्रकार तत्पर रहते हो जैसे कोई दास सेवा के लिये तत्पर रहता है। पर वे सब तो अपनी-अपनी स्वार्थपूर्ति तक ही तुम्हारे साथी हैं, जीवन के अन्त समय /मृत्यु के समय कोई तुम्हारे काम नहीं आता।

ग्रीष्मकाल में जब असहन तपन होती है उस समय प्यासा हरिण जल की तलाश में इधर-उधर भटकता है। सूर्य के प्रखर प्रकाश में बालू के कण चमकते हैं और वे जल का आभास कराने लगते हैं, वहाँ जल की -सी प्रतीति होने लगती है, वे चमकते हुये कण जल-जैसे दिखाई देने लगते हैं उन्हें देखकर प्यासा हरिण उस ओर दौड़ता है, वहाँ पहुँचने पर कहीं पानी दिखाई नहीं पड़ता वह फिर अन्यत्र पानी के भ्रम में दौड़ता है इस प्रकार बार-बार निराशा ही हाथ लगती है अतः वह प्यास और थकान से दम तोड़ देता है। इसी प्रकार तुम भी शांति व सुख के आभास में, भ्रम में भव-भव में भ्रमण करते रहते हो और तुम्हें सुख एक क्षण को भी नहीं मिलता और तुम भटकते रहते हो।

तुम अभी भी भोगों से ग्लानि नहीं करते और कभी भी वीतराग भाव को धारण नहीं करते तो नरक गति ही पाओगे। बताओ, फिर तुम नरक के दुःखों को कैसे सहोगे जहाँ आठों पहर लेशमात्र भी सुख नहीं होता।

इसलिये हे भव्य ! आकुलता को छोड़कर अपने ही घर में अर्थात् आत्मा के स्व-भाव के चिन्तन में स्थिर होकर बैठो। कवि भागचन्द्र कहते हैं राग-द्वेष रूपी ठगों का साथ छोड़कर अपने ज्ञान के लोक में ठहरो-निवास करो।

संस्कार प्रवाह

युगदृष्टा-आचार्य के 50 वर्ष

22 नवम्बर सन् 1972 का दिन युग करवट का दिन कहा जा सकता है। जब परम पूज्य आचार्य श्री ज्ञानसागर महाराज जी ने अपने ही शिष्य को आचार्य पद देकर युग प्रभावक बनने का आशीष दिया था। जीवन के कई दशक वर्षों के बाद आचार्य ज्ञानसागर महाराज की मनोभावना साकार हुई थी। एक स्वप्न दृष्टा ने अपने शिष्य से कितने और कौन-कौन से स्वप्न को साकार करने की उम्मीद रखी थी, उनके सुयोग्य शिष्य ने साहित्यिक सामाजिक, आध्यात्मिक साधना के क्षेत्र में कई कीर्तिमान स्थापित किये। हर गुरु अपने शिष्य को एक या दो स्वप्न को साकार करने की योजना देता है पर यह बात किसी को मालूम नहीं कि गुरु और शिष्य के बीच में क्या गूफ्तगू हुई। कुछ लोग तो कहते हैं कि आचार्य पदारोहण का कार्यक्रम अचानक ही समाज के सामने आया था। सादे समारोह में हुआ यह कार्यक्रम भले ही हुआ हो किन्तु इसका प्रभाव और प्रवाह उस तरह से व्यापक हुआ जैसे कोई नदी अपने उद्गम स्थल से छोटे रूप में निकलती है। आगे जाकर विशाल आकार ग्रहण कर लेती है। ठीक उसी प्रकार परमपूज्य आचार्य विद्यासागर जी महाराज का आचार्य पदारोहण समारोह आज इतने विशाल रूप में प्रस्तुत हो रहा है। जिसका आकलन करना किसी समुद्र की गहराई में रत्न अवलोकन जैसा है।

काव्य के क्षेत्र में आचार्य विद्यासागर जी ने मूकमाटी जैसी उत्कृष्ट रचना लिखकर साहित्य जगत में एक कीर्तिमान स्थापित किया है। तथा नर्मदा के नरम कंकर, डूबोमत लगाओ डुबकी, तोता क्यों रोता एवं चेतना के गहराव जैसे अद्वितीय काव्य सृजन ने सबको आश्चर्यचकित कर दिया है। समयसार, प्रवचनसार, नियमसार, पंचास्तिकाय, अष्टपाहुड, वारसानुप्रेक्षा, समयसार कलश, इष्टोपदेश, समाधिकलश, स्वयंभू स्तोत्र, दस भक्तियाँ, रत्नकरण्डक श्रावकाचार, आप्तमीमांसा, आप्त परीक्षा, गोम्टेश थुदि, योगसार, समणसुत्तं, कल्याणं मंदिर स्तोत्र, एकीभाव स्तोत्र, पात्र केसरी स्तोत्र, आत्मानुशासन, स्वरूप संबोधन, जैसे महान ग्रंथों का पद्यानुवाद करके प्राचीन आचार्य परंपरा के साहित्य को सुग्राह्य और पठनीय बनाया तथा श्रमण शतकम्, निरंजन शतकम्, भावना शतकम्, परिषहजय शतकम्, सुनीति शतकम्, चैतन्य चंद्रोदय शतकम्, धीवरोदय चंपू जैसे संस्कृत ग्रंथों की रचना करके संस्कृत साहित्य को उनका अवदान दिया। आपने कन्नड़ भाषी होने के बावजूद भी हिन्दी में लगभग बारह शतकों की रचना की तथा संस्कृत, अंग्रेजी, बंगला, प्राकृत, मराठी जैसी भाषाओं पर अधिकार प्राप्त किया। आचार्य श्री ने नारी शिक्षा को दृष्टिगत रखते हुये जबलपुर, डोंगरगढ़, रामटेक, इन्दौर और ललितपुर जैसी संस्कार नगरियों में आदर्श विद्यालय के रूप में प्रतिभास्थली आवासीय शिक्षा केन्द्रों की स्थापना को तथा प्रशासकीय क्षेत्र में नया आयाम दिया। चिकित्सा के क्षेत्र में भाग्योदय तीर्थ, पूर्णायु आयुर्वेद चिकित्सालय एवं अनुसंधान केन्द्र सागर व जबलपुर में स्थापित किये। कलापूर्ण पाषाणमयी जिनालय, निर्माण की श्रृंखला में गोपालगंज, सागर, सिलवानी, टड़ा, नेमावर, हबीबगंज, भोपाल, इंदौर, तेंदूखेड़ा, देवरीकलां, रामटेक, विदिशा, इतवारी, नागपुर, नक्षत्र नगर, जबलपुर, डिंढोरी, पटनागंज, रहली, बीनाबारहा, कुंडलपुर, सर्वोदयतीर्थ, अमरकटंक, दयोदयतीर्थ जबलपुर, भाग्योदय तीर्थ सागर, चंद्रगिरि डोंगरगढ़ जैसे अनेक स्थानों पर आज भी जिनालय निर्माण का कार्य प्रगति राह पर अग्रसर है। अंतरिक्ष पार्श्वनाथ शिरपुर में भी तीर्थ, विकास की योजना कार्यान्वित हो चुकी है। हथकरघा योजना ने स्वदेशी स्वावलंबी योजना ने संपूर्ण भारत में नया प्रयोग प्रस्तुत किया है। आचार्य श्री की प्रेरणा से 75000 गौ वंश का विभिन्न गौशाला में पालन पोषण हो रहा है। अर्धशतक वर्षों की साधना में युग प्रवर्तक की गरिमा और प्रतिष्ठा हासिल की है। तीर्थंकर महावीर की आचार्य परंपरा में आचार्य विद्यासागर जी का विशिष्ट स्थान आगामी युग सदैव स्मरण करता रहेगा।

संयम स्वास्थ्य योग

पीलिया

पीलिया- रक्त में लाल कणों की आयु 120 दिन होती है किसी कारण से यदि इनकी आयु कम हो जाए तथा जल्दी ही अधिक मात्रा में नष्ट होने लग जाये तो पीलिया होने लगता है। रक्त में बाइलीर विन नाम का एक पीला पदार्थ होता है। यह बाइलीर विन लाल कणों के नष्ट होने पर निकलता है। इससे शरीर में पीलापन आने लगता है। यकृत के पूरी तरह से कार्य न करने से भी पीलिया होता है। पित्त यकृत में पैदा होता है। यकृत से आंतों तक पित्त पहुँचाने वाली नलियों में पथरी अर्बुद, किसी विषाणु या रासायनिक पदार्थों से यकृत सैल्स में दोष होने से पित्त आंतों में पहुंचकर रक्त में मिलने लगता है। जब रक्त में पित्त आ जाता है। तो त्वचा पीली हो जाती है। त्वचा का पीलापन ही पीलिया कहलाता है।

अधिकतर अभिष्यन्दि पीलिया (Catarrhaol Jaundice) होता है। इसमें कुछ दिनों तक जी मिचलाता है, बड़ी निराशा प्रतीत होती है। आँखे, त्वचा पीली होती है। जीभ पर मैल जमा रहता है तथा 99 से 100 डिग्री तक ज्वर रहता है। यकृत और पित्ताशय का स्थान स्पर्श करने पर कोमल प्रतीत होता है। पेशाब गहरे पीले रंग की टट्टी बदबूदार मात्रा में अधिक और पीली होती है।

लक्षण- पीलिया में नाड़ी की गति कम (लगभग 45 प्रति मिनट) घी तेल, आदि चिकने पदार्थ नहीं पचते, यकृत में कड़ापन और दुखना, शरीर, आँखें, नाखून, मूत्र पीले दिखते हैं। शरीर में खुजली सी चलने लगती है। शरीर में कहीं भी चोट लगने या किसी कारण से रक्त बहने लगे तो रक्त बहुत अधिक मात्रा में बहता है। नेत्रों का सूखना रात्रि को बहुत कम दिखता है। दिखने वाली वस्तुएँ पीली दिखती हैं। वजन कम होना, पतले दस्त लगना, भूख कम लगना, पेट में गैस (वायु) बनना, मुंह का स्वाद कड़वा शरीर में कमजोरी सी रहना, ज्वर भाव इसके प्रमुख लक्षण हैं।

जुलाब- पहले रोगी को जुलाब दें फिर औषधि सेवन करायें। सामान्यतया जुलाब से ही बीमार ठीक हो जाते हैं इसके रोगी को पूर्ण विश्राम देना चाहिये। भोजन में तरल पदार्थ दलिया, खिचड़ी, पुराने चावल का मांड, हरी पत्तियों की सब्जी लोहे की कढ़ाई में गरम किया हुआ दूध, नमक मिलाकर छाछ पीना लाभदायक हैं। माँस, मछली, घी, तेल, तले हुये पदार्थ चिकनाई युक्त कोई भी चीज नहीं खानी चाहिये। आवश्यकता हो तो एनिमा लगाना चाहिये। पीलिया के प्रारंभ में ग्लूकोज गन्ने का रस अधिकाधिक देना चाहिये। निम्न पदार्थों का नियमित सेवन कुछ दिन करने से रोग शीघ्र ठीक हो जाता हैं।

बादाम- आठ बादाम, 5 छोटी इलायची, दो छुआरा रात को मिट्टी के कोरे कुल्हड़ में भिगोयें प्रातः बारीक पीसकर 70 ग्राम मिश्री, 70 ग्राम मक्खन मिलाकर चटायें। चौथे दिन ही पेशाब साफ आयेगा।

आलू बुखारा, तरबूज, टमाटर, खरबूजा, नारंगी खाना पीलिया में लाभदायक हैं।

इमली- इमली को पानी में भिगोकर, मथकर पानी पीना उपयोगी है।

लौकी- लौकी को धीमी आग में दबाकर भुर्ता सा बना लें, फिर इसका रस निचोड़कर तनिक मिश्री मिलाकर पियें। यह पीलिया में लाभकारी है।

करेला- पीलिया में एक करेला पीसकर पानी मिलकर सुबह शाम नित्य पिलायें।

फिटकरी- 200 ग्राम दही में चुटकी भर फिटकरी घोलकर पिलायें। बच्चों के अनुपात में मात्रा में कम लें दिन भर केवल दही ही सेवन करें। पीलिया शीघ्र ठीक होगा। किसी किसी को उल्टी हो जाये तो घबरायें नहीं।

चना- चने की दाल पानी में भिगो दें। फिर दाल निकालकर समान मात्रा में गुड़ मिलाकर तीन दिन तक खायें। प्यास लगने पर दाल का पानी पियें।

सौंठ- 12 ग्राम सौंठ गुड़ के साथ लेने से पीलिया में लाभ होता है।

आंवला- ताजे आँवले का रस साठ ग्राम चासनी 23 ग्राम आधा गिलास पानी में मिलाकर पीने से पीलिया में आराम होता है।

कविता

इस नेता से प्रभु बचाना

मंहगाई की डायन नाचे,
राजनीति के आंगन
रोज प्रदर्शन नेता करते,
गेरवान निज कभी न लखते
जब सत्ता में वे आ जाते
महंगाई को हटा न पाते
वर्षों का यह खेल पुराना
महंगाई पर रोना गाना
रोज प्रदर्शन कोई न दर्शन
अंतर कोई दर्द न परशन
ये तो इनका खेल है
कुर्सी सत्ता मेल है
काम नहीं है कोई दूजा
वोट नजर है इनकी पूजा
इनको सत्ता में फिर आना
जनता को केवल भरमाना
वे सुर बेढव इनका गाना
इन नेता से प्रभु बचाना

कविता

निश्चय-व्यवहार

ब्र. सुदेश जैन

निश्चय नय बोले नहीं, रहे सदा ही मौन।
नय व्यवहार जु चुप रहे, निश्चय जाने कौन ?

गिरें पाप के कीच में, रोके वृष व्यवहार।
पुण्य-जलधि में डूबते, थामे निश्चयाधार।।

उदधि लांघने के लिये, नाव जरूरी होय।
पर नौका छोड़े बिना, लक्ष्य न पावे कोय।

ऐसहि शुभ व्यवहार नय, करे अशुभ से पार।
पर शुभ के छूटे बिना, खुले न मुक्ति द्वार।।

निश्चय अरू व्यवहार नय, जग में दौड़ सहाय।
तत्व असत् हो प्रथम बिन, दूजे तीर्थ बिलाय।

वचन विकल्पाराधना, कहलाती व्यवहार।
बिन विकल्प शुद्धात्म का, ध्यान निश्चयाधार।।

छटवें गुण स्थान तक, व्यवहाराधन होय।
सप्तम से निश्चय चले, अति आवश्यक दोय।।

निश्चय नय के कथन सब, हैं व्यवहाराधीन।
शास्त्र पठन-उपदेश सब, है व्यवहार प्रवीन।।

चलो देखें यात्रा

आंध्रप्रदेश का कमठाण तीर्थ

क्षेत्र का महत्त्व- क्षेत्र पर मन्दिरों की संख्याः 01

क्षेत्र पर पहाड़ - नहीं

ऐतिहासिकता- रट्ट राजवंश के राजाओं द्वारा ध्यानमग्न पदमासन प्रतिमा 4 फीट ऊंची 1100 वर्ष प्राचीन अति सुन्दर एवं मनोहारी हैं। देखने वालों को ऐसा प्रतीत होता है कि साक्षात तीर्थंकर मौन व्रत धारण कर तपस्या में जीवंत बैठे हुये हैं। सन् 1989 में आचार्य श्री श्रुतसागरजी मुनि महाराज जी ने भगवान की प्रतिमा जी को गुफा के ऊपरी भाग में प्रतिष्ठापित करवाया। प्रतिमा की महिमा बहुत है। आज भी अनेक अतिशयकारी घटनायें देखने को मिलती है।

विशेष जानकारी- प्रतिवर्ष माघ शुक्ल 5 से 7 तक रथयात्रा महोत्सव मनाया जाता है।

समीपवर्ती तीर्थक्षेत्र- 1. अतिशय क्षेत्र हुणसी, हडगील, जिला गुलबर्गा- 142 किमी.
2. अतिशय क्षेत्र कुलचारम् (आंध्र प्रदेश)- 92 किमी.

निकटतम प्रमुख नगर- बीदर -9 किमी

प्रबंध व्यवस्था- संस्था- श्री 1008 पार्श्वनाथ भगवान दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र कमठाण ट्रस्ट

अध्यक्ष- श्री जिनेन्द्र एन. टिफ्के (09880395004)

मंत्री- श्री अशोक आर. वनकुदरे (09448123267)

प्रबंधक- श्री पद्मण्णा बेलकोरे (09242845465)

आवागमन के साधन- रेल्वे स्टेशन- बीदर-9 किमी., बीदर जिला केन्द्र स्थान है।

बस स्टैण्ड- कमठाण 1/2 किमी.

पहुँचने का मार्ग- रेल अथवा सड़क मार्ग : मुम्बई- हैदराबाद राष्ट्रीय राजमार्ग क्र. 9

सरलतम मार्ग- 19 किमी. की दूरी पर है।

नोटः बीदर जैन मंदिर में भी ठहरने के लिये कमरों की व्यवस्था है एवं 100 व्यक्तियों के ठहर ने के लिये एक हॉल की व्यवस्था है।

क्षेत्र पर उपलब्ध- आवास कमरे (अटैच बाथरूम)- नहीं है।, कमरे (बिना बाथरूम)- 12
हॉल-2 (यात्री क्षमता 200+300) गेस्ट हाउस-नहीं है।

यात्री ठहराने की कुल क्षमता- 200+300=500

प्रवचनलहॉल- 300 व्यक्तियों के बैठने की क्षमता

भोजनशाला - निःशुल्क अनुरोध पर आधुनिक सुविधा से युक्त

एस.टी.डी/पी.सी.ओ.-है **औषधालय-**है **पुस्तकालय-** है

टेलीफोन- 08482-229524,220295, मो. 09880395004,09845334456

नाम एवं पता- श्री 1008 पार्श्वनाथ भगवान दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र कमठाण तह. एवं जिला बीदर (कर्नाटक) 585226

समीपवर्ती अन्य दर्शनीय- बीदर नगर में जैन मंदिर देखने लायक हैं। एवं ऐतिहासिक स्थल है। 100 किमी. की दूरी पर मान्य-खेट (मलखेट) में भगवान मल्लिनाथ जी का मंदिर है, जो गुलबर्गा जिले में है। पार्श्वनाथ जैन त्रिकूट मंदिर, हरसुर जिला- गुलबर्गा -100 किमी।

आगम दर्शन

पार्श्वनाथ के जीवन चरित्र को प्रतिपादित करता पार्श्व अभ्युदय

यह कालिदास के मेघदूत नामक काव्य की समस्या पूर्ति है। इसमें कही मेघदूत के एक और कहीं दो पादों को लेकर पद्य-रचना की गयी है। इस काव्यग्रंथ में सम्पूर्ण मेघदूत समाविष्ट है। अतः मेघदूत के पाठशोधन के लिये भी इस ग्रंथ का मूल्य कम नहीं है।

दीक्षा धारण कर तीर्थंकर पार्श्वनाथ प्रतिमायोग में विराजमान हैं। पूर्व भव का विरोधी कमठ का जीव शम्बर नामक ज्योतिषी देव अवधिज्ञान से अपने शत्रु का परिज्ञान कर नाना प्रकार के उपसर्ग करता है। इसी कथावस्तु की अभिव्यञ्जना पार्श्वाभ्युदम् में की गयी है। श्रृंगार रस से ओत-प्रोत मेघदूत को शान्तरस में परिवर्तित कर दिया गया है। साहित्यिक दृष्टि से यह काव्य बहुत सुन्दर और काव्यगुणों से मंडित है। इसमें चार सर्ग हैं- प्रथम सर्ग में 118, द्वितीय सर्ग में 118, तृतीय में 57 और चतुर्थ में 71 पद्य हैं। इस काव्य में शम्बर (कमठ) यक्ष के रूप में कल्पित है। कविता अत्यन्त प्रौढ़ एवं चमत्कारपूर्ण है। यहाँ उदाहरणार्थ एक दो पद्य उदघृत किये जाते है।

तन्त्रीभार्द्रा- नयमसलिलैन, सारयित्वा कथंचित्।
स्वाङ्गुल्यग्रैः कुसुमम्र दुभिर्वल्लरीमरप्रशस्ती।
ध्यायं ध्यायं त्वदुपगमन शून्यचिन्तानुकण्ठी।
भूयोभूयः स्वयमपि कृपां मूर्छनां विस्मस्ती।।

आम्रकूट पर्वत के शिखर पर मेघ के पहुँचने पर कवि पर्वत-शोभा का वर्णन करते हुए कहते हैं-

कृष्णाहिः किं बलयिततनुः मध्यमस्याधिशेतेः।
किं वा नीलोत्पलपिराचिंत शेखर भूभृतः स्यात्।।
इत्याशङ्का जनयति पुरा मुग्धावद्याधरीणां।
त्वाय्यारूढे शिखरमचलः स्निग्धवेणीस्वर्णे।।2।।

समस्यापूर्ति में कवि ने सर्वथा नवीन भावयोजना की है। मार्गवर्णन और वसुन्धरा की विरहावस्था का वर्णन मेघदूत के समान ही है। परन्तु इसका संदेश मेघदूत से भिन्न है। शम्बर पार्श्वनाथ के धैर्य, सौजन्य, सहिष्णुता और अपार शक्ति से प्रभावित होकर स्वयं बैरभाव का त्याग कर उनकी शरण में पहुँचता है और पश्चाताप करता हुआ अपने अपराध की क्षमायाचना करता है। कवि ने काव्य के बीच में ''पापा पाये प्रथममुदितं कारणं भविरेव'' जैसी सूक्तियों की भी योजना की है। इस काव्य में कुल 364 मन्द्राकान्ता पद्य है।

आवश्यक कर्म और नियमसार

❊ ब्र. जिनेश मलैया, इंदौर ❊

आवश्यकों का वर्णन समग्र जैन गंथों में मिलता है। श्रमण और श्रावक की साधना में जो स्वतंत्रता पूर्वक बिना किसी पराधीनता के बिना जो साधना की जाती है वे सब आवश्यक कर्म कहलाते हैं। इन आवश्यक कर्म के बिना सोलह कारण भावना अधूरी रहती हैं। सोलह कारण भावना के अंतर्गत आवश्यक परिहारणी को आवश्यक क्रिया के रूप में तत्वार्थ सूत्र ग्रंथ में आचार्य उमास्वामी जी ने प्रतिपादित किया है श्रावक आवश्यकों के अंतर्गत देवपूजा, गुरु उपासना, स्वाध्याय, संयम, तप और दान है। ये छः आवश्यक आचार्य पद्मनंदि जी ने पद्मनंदि पंचविंशतिक ग्रंथ में सर्वप्रथम उल्लेखित किये हैं। तथा श्रमणों मुनियों के आवश्यक समता, वंदना, स्तवन, प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान और कायोत्सर्ग ये छः आवश्कयक मूलाचार में विवेचित है। छहढालाकार पंडित दौलतराम जी ने प्रत्याख्यान आवश्यक के स्थान पर स्वाध्याय आवश्यक को उल्लेखित किया है जबकि सभी श्रमणाचार ग्रंथों में कहीं भी स्वाध्याय आवश्यक को नहीं उल्लेखित किया गया है। इससे स्पष्ट होता है आचार्यों की परम्परा में श्रमणों का आवश्यक स्वाध्याय नहीं है।

आवश्यक शब्द की व्युतपत्ति- जो अन्य के वश अर्थात् पराधीन होकर जो कार्य नहीं किया जाता है उसे आवश्यक कर्म कहते हैं न+वश= अवश कर्म इति आवश्यक। कर्म के नष्ट करने वाला मार्ग निर्वाण मार्ग कहलाता है और यह आवश्यक भी होता है। सिद्धत्व अशरीरी बनने का उपाय आवश्यक ही है अवश रूप से करने योग्य कार्य को अवश्य कहते हैं जहाँ पर अवयव का अभाव है उसे आवश्यक कहते हैं। अशुभ कार्य पर के वशीभूत होकर किया जाता है अतः अशुभ कार्य कभी आवश्यक नहीं हो सकता है किन्तु जो संयमित होकर शुभ भाव में परिणमन करता है उसे भी आवश्यक कर्म की प्राप्ति नहीं होती है।

अन्यवश का स्वरूप- जो द्रव्य गुण और पर्यायों में चित्त लगता है वह भी अन्य वश होता है। इस प्रकार मोह अंधकार नष्ट करने वाले श्रमणों ने उपदेश दिया है अन्यवश वही होता है जो शुभ और अशुभ परणतियों में उलझा रहता हैं विकल्प भावों को समाप्त करके आत्म परिणति में लीन होने वाला परवश नहीं होता है। अर्थ पर्याय और व्यंजन पर्याय में बुद्धि केन्द्रित करता है वह भी शुद्ध आत्मा के ध्यान से च्युत हो जाता है लेकिन जो परभावों का त्याग करके निर्मल आत्मा के स्वभाव का ध्यान करता है वह आत्मवश होता है उसे ही आवश्यक कर्म की प्राप्ति होती है सामायिक की पूर्णता उस जीव को प्राप्ति होती है जो आवश्यक को चाहते हुये आत्म स्वभाव में स्थिर होता है वही सामायिक गुण की प्राप्ति करता है।

आवश्यक शून्य श्रमण श्रावक की स्थिति- आवश्यक से शून्य या रहित श्रावक अथवा श्रमण चारित्र से भ्रष्ट अवश्य होता है जो श्रमण और श्रावक आवश्यकों से युक्त होता है वह अंतर आत्मा होता है तथा जो श्रमण अथवा श्रावक आवश्यकों से हीन होता है वह बहिरात्मा होता है। निश्चय और व्यवहार दोनों नय से प्रणीत आवश्यक क्रिया से हीन साधक बहिरात्मा घोषित किया गया है। जो बाह्य और अंतर जल्पों से उलझ रहता है वह बहिरात्मा होता है और जो बाह्य

और अंतरंग जल्पों में (वचना में) नहीं उलझता है वह अंतरआत्मा होता है। धर्म और शुक्ल ध्यान में लीन होने वाला ही अंतर आत्मा होता है और धर्म ध्यान व शुक्ल ध्यान से विहीन बहिरात्मा होता है।

प्रतिक्रमण आदि क्रिया को जो भी करता है वह निश्चय चारित्र को धारण करता है वह श्रमण वीतराग चारित्र में आरूढ़ हो जाता है। और वह श्रमण जब वचनमय प्रतिक्रमण प्रत्याख्यान और आलोचना क्रिया संपन्न करता है तो वह पौद्गलिक शब्दमय प्रशस्त स्वाध्याय को प्राप्त हो जाता है।

आचार्य कुन्दकुन्द देव ने एक प्रेरणा दी है कि ध्यानमय प्रतिक्रमण प्रत्यख्यान आदि की क्रिया करना श्रेष्ठ क्रिया है किन्तु यदि शक्ति की हीनता के कारण यदि ध्यानमय प्रतिक्रमण न कर सकें तो श्रद्धान अवश्य करना चाहिये कि श्रेष्ठ प्रतिक्रमण तो ध्यानमय ही है जिनेन्द्र देव के द्वारा कथित परमसूत्र में प्रतिक्रमण आदि की परीक्षा करके मौन व्रत सहित योगी की निज आत्मा की साधना सदैव करना चाहिये विवाद को विराम देना ही मौन है अन्तर से किसी से विवाद करने की इच्छा नहीं होना ही सच्चा मौन है क्योंकि नाना प्रकार के जीव हैं अनेक प्रकार के कर्म हैं अनेक प्रकार की उपलब्धियाँ और सिद्धियाँ है अतः स्वधर्मी (साधर्मी) और विधर्मी (परधर्मीयों) से विवाद सदैव टालने योग्य होता है। जैसे कोई गरीब व्यक्ति किसी बड़ी निधि को पाकर उसका गुप्त रूप से अपने घर में देश में उपभोग करता है उसी प्रकार ज्ञानीजन परजनों का समूह छोड़कर आत्मा से ही ज्ञाननिधि का आनंद लेता है।

इस प्रकरण के अन्त में आचार्य कुन्द कुन्द देव ने बड़े दावे के साथ कहा है कि जितने भी पुराण पुरुष हुये हैं उन सभी ने आवश्यकों का पालन किया है और अप्रमत्त आदि स्थिति में ठहर करके केवलज्ञान को प्राप्त किया है अतः कोई भी व्यक्ति बिना आवश्यक (समता, वंदना, स्तवन, प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान और कायोत्सर्ग) को जीवन में अपनाये बिना केवलज्ञान को प्राप्त नहीं कर सकता है क्योंकि आवश्यक कर्म मात्र पुण्य आस्रव बन्ध के कारण भी हैं और इन आवश्यकों के माध्यम से जीव (आत्मा) संवर निर्जरा को प्राप्त होता है इसीलिये श्रमण और श्रावक को पुण्य बन्ध के डर से आवश्यकों में शिथिलता नहीं लाना चाहिये।

कविता

जज्बा

प्रेषकः अपूर्वा अमित जैन, झाँसी

आज जो गिरा है तू, कल संभल जायेगा।
हौसला न डिगा तो, इतिहास बदल जायेगा॥
इतिहास बदल जायेगा, एकलव्य ने गुरु की-मूरत से
तीर चलाना सीख लिया, और न जाने ऐसे।
कितने महारथी हुये हैं, जिन्होंने बिना सारथी के॥
रथ को ही मोड लिया, परिस्थितियाँ कैसी भी हों।
जज्बा देखा जाता है, मेहनत तो सभी करते हैं॥
बस जीतने की अंदाज, देखा जाता है।

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता
अक्टूबर 2022
चाँद नजारा

प्रथम-

चाँदनी विखर चुकी थी धरती के आंगन में
तारे गण सब मंद पड़े थे
उजले उस विशाल अंबर में
शीत लहर का कहर बढ़ा था,
लुड़क चुका था पारा
कड़क ठंड में नजर टिकी है, देखे चाँद नजारा

श्रीमती रजनी जैन, राहतगढ़

द्वितीय-

गुरुवाणी का अमृत पी हम
सुख पाते निज सारा
शरद पूर्णिमा विद्यागुरु की
भूलो चांद नजारा

वैशाली जैन, इंदौर

तृतीय-

अघ तम नाशक ज्ञान विकास
विद्यासागर वाणी
तम मद नाशक आत्म प्रकाशक
जन जन की नित कल्याणी
ज्ञान गगन में सदा प्रकाशित
छूटी तुमसे जग की कारा
अध्यात्मिक शशि गुरू अनुठे
जग देखे चांद नजारा

अनीता जैन, अहमदाबाद

वर्ग पहेली क्र. 275
सितम्बर 2022 के विजेता

प्रथम : श्रीमती इन्द्रा जैन, कोलकाता
द्वितीय : श्रीमती आशा जैन, ग्वालियर
तृतीय : श्रीमती रजनी जैन, दिल्ली

माथा पच्ची

निम्न अक्रमबद्ध वर्णों कोक्रमबद्ध बनाकर रिक्त स्थान में एक सार्थक शब्द बनाइए।

1. आ द् अ ह् अ ढ् ण् आ अ ल् अ र् ष् ह
2. ई ओ अ स् आ क् अ र् अ प् र् व् न् त् त् र् सं
3. क् इ ओ त् इ आ य् ग् त् इ आ इ न् द् ए द् श प्र
4. स् अ र् अ आ आ ट् आ स् अ व् इ र् अ उ र् प् अ व् द् य् ग वि
5. अ स् क् आ र् अ आ स् ग् अ र् सं

परिणाम :
अगस्त 2022: (1) संस्कार सागर (2) जैन संदेश
(3) कुन्दकुन्द वाणी (4) अर्हत वचन (5) शोधादर्श

पुराण प्रेरणा

बोधि दुर्लभ अनुप्रेक्षा

भव्यत्वं च मनुष्यत्वं सुभूजन्मकुलस्थितिः ।
क्रमात्ते दुर्लभं चात्मन् समवायस्तु दुर्लभः ।।
समवायोऽपि ते व्यर्थो न चेधर्मे भतिः परा ।
किं केदाराद्यि गुण्येन कणिशोदममता न चेत ।।
पुनस्तु दुलर्भो धर्मः श्राद्धाना योगिनां पुनः ।
लब्धे योगीन्द्रधमेऽपि दुलर्भं स्वांत्मबोधनम् ।।
स्वात्मबोधिः कदाचिच्चेल्लब्धा योगीन्द्रगोचरा ।
चिन्तनीया भृशं नष्टा वितमर्षणवत्सदा ।।
नात्मलाभात्परं ज्ञानं नात्मलाभातपरं सुखम् ।
नात्मलाभात्परं ध्यानं नात्मलाभात्परं पदम् ।।
लब्ध्वात्मबोधनं धीमान्मति नान्यत्र संभजेत ।
प्राप्य चिंतामणिं काचे को रतिं कुरुते पुमान ।।

हे आत्मन् पहले तो भव्यपना ही दुर्लभ है और भव्य होकर भी मनुष्य जन्म, उत्तमक्षेत्र और उत्तमकुल पाना उत्तरोत्तर दुर्लभ है। कदाचित् उत्तमकुल भी मिल गया तो सत्संगति का पाना बहुत दुर्लभ बात है। मान लीजिए कभी सत्संग भी मिल गयी और धर्मबुद्धि न हुई तो उसका पाना भी व्यर्थ हो गया। जैसे कि धान्य अधिकता से उगा और उसमें यदि बाल न निकली तो वह उसका अधिकता से उगना कौन काम आया एवं कभी धर्म भी हाथ आ गया तो फिर मुनिधर्म पाना दुर्लभ ही है और उसके मिल जाने पर भी आत्मबोध होना कोई हंसी-खेल नहीं किन्तु अत्यंत दुर्लभ है यदि सौभाग्य से कदाचित् स्वाध्मबोध हो जो कि योगीन्दों को ही होता है तो उसका फिर सदा ही चिंतन रहता है वह फिर नहीं छूटता। जैसे कि किसी का धनचोरी चला जाता है या और किसी तरह खो जाता है तो उसके प्राप्त करने की ही चिंता रहती है। गरज यह कि योगीन्द्रों को होने वाला स्वात्म बोध हुआ कि वह फिर आत्मा से जुदा नहीं होता इसलिये कहा जाता है कि आत्मलाभ के सिवा न कोई ज्ञान है, न सुख है, न ध्यान है, और न कोई परम ही है जो कुछ भी हैं । वह एक आत्मबोध ही है अतः बुद्धिमानों को चाहिये की आत्मबोध पाकर फिर बुद्धि कौन डुलावें क्योंकि जिसके हाथ चिन्तामणी रत्न आ गया वह कांच के लिये बुद्धि करें यह ठीक नहीं।

इसे भी जानिये

राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन अवधि में बनी महत्वपूर्ण संस्थाएँ

संस्थाएँ	स्थापना वर्ष	प्रमुख सूत्रधार
एशियाटिक सोसाइटी	1784	विलियम जोन्स
युवा बंगाल	-	हेनरी लुई विवियन डिरोजियो
ब्रह्म समाज	20 अगस्त 1828 कलकत्ता	राजाराम मोहनराय
ब्रिटिश सार्वजनिक सभा	1843	दादा भाई नौरोजी
रहनुमाई भानदयासन समाज	1851	दादा भाई नौरोजी आदि
साइन्टिफिक सोसाइटी	1862	सर सैयद अहमद खाँ
मोहम्मडन एंग्लो लिटरेटरी सोसाइटी	1863	अब्दुल लतीफ
वेद समाज	1871 (मद्रास)	श्री धरालु नायडू
प्रार्थना समाज	1867	केशवचन्द्र सेन, महादेव रानाडे देवेन्द्रनाथ टैगोर आदि
पूना सार्वजनिक सभा	1870	रानाडे/चिपुलणकर और जोशी
इण्डियन सोसाइटी	1872	आनंदमोहन बोस
आर्य समाज	1875	स्वामी दयानन्द सरस्वती
थियोसोफिकल सोसाइटी	1875	मैडम वल्टावास्सी और कर्नल अल्काट
मोहम्मडन एंग्लो ओरिएण्टल कॉलेज	1875	सर सैयद अहमद खाँ
इण्डियन एसोसिएशन	1876	सुरेन्द्रनाथ बनर्जी
इण्डियन नेशनल सोसाइटी	1883	सिरीशचन्द्र बोस
भारतीय राष्ट्रीय कान्फ्रेंस	1883	एस.एन.बनर्जी
मद्रास महाजन सभा	1884	वीर राघवाचारी व एस अय्यर
भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस	1885	ए.ओ. ह्यूम
बॉम्बे प्रेसीडेन्सी ऐसासिएशन	1885	फीरोजशाह मेहता तैलंग तथा तय्यव
बेरंगोर मठ	1887	स्वामी विवेकानन्द
इण्डियन सोशल कान्फ्रेन्स	1887	महादेव गोविन्द रानाडे

केरियर

विज्ञापन के क्षेत्र में अवसर

वर्तमान समय में सभी लोगों तक अपने प्रोडक्ट की जानकारी पहुँचाना ही विज्ञापन कहलाता है, साधारण रूप से कंपनी या संस्था द्वारा किसी उत्पाद, सेवा अथवा सामाजिक मुद्दे, राष्ट्रीय हित में योजनाओं की जानकारी को लोगों तक विज्ञापन के माध्यम से पहुंचाया जाता है, आपका सन्देश कितना प्रभावी है, यह आपकी कला पर निर्भर करता है, भारतीय विज्ञापन व्यवसाय आज के समय में भारतीय युवाओं के पास एक करियर विकल्प के रूप में उभर कर आ रहा है। विज्ञापन कंपनियाँ उत्पादों का प्रचार-प्रसार करती हैं, इसके लिये टीवी, समाचार पत्रों एसएमएस, ईमेल, सोशल मीडिया का प्रयोग करती रहती हैं, कंपनियाँ उनके अंदर भाषा पर मजबूत पकड़ और उच्च कोटि की संवाद क्षमता का आकंलन करती हैं।

शैक्षणिक योग्यता: 12वीं परीक्षा उत्तीर्ण होना अनिवार्य है इसके बाद स्नातक कोर्स में प्रवेश ले सकते हैं।

आवश्यक योग्यता: विज्ञापन के क्षेत्र में आने के लिये आपके अंदर सबसे पहला गुण आपका रचनात्मक होना है, रचनात्मकता आपके अंदर किसी भी रूप में व्यक्त हो सकती है, यह आपके अंदर भाषा के रूप में हो या संवाद क्षमता के रूप में , कला के रूप में या नवीन विचारों के रूप में भी हो सकती है, यदि आप कार्य में स्वयं उत्साही, रचनात्मक, आशावादी तथा कई कार्यों को एक साथ करने की क्षमता रखते हैं, तो यह क्षेत्र आपके लिये बेहतर विकल्प साबित हो सकता है, आपके अंदर जनसंवाद एवं लोगों के विचारों को समझने और उनकी आवश्यकताओं को समझनें आदि गुणों का विकास किया जाता है।

कोर्स:
ग्राहक सेवा- मार्केटिंग में पीजी डिप्लोमा /MBA
कमर्शियल फाइन आर्ट में BBA/MFA
पत्रकारिता, जनसंवार अथवा MBA
CA, ICWA/MBA (वित्त)
ऑडियो-विजुअल में विशेषता

रोजगार के अवसर: इस क्षेत्र में रोजगार, प्राइवेट और सरकारी कंपनियों में विज्ञापन विभाग के अंतर्गत प्राप्त किया जा सकता है, इसके अतिरिक्त आप अखबारों , पत्रिकाओं, रेडियो और टीवी के व्यापारिक विभाग में, मार्केट, रिसर्च कंपनी इत्यादि में रोजगार प्राप्त कर सकते हैं, इसमें फ्रीलांसिंग भी एक विकल्प के रूप में हो सकता है।

पद: विज्ञापन प्रबंधक, PR डाइरेक्टर, क्रिएटिव डाइरेक्टर, कॉपी राईटिंग आदि।

फीस: मुद्रा इंस्टीट्यूट ऑफ कम्युनिकेशन में इस कोर्स की फीस लगभग एक लाख रूपये है, यह फीस अन्य संस्थानों में कम या अधिक हो जाती है।

वेतन: शुरुआत में 8-15 हजार रूपये मासिक वेतन प्राप्त कर सकते हैं, अनुभव के साथ बढ़ता है।

प्रतियोगिता क्यों

जैन आचार्यों ने अपने उद्देश्य का माध्यम शंका समाधान बनाया है। जिस माध्यम से जन साधारण को तत्त्वबोध देने में सफल रहें वर्तमान युग प्रयोगवादी है मनोरंजन के साथ तत्त्वज्ञान की गूढ़ बाते भी व्यक्ति के दिल और दिमाग में भी उतारी जा सकती है प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता भी वहीं एक माध्यम है। लक्ष्य यह है कि वर्तमान में स्वाध्याय की प्रवृत्ति कम होती जा रही है। इस समस्या के समाधान के लिये प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता संस्कार सागर का अभिनव प्रयोग है। यह मासिक पत्रिका 25 वर्ष से 284 अंकों में अखिल भारतीय संस्कार सागर परीक्षा संचालित कर रही है। जिसका प्रतिफल बहुत अच्छा मिला।

इस बार अखिल भारतीय स्तर पर जैन विद्या संस्कृति प्रश्न मंत्र आयोजित करने का प्रयास किया है इस प्रयास में आजादी के 75वें अमृत महोत्सव के अवसर पर जैन गौरव, स्वतंत्रता संग्राम में जैन पुस्तक से तथा आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के स्वर्णिम (50वें) आचार्य पदारोहण वर्ष के उपलक्ष्य में आपके ज्ञान वर्धन के लिये सहकारी बनेगें। एवं आपको सम्मान प्राप्त होगा। एक पंथ दो काज प्रतिस्पर्धा में भाग लें और ज्ञानवर्धन करें।

ब्र. जिनेश मलैया
प्रधान सम्पादक संस्कार सागर इन्दौर

प्रथम पुरुस्कार	द्वितीय पुरुस्कार	तृतीय पुरुस्कार	सान्त्वना पुरुस्कार
1 लाख रूपये	51 हजार रूपये	31 हजार रूपये	सभी प्रतिभागियों को

प्राप्ति स्थल : संस्कार सागर श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर
विद्यासागर नगर आगरा बॉम्बे रोड़ इन्दौर– 10
फोन : 0731-4003506, 2571851 मो. 8989505108, 6232967108

जैन विद्या संस्कृति प्रश्न मंच

आप ऐसे सम्मिलित हो सकते हैं इस ज्ञानयज्ञ में।

1. प्रश्न आचार्य श्री विद्यासागर पाठ्य क्रम प्रणमाञ्जंलि, अनिर्वचनीय व्यक्तित्व, श्रमण परंपरा संप्रवाहक, आर्यिका पूर्णमति माताजी रचित ज्ञानधारा, बाबू कामता प्रसाद रचित दिगम्बरत्व और दिगम्बर मुनि, श्री हुकुमचंद जी सांवला रचित जैन गौरव, डॉ. कपूरचंद डॉ. ज्योति जैन खतौली रचित स्वतंत्रता संग्राम में जैन तथा संस्कार सागर चातुर्मास विशेषांक 2022 से पूछे गये है।

2. प्रश्न पत्र भरने वालो को संस्कार सागर का सदस्य होना अनिवार्य हैं। एक सदस्यता पर एक ही परिवार के कई प्रश्न पत्र भर सकते हैं। लेकिन एक नाम का एक ही स्वीकृत होगा।

प्रत्येक प्रश्न पत्र के साथ 100 रूपये जमा करना होगा। तथा प्रश्न पत्र भरने वाले सदस्यों की संस्कार सागर की बकाया राशि नहीं होना चाहिये तथा पत्रिका बन्द हो गई है तो पुनः चालू कराना होगी।

3. प्रथम, द्वितीय, तृतीय पुरस्कार अधिकतम सही उत्तर वालों को 100 प्रश्नों की परीक्षा देना होगी जिसमें किताब आदि उपयोग नहीं कर सकेगें 100 प्रश्न इन्हीं 1000 प्रश्नों में से ही पूछें जायेंगे उन्हीं में से ड्रा के माध्यम से गुरुवर आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के प्रिय शिष्य एलक सिद्धांतसागर जी महाराज जहाँ विराजमान होगे वहाँ पर दिया जायेगा।

4. उत्तर ऑनलाईन- व्हाट्सअप (8989505108)
ई-मेल (sanskarsagarprashna@gmail.com) आदि के माध्यम से भी दिये जा सकते है, देने के बाद सूचित करें।

5. प्रश्न www.sanskarsagar.org से भी डाउनलोड किये जा सकते है।

6. प्रश्न पत्र भरकर देने की अन्तिम तिथि 23 फरवरी 2023 तक संस्कार सागर कार्यालय में पहुँच जाना चाहिये। आप अपने प्रश्न पत्र नगर में प्रतिनिधि के पास भी जमा कर सकते है।

7. 100 प्रश्नों की परीक्षा कहाँ पर होगी यह सूचना आपको 15 दिन पूर्व दे दी जावेंगी।

8. उत्तर पुस्तिका संलग्न हैं। प्रश्न क्रमांक के साथ उत्तर हिन्दी भाषा में स्पष्ट शब्दों में लिखे।

9. उत्तर शीट की फोटो कॉपी कराकर भेजी जा सकती है। उत्तर शीट में किसी भी प्रकार की काटा पीटी नहीं होना चाहिये।

10. सर्वाधिक सही उत्तर वालों प्रतिभागी के नाम संस्कार सागर में प्रकाशित किये जावेंगे तथा प्रथम, द्वितीय, तृतीय आने वाले प्रतिभागी के नाम फोटो सहित प्रकाशित किये जावेंगे।

11. सभी उत्तरों में बहुमान पूर्वक श्री एवं जी लगाना आवश्यक हैं।

***निर्णायकों का निर्णय सर्वमान्य एवं अन्तिम होगा।**

आचार्य श्री विद्यासागर पत्राचार पाठ्यक्रम पुस्तक 1 प्रणमाञ्जंलि से

01. आचार्य श्री विद्यासागर जी के साहित्य से किस साहित्य की संवर्द्धना हुयी है ?
02. आचार्य श्री जी द्वारा कितनी भाषाओं में कवितायें लिखी गयी ?
03. वह कौन थे, जो परीक्षा पास करने को ज्ञान की सच्ची कसोटी नहीं मानते थे ?
04 श्री भूरामल जी ने शास्त्र की परीक्षा कहाँ से उत्तीर्ण की।
05. जयोदय महाकाव्य किसकी शिक्षा देता है।
06. जयोदय महाकाव्य में कितने श्लोक तथा कितने पद्य है ?
07. सेठ सुदर्शन के जीवन चरित्र पर आधारित महाकाव्य कौन सा है ?
08. पं. भूरामल शास्त्री ने किस महाकाव्य में सहिष्णुता की शिक्षा दी है ?
09. भद्रोदय काव्य का दूसरा नाम क्या है ?
10. चोरी एवं असत्यभाषण से बचने का संदेश किस महाकाव्य में है ?
11. क्षुल्लक ज्ञान भूषण जी की अवस्था में आचार्य ज्ञानसागर द्वारा किस कृति का लेखन किया गया ?
12. सम्यक्तसारशतकम् किन आचार्य को समर्पित करके लिखा गया है ?
13. जैन आगमानुकूल सम्यग्दर्शन की महिमा ब्रह्मचारी भूरामल जी की किस कृति में वर्णित है ?
14. कौन से काव्य में अहिंसा, ब्रह्मचर्य एवं जैन दर्शन के महत्व को दर्शाया है ?
15. सुदर्शनोकाव्य कब लिखा गया था ?
16. ब्रह्मचारी भूरामल द्वारा श्रमणों एवं आर्यिकाओं की पवित्र चर्या पर लिखा काव्य कौन सा है ?
17. प्रवचन सार में कितनी गाथायें और अधिकार है ?
18. प्रवचनसार आचार्य कुंदकुंद स्वामी ने किस भाषा में लिखा है ?
19. ग्रंथराज समयसार एवं नियमसार जी का पं. भूरामल शास्त्री द्वारा कौन सा अनुवाद किया गया ?
20. पं. भूरामल जी ने रत्नकरण्डक श्रावकाचार की हिंदी टीका का नाम क्या है ?
21. क्षुल्लक श्री ज्ञानभूषण जी द्वारा धन्यकुमार चारित्र के आधार पर सृजित काव्य कौन सा है।
22. ऋषभावतार (ऋषभ चरित्र) काव्य का सृजन किसने किया है ?
23. पं. भूरामल जी ने गुणसुंदर मुनि के नाम पर की गयी काव्य रचना किस नाम से की है ?
24. श्री भूरामल जी ने किस कृति को ब्रह्मचारी अवस्था से शुरु कर क्षुल्लक अवस्था तक पूर्ण किया था?
25. पं. भूरामल जी ने ब्रह्मचारी व्रत किस उम्र में लिया था ?
26. कुरीतियों का निराकरण और सम्यक रीति रिवाजों की स्थापना करने वाला काव्य कौन सा काव्य है ?
27. आचार्य ज्ञानसागर ने प्रवचनसार का अनुवाद किस भाषा में किया है ?
28. यह मेरी भावना है सब इसका स्वाध्याय करे ऐसी भावना आचार्य विद्यासागर जी ने किस ग्रंथ के अनुवाद के प्रारंभ में की है ?
29. गुण सुंदर मुनि का नाम उल्लेख किस ग्रंथ में है ?
30. गृहस्थ की सुव्यवस्थित आजीविका के लिये क्षुल्लक ज्ञानभूषण जी ने कौन सा काव्य लिखा ?
31. कलह से दूर रहने की शिक्षा आचार्य ज्ञानसागर जी ने किस पुस्तक में दी ?
32. सचित्त विचार पुस्तक के लेखक कौन है ?
33. सचित्त विवचेन पुस्तक में किसका वर्णन है ?
34. सरल जैन विवाह विधि पुस्तक के लेखक कौन है ?
35. आचार्य ज्ञानसागर जी ने साहित्य साधना कितने वर्षों तक की ?

36 पंडित भूरामल जी ने सातवी प्रतिमा के व्रत किससे लिये ?
37. पंडित भूरामल जी ने गृह त्याग कब किया था ?
38. पं. भूरामल जी का क्षुल्लक अवस्था का नाम क्या था ?
39. क्षुल्लक ज्ञानभूषण जी ने मुनि दीक्षा कब कहा और किससे ली ?
40. ब्र. भूरामल जी ने क्षुल्लक दीक्षा किससे और कहा ली ?
41. क्षुल्लक ज्ञानभूषण जी ने एलक दीक्षा किससे और कब ली ?
42. मुनि श्री ज्ञानसागर जी को उपाध्याय पद कब और किसके द्वारा दिया गया ?
43. श्री भागचंद जी सोनी ने मुनि श्री ज्ञानसागर महाराज को किस उपाधि से अलंकृत किया ?
44. एलक ज्ञानभूषण जी को मुनि दीक्षा कितने वर्ष की उम्र में दी ?
45. पंडित भूरामल जी की माता का नाम क्या था ?
46. आचार्य श्री ज्ञानसागर जी ने 60 वर्ष की उम्र में दीक्षा क्यों ली ?
47. आचार्य श्री ज्ञानसागरजी ने गृहस्थ अवस्था में मां के मांगने पर क्या वचन दे दिया था ?
48. आप वृद्ध है पर सर्व रूप से सुंदर आपकी छवि है आप ज्ञान प्रकाश के प्रदीप है ऐसा किससे किसके लिये कहा ?
49. आचार्य ज्ञानसागर जी का प्रमुख वाक्य था ?
50. यथाजात मुद्रा के लिये आचार्य ज्ञानसागर क्या आवश्यक मानते थे ?
51. सामुदिकशास्त्र केअनुसार उनकेहोठों पर मांजिनवाणी का वास था यह किस बात से पता चलता था ?
52. आचार्य श्री ज्ञानसागर महाराज अपनी उम्र में क्या शामिल नहीं करते थे ?
53. आचार्य ज्ञानसागर जी ने आचार्य विद्यासागर जी की कौन सी गुथ्थी सुलझायी।
54. आचार्य ज्ञानसागर जी को न्याय तीर्थ पदवी का धारक किसने कहां था ?
55. आचार्य ज्ञानसागर जी को आचार्य पद कब और कहां दिया था ?
56. आचार्य ज्ञानसागर जी को चारित्र चक्रवर्ती का उपाधि कहां पर और कब दी थी ?
57. आचार्य ज्ञानसागर जी श्रवणों की उम्र कितनी मानते थे ?
58. आचार्य श्री ज्ञानसागर जी किसकी और नहीं किसकी ओर हमेशा देखते थे ?
59. किसके साथ ज्ञान की साधना करने वालों का ज्ञान संस्कार के रूप में परभव में जाता है ?
60. वाचन करना सरल है लेकिन पाचन हमेशा किसके माध्यम से होता है ?
61. किस ग्रंथ में आचार्य ज्ञानसागर महाराज जी को न्याय तीर्थ पदवी का धारक कहां है ?
62. आचार्य ज्ञानसागर महाराज जी ने आचार्य पद का त्याग कब और कहां किया ?
63. आचार्य ज्ञानसागर महाराज की समाधि कब और कहां हुई ?
64. आचार्य ज्ञानसागर महाराज जी का संल्लेखना काल कितना रहा ?
65. मुनि ज्ञानसागर महाराज जी ने आहार एवं जल का पूर्ण त्याग कब किया था ?
66. आचार्य ज्ञानसागर पर डाक टिकिट कब निकला था ?
67. आचार्य ज्ञानसागर जी पर कितने रूपये का डाक टिकिट निकला था ?
68. आचार्य विद्यासागर महाराज जी को बांस से बांसुरी किससे बनाया ?
69. कर्त्तव्य में कभी क्या नहीं होना चाहिए ?
70. कर्त्तव्य प्रवृत्ति होते हुये भी किसका द्योतक है ?
71. आचार्य विद्यासागर जी ने किसको अपनी आठ मातायें बताया ?
72. नीचे की गहराई ऊपर की ऊंचाई किसको देखना है ?
73. आर्ष मार्ग में दोष लगाना क्या है ?

74. मुनि मार्ग किसके समान है ?
75. यह शरीर किसकी सम्पदा है ?
76. जैसे शरीर को प्रतिदिन भोजन आवश्यक वैसे ही भेदविज्ञानी साधक को किसका चिंतन आवश्यक है ?
77. नौ तपा से मत डरो क्योंकि कितने तप आपके सामने है ?
78. प्रतिक्रमण और केशलोंच दोनों कैसे होने चाहिए ?
79. ब्रह्मचारी विद्याधर जब आचार्य ज्ञानसागर महाराज जी के पास पहुंचे तब उनकी उम्र कितनी थी ?
80. ब्रह्मचारी विद्याधर जब आचार्य ज्ञानसागर जी के पास पहुंचे तब आचार्य ज्ञानसागर जी उम्र कितनी थी ?
81. गुरु से हमें कितनी भाषायें रत्नत्रय रूप में मिली वे कौन सी हैं ?
82. ब्रह्मचारी विद्याधर को कौन सा ग्रंथ पढ़कर हिंदी का विशिष्ट ज्ञान हुआ ?
83. मुनि विद्यासागर जी ने अंग्रेजी भाषा किस अवस्था में सीखी ?
84. जिस अष्टसहस्री को लोग कष्ट सहस्री कहते थे उसे आचार्य ज्ञानसागर जी क्या कहते थे ?
85. अनेकांत का हृदय विश्व के सामने रखने के लिये क्या आवश्यक है ?
86. कौन सा दर्शन बकालत नहीं करता सही सही निर्णय देता है ?
87. आचार्य ज्ञानसागर जी किस विद्या को ही प्रकाश्य मानते थे ?
88. जीवन का सच्चा स्वाध्याय किसकी और दृष्टि में है ?
89. आचार्य वीरसागर महाराज ने ब्र. भूरामल को अपना कौन सा गुरु माना था ?
90. पृथ्वी के सारे मल को धो देता वह भूरामल है ऐसा कौन से आचार्य ने कहा था ?
91. आचार्य धर्मसागरजी एवं आचार्य ज्ञानसागर जी के मिलन होने पर आचार्य धर्मसागर जी ने आचार्य ज्ञानसागर जी को क्या कहा था ?
92. आचार्य धर्मसागरजी एवं आचार्य ज्ञानसागर जी के मिलन होने पर आचार्य ज्ञानसागर जी ने आचार्य धर्मसागर जी को क्या कहा था ?
93. आचार्य शिवसागर जी के प्रथम दीक्षित मुनि नाम क्या था ?
94. आचार्य ज्ञानसागर महाराज ने आचार्य धर्मसागर महाराज को ब्रह्मचारी अवस्था में किस ग्रंथ का अध्ययन कराया था
95. आचार्य पद लेने का निर्णय करने में मुनि श्री विद्यासागर महाराज जी को कितने दिन लगे थे ?
96. मुनि ज्ञानसागर जी ने अपना आचार्य पद देने के बाद आचार्य विद्यासागर जी की कितनी प्रदक्षिणा लगायी थी ?
97. आचार्य बनने के पश्चात् आचार्य विद्यासागर महाराज जी के पहले प्रवचन का विषय क्या था ?
98. आचार्य ज्ञानसागर महाराज जी ने जब अपना आचार्य पद आचार्य विद्यासागर जी को दिया था तब उनकी उम्र कितनी थी ?
99. आचार्य ज्ञानसागर महाराज जी ने जब अपना आचार्य पद आचार्य विद्यासागर जी को दिया था तब आचार्य विद्यासागर महाराज जी की उम्र कितनी थी ?
100. आचार्य ज्ञानसागर महाराज के मानमर्दन प्रसंग पर किसने कहां ऐसा रिकॉर्ड हजारों वर्षों में नहीं मिलता कि गुरु अपने शिष्य को नमस्कार करें।
101. मुनि ज्ञानसागर महाराज जी एवं आचार्य विद्यासागर महाराज जी की आपस में बातचीत कौन सी भाषा में होती थी ?
102. आचार्य ज्ञानगसागर जी ने समाधिस्थ होने के कितने दिन पहले अन्न का त्याग कर दिया था ?
103. आचार्य ज्ञानसागर जी ने अंतिम केशलोंच कब किया थे ?
104. मुनि ज्ञानसागर जी ने समाधि के कितने दिन पूर्व खाद्य पदार्थों का त्याग कर दिया था ?

105. मुनि ज्ञानसागर जी ने समाधि पर कितने निर्जल उपवास हो गये थे ?
106. जो संल्लेखना पूर्वक मरण करता है उसे कम से कम कितने भव और अधिक से अधिक कितने भव में मुक्ति भव में मुक्ति प्राप्त हो जाती है ?
107. मुनि ज्ञानसागर जी की समाधि के समय निर्यापकाचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज किस ग्रंथ का अध्ययन करते थे ?
108. शरीर और वचन भले ही लुप्त हो जाये पर कौन सा रहस्य कभी लुप्त नहीं होता ?
109. आत्मानुभूति किससे कहने की वस्तु नहीं है वह तो मात्र संवेदनीय है ?
110. गुरु ने ऐसा करंट दिया कि अनादि काल से अपशेट माईंड सेट हो गया यह वाक्य किसने कहा था ?
111. आचार्य विद्यासागर महाराज जी ने पाक्षिक प्रतिक्रमण के प्रायश्चित के रूप में कितनी मालायें जपने को कहा ?

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये

112. ..... भले विश्राम की बात करे पर ..... कहती है सामायिक की जाये ?
113. हम उपसंहार पर आये उसमें भी उन्होंने ..... दे दिया, जो जीवन में किसी को नहीं मिला ?
114. आचार्य पदारोहण दिवस पर आचार्य विद्यासागर ने कहा मेरा..... तो मेरे गुरु का अनुकरण करना है, ये तो सब व्यवहार की बात है ?
115. ..... गुरु महाराज है हम..... मोक्षमार्ग की रसोई बनाकर उन्होंने दी है ?
116. गुरु की गरिमा देखो कि ..... दे दी, बदले में किसी चीज की आशा नहीं की।
117. हे भगवन आपसे अब ..... नहीं द्वीप चाहिए।
118. आत्मानुभूति शब्दो में कहने की वस्तु नही है वह तो मात्र ..... है ?
119. आचार्य ज्ञानसागर की दृष्टि में ..... महत्वपूर्ण नहीं ..... महत्वपूर्ण ?
120. .....का मूल्य तब है जब .....का आभास है ?
121 श्रीमंति अष्टगे की कुल कितनी संतान थी ?
122 श्रीमंति अष्टगे की कुल कितने पुत्र थे ?
123 श्रीमंति अष्टगे की कुल कितनी पुत्रिया थी ?
124 बालक विद्याधर के वर्तमान में कितने भाई है ?
125 बालक विद्याधर के वर्तमान में कितनी बहने है ?
126 बालक विद्याधर की मां का नाम क्या था ?
127 बालक विद्याधर की पिता का नाम क्या था ?
128 बालक विद्याधर कौन से नम्बर की संतान थी ?
129 शांता बहन कौन से नम्बर की संतान थी ?
130 स्वर्णा बहन कौन से नम्बर की संतान थी ?
131 अनंतनाथ कौन से नम्बर की संतान थी ?
132. शांतिनाथ कौन से नम्बर की संतान थी ?
133 महावीर कौन से नम्बर की संतान थी ?
134 बालक विद्याधर की मातृभाषा क्या थी ?
135 बालक विद्याधर ने 14 वर्ष की उम्र में लग्न (विवाह) तक का ब्र. व्रत किससे लिया था ?
136. बालक विद्याधर ने 14 वर्ष की उम्र में लग्न (विवाह) ब्र. व्रत कहां पर लिया था ?
137 बालक विद्याधर ने 14 वर्ष की उम्र में लग्न (विवाह) ब्र. व्रत कब लिया था ?
138 भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण के दिन बालक विद्याधर ने कौन सा व्रत लिया था ?
139 बालक विद्याधर ने आजीवन ब्र. व्रत किससे लिया था ?

140 बालक विद्याधर ने आजीवन ब्र. व्रत कहां लिया था ?
141 बालक विद्याधर ने आजीवन ब्र. व्रत कब लिया था ?
142 बालक विद्याधर ने सप्तम प्रतिमा के व्रत किससे लिये थे ?
143 बालक विद्याधर ने सप्तम प्रतिमा के व्रत कहां लिये थे ?
144 बालक विद्याधर ने सप्तम प्रतिमा के व्रत कब लिये थे ?
145 आचार्य विद्यासागर जी महाराज अभी तक कुल कितनी मुनि दीक्षा दे चुके है ?
146 आचार्य विद्यासागर जी महाराज अभी तक कुल कितनी आर्यिका दीक्षा दे चुके है ?
147 आचार्य विद्यासागर जी महाराज अभी तक कुल कितनी एलक दीक्षा दे चुके है ?
148 आचार्य विद्यासागर जी महाराज अभी तक कुल कितनी क्षुल्लक दीक्षा दे चुके है ?
149 आचार्य विद्यासागर जी महाराज अभी तक कुल कितनी क्षुल्लिका दीक्षा दे चुके है ?
150 आचार्य विद्यासागर जी महाराज अभी तक कितने निर्यापक श्रमण बना चुके है ?
151 आचार्य विद्यासागर जी महाराज से दीक्षित वर्तमान में कितने मुनिराज है ?
152 आचार्य विद्यासागर जी महाराज से दीक्षित वर्तमान में कितनी आर्यिका माताजी है ?
153 आचार्य विद्यासागर जी महाराज से दीक्षित वर्तमान में कितने एलक जी है ?
154 आचार्य विद्यासागर जी महाराज से दीक्षित वर्तमान में कितने क्षुल्लक जी है ?
155 आचार्य विद्यासागर जी महाराज से दीक्षित वर्तमान में कुल कितने शिष्य है ?
156 आचार्य विद्यासागर जी महाराज के साथ 2022 में उनके कितने शिष्य चातुर्मास कर रहे है ?
157 आचार्य विद्यासागर जी महाराज के साथ 2022 में उनके शिष्यों का चातुर्मास कितने प्रांत में हुआ ?
158 आचार्य विद्यासागर जी महाराज के करकमलों से 18 सितम्बर 1975 से 21 जुलाई 2015 तक कितनी दीक्षायें दी गई ?
159 आचार्य विद्यासागर जी महाराज के करकमलों से 18 सितम्बर 1975 से 21 जुलाई 2015 तक दीक्षायें देने पर कौन सा प्रमाण पत्र मिला ?
160. आचार्य विद्यासागर जी महाराज के ससंघ सान्निध्य में 1980 सागर वाचना में कितने विद्वान उपस्थित थे ?
161. आचार्य विद्यासागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में 1980 की वाचना कब से कब हुई थी ?
162. आचार्य विद्यासागर महाराज जी ने 36 घंटे तक कायोत्सर्ग मुद्रा में ध्यान कहां पर किया था ?
163. आचार्य विद्यासागर महाराज जी ने 80 घंटे तक पद्मासन मुद्रा में ध्यानस्थ कहां रहे थे ?
164. आचार्य विद्यासागर महाराज जी 80 घंटे तक पद्मासन मुद्रा में ध्यानस्थ कब रहे ?
165. स्वाध्याय करने के लिये कितने हाथ तक क्षेत्र शुद्धि होना चाहिए ?
166. आचार्य विद्यासागर जी की पुरानी पिच्छी पंडित जगमोहनलाल शास्त्री कटनी को कब और कहां प्राप्त हुई थी ?
167. आचार्य विद्यासागर जी की पुरानी पिच्छी पंडित डॉक्टर बाबूलाल जैन अनुज बंडा को कब और कहां प्राप्त हुई थी ?
168. आचार्य विद्यासागर जी की पुरानी पिच्छी ब्र. सुमन दीदी पटेरा को कब और कहां प्राप्त हुई थी ?
169. आचार्य विद्यासागर जी की पुरानी पिच्छी ब्र. रत्तीबाई जी को कब और कहां प्राप्त हुई थी ?
170. आचार्य विद्यासागर जी की पुरानी पिच्छी ब्र. राजेश टड़ा वर्तमान (एलक सम्पूर्णसागर) कब और कहां प्राप्त हुई थी ?
171. आचार्य विद्यासागर जी की पुरानी पिच्छी ब्र. डॉ. सत्येन्द्र जैन दमोह को कब और कहां प्राप्त हुई थी ?
172. आचार्य विद्यासागर जी की पुरानी पिच्छी बाल ब्र. राकेश जैन सिद्धायतन सागर को कब और

कहां प्राप्त हुई थी ?

173. आचार्य विद्यासागर जी की पुरानी पिच्छी प्राकृत चिकित्सा केन्द्र भाग्योदय तीर्थ सागर म.प्र. में पूर्व डी.एस.पी. ब्र. रेखा दीदी आदि 12 बहनों को कब और कहां प्राप्त हुई थी ?
174. आचार्य विद्यासागर जी की पुरानी पिच्छी प्रतिभामंडल में अध्ययनरत प्रथम समूह की ब्र. सुषमा दीदी सागर आदि 40 बहनों को कब और कहां प्राप्त हुई थी ?
175. आचार्य विद्यासागर जी की पुरानी पिच्छी बाल ब्र. बहिन नीरज जी काला को कब और कहां प्राप्त हुई थी ?
176. आचार्य विद्यासागर जी की पुरानी पिच्छी चन्द्रगिरि डोंगरगढ़ छत्तीसगढ़ के अध्यक्ष श्री किशोर जी जैन को कब और कहां प्राप्त हुई थी ?
177. आचार्य विद्यासागर जी की पुरानी पिच्छी अतिशय क्षेत्र बीनाबारह के उपाध्यक्ष श्री महेन्द्र जी सोधिया को कब और कहां प्राप्त हुई थी ?
178. आचार्य विद्यासागर महाराज जी की भोपाल चातुर्मास 2016 की पुरानी पिच्छी किसे प्राप्त हुई थी ?
179. आचार्य विद्यासागर महाराज जी की शीतलधाम विदिशा चातुर्मास 2014 की पुरानी पिच्छी किसे प्राप्त हुई थी ?
180. आचार्य विद्यासागर महाराज जी की बीनाबारहा चातुर्मास 2005 की पुरानी पिच्छी किसे प्राप्त हुई थी ?
181. आचार्य विद्यासागर जी की पुरानी पिच्छी ब्र. राजकुमार जी जैन अशोकनगर को कब और कहां प्राप्त हुई थी ?
182. आचार्य विद्यासागर जी की पुरानी पिच्छी वीरेश सेठ दमोह को कब और कहां प्राप्त हुई थी ?
183. आचार्य विद्यासागर महाराज जी की अमरकटंक चातुर्मास 2003 की पुरानी पिच्छी किसे प्राप्त हुई थी ?
184. आचार्य विद्यासागर महाराज जी की दयोदय तीर्थ तिलवारा घाट जबलपुर चातुर्मास 2004 की पुरानी पिच्छी किसे प्राप्त हुई थी ?
185. आचार्य विद्यासागर जी की पुरानी पिच्छी सुश्री डॉ. देविका जैन जबलपुर को (आर्यिका गंतव्यमति) कब और कहां प्राप्त हुई थी ?
186. आचार्य विद्यासागर महाराज जी की रामटेक चातुर्मास 2017 की पुरानी पिच्छी किसे प्राप्त हुई थी ?
187. आचार्य विद्यासागर महाराज जी की खजुराहो चातुर्मास 2018 की पुरानी पिच्छी किसे प्राप्त हुई थी ?
188. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने सन् 2022 तक कितने बार मुनि दीक्षायें दी ?
189. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने सन् 2022 तक कितने बार आर्यिका दीक्षायें दी ?
190. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने सर्वप्रथम मुनि दीक्षा किस क्षेत्र पर दी थी ?
191. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने से दीक्षित मध्यप्रदेश के सर्वाधिक शिष्य जिस जिले के है उस जिले में कितनी मुनि दीक्षायें दी नाम भी बताईये ?
192. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने 29 अक्टूबर 1981 मंगलवार को सिद्धक्षेत्र नैनागिर जी में कितनी मुनि दीक्षायें दी ?
193. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने 20 अगस्त 1982 शुक्रवार को सिद्धक्षेत्र नैनागिर जी में कितनी मुनि दीक्षायें दी ?
194. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने 25 सितम्बर 1983 रविवार को ईसरी विहार में कितनी मुनि दीक्षायें दी ?
195. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने 1 जुलाई 1985 मंगलवार को सिद्धक्षेत्र अहार जी

में कितनी मुनि दीक्षायें दी ?

196. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने 16 अक्टूबर 1997 गुरुवार को सिद्धोदय तीर्थ नेमावर में कितनी मुनि दीक्षायें दी ?
197. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने 11 फरवरी 1998 बुधवार को सिद्धक्षेत्र मुक्तागिरि जी में कितनी मुनि दीक्षायें दी ?
198. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने 22 अप्रैल 1999 गुरुवार को सिद्धोदय तीर्थ नेमावर जी में कितनी मुनि दीक्षायें दी ?
199. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने 21 अगस्त 2004 शनिवार को दयोदय तीर्थ तिलवारा घाट जबलपुर में कितनी मुनि दीक्षायें दी ?
200. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने 10 अगस्त 2013 शनिवार को अतिशय क्षेत्र रामटेक महाराष्ट्र में कितनी मुनि दीक्षायें दी ?
201. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने 16 अक्टूबर 2014 गुरुवार को शीतलधाम विदिशा में कितनी मुनि दीक्षायें दी ?
202. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने 21 जुलाई 2015 शुक्रवार को अतिशय क्षेत्र बीनाबारहा सागर म.प्र. में कितनी मुनि दीक्षायें दी ?
203. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने 28 नवम्बर 2018 बुधवार को गौशाला ललितपुर में कितनी मुनि दीक्षायें दी ?
204. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने 10 फरवरी 1987 मंगलवार को सिद्धक्षेत्र नैनागिर जी में कितनी आर्यिका दीक्षायें दी ?
205. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने 7 अगस्त 1989 सोमवार को सिद्धक्षेत्र कुण्डलपुर दमोह म.प्र. में कितनी आर्यिका दीक्षायें दी ?
206. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने 9 अगस्त 1989 मंगलवार को सिद्धक्षेत्र कुण्डलपुर दमोह म.प्र. जी में कितनी आर्यिका दीक्षायें दी ?
207. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने 20 फरवरी 1990 मंगलवार को नरसिंहपुर म.प्र. में कितनी आर्यिका दीक्षायें दी ?
208. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने 23 फरवरी 1990 शुक्रवार को नरसिंहपुर म.प्र. में कितनी आर्यिका दीक्षायें दी ?
209. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने 4 जुलाई 1992 शनिवार को दमोह म.प्र. में कितनी आर्यिका दीक्षायें दी ?
210. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने 7 जुलाई 1992 मंगलवार को सिद्धक्षेत्र कुण्डलपुर दमोह म.प्र. में कितनी आर्यिका दीक्षायें दी ?
211. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने 25 जुलाई 1993 सोमवार को पिसनहारी मढ़िया जबलपुर में कितनी आर्यिका दीक्षायें दी ?
212. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने 19 अगस्त 1993 गुरुवार को अतिशय क्षेत्र रामटेक महाराष्ट्र में कितनी आर्यिका दीक्षायें दी ?
213. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने 22 अगस्त 1993 रविवार को अतिशय क्षेत्र रामटेक महाराष्ट्र में कितनी आर्यिका दीक्षायें दी ?
214. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने 6 जून 1997 शुक्रवार को सिद्धोदय तीर्थ नेमावर देवास म.प्र. में कितनी आर्यिका दीक्षायें दी ?

215. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने 18 अगस्त 1997 सोमवार को सिद्धोदय तीर्थ नेमावर देवास म.प्र. में कितनी आर्यिका दीक्षायें दी ?
216. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने 13 फरवरी 2006 सोमवार को सिद्धक्षेत्र कुण्डलपुर दमोह म.प्र. में कितनी आर्यिका दीक्षायें दी ?
217. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने एक साथ सर्वाधिक आर्यिका दीक्षायें कौन से क्षेत्र पर कितनी दी ?
218. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने एक साथ सर्वाधिक मुनि दीक्षायें कहां पर कितनी दी ?
219. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने सर्वाधिक दीक्षायें किस क्षेत्र पर दी ?
220. मुनिश्री अभयसागर जी की मुनि दीक्षा कहां पर कब हुई थी ?

आचार्य श्री विद्यासागर पत्राचार पाठ्यक्रम पुस्तक 2 अनिर्वचनीय व्यक्तित्व तथा पुस्तक 3 श्रमण परंपरा संप्रवाहक

221. बालक विद्याधर के पिता श्री मल्लप्पा जी की जन्म की खुशी में काशी बाई जी ने गरीबों को क्या बटवांया था ?
222. बालक विद्याधर के ताउ जी का क्या नाम था ?
223. बालक विद्याधर के चाचा जी का क्या नाम था ?
224. बालक विद्याधर की बड़ी बुआ का क्या नाम था ?
225. बालक विद्याधर की छोटी बुआ का क्या नाम था ?
226. बालक विद्याधर के नाना का क्या नाम था ?
227. बालक विद्याधर की नानी का क्या नाम था ?
228. बालक विद्याधर के दादा का क्या नाम था ?
229. बालक विद्याधर की दादी का क्या नाम था ?
230. श्री मल्लप्पा जी के घर के चैत्यालय में मूलनायक भगवान कौन से थे ?
231. श्री मल्लप्पा जी प्रत्येक अष्टमी चतुर्दशी को क्या करते थे ?
232. श्री मल्लप्पा जी की प्रथम संतान का नाम क्या था और वह किस सन् में जन्म हुआ था ?
233. श्री मल्लप्पा जी की द्वितीय संतान का नाम क्या था और वह किस सन् में जन्म हुआ था ?
234. श्री मल्लप्पा जी की सातवीं संतान का नाम क्या था ?
235. श्री मल्लप्पा जी की मुनि दीक्षा कब-कहां और किससे ली थी ?
236. श्री मल्लप्पा जी की मुनि दीक्षा के बाद क्या नाम रखा गया था ?
237. मुनि श्री मल्लिसागर जी ने दीक्षा के बाद कितने दिन का नमक का त्याग किया था उसके बाद जीवनभर कभी नहीं खाया ?
238. मुनिश्री मल्लिसागर जी 70 वर्ष की उम्र में भी एक दिन में कितने किलोमीटर चल लेते थे ?
239. मुनि श्री मल्लिसागर जी ने चारित्र शुद्धि व्रत के कितने उपवास किये ?
240. मुनिश्री मल्लिसागर जी के चारित्र शुद्धि व्रत के पूर्ण होने के उपलक्ष्य में घी के कितने दीपक जलाये ?
241. मुनिश्री मल्लिसागर जी के कर्मदहन के कितने उपवास किये ?
242. मुनिश्री मल्लिसागर जी ने सम्मेद शिखर की यात्रा कितने बार की ?
243. श्री मल्लप्पा जी ने सम्मेद शिखर की यात्रा कुल कितने बार की ?
244. श्री मल्लप्पा जी ने माता पिता के साथ सम्मेद शिखर जी की कौन सी यात्रा की थी ?
245. मुनिश्री मल्लिसागर जी ने सम्मेदशिखर जी की यात्रा किसके साथ की थी ?
246. मुनिश्री मल्लिसागर जी के समाधि कहां हुई थी ?
247. मुनिश्री मल्लिसागर जी के समाधि कब हुई थी ?

248. बालक विद्याधर की मां को सती श्रीमंति कौन कहां करते थे ?
249. श्रीमति श्रीमंति जी अष्टो कितने माह की थी तब माता पिता का देहवसान हो गया था ?
250. श्रीमति श्रीमंति जी अष्टगे का माता पिता देहवसान किस कारण से हुआ था ?
251. एक माँ सौ किससे श्रेष्ठ होती है ?
252. श्रीमंति जी ने आर्यिका दीक्षा किससे ली थी ?
253. श्रीमंति जी ने आर्यिका दीक्षा कहां हुई थी ?
254. श्रीमंति जी ने आर्यिका दीक्षा कब हुई थी ?
255. श्रीमंति जी ने आर्यिका दीक्षा के बाद क्या नाम रखा गया था ?
256. आर्यिका श्री समयमति जी ने दीक्षा दूसरे दिन से ही आजीवन किसका त्याग किया था ?
257. आर्यिका श्री समयमति जी का समाधिमरण कहां पर हुआ था ?
258. आर्यिका श्री समयमति जी का समाधिमरण कब हुआ था ?
259. आर्यिका श्री समयमति जी ने समाधिमरण के कितने दिन पहले से स्वेच्छा से अन्न का त्याग कर दिया था ?
260. आर्यिका श्री समयमति जी की समाधि किसके सान्निध्य में हुई ?
261. मुनिश्री विजयसागर महाराज जी के गुरु का नाम क्या था ?
262. आचार्यश्री कल्पविवेक सागर जी के गुरु कौन थे ?
263. क्षुल्लक श्री विनयसागर जी ने क्षुल्लक दीक्षा किससे ली थी ?
264. अष्टगे परिवार के कुल आठ सदस्यों में से किसने सद्गृहस्थ होने की भूमिका निभाई ?
265. श्री महावीर जी अष्टगे का जन्म कब हुआ था ?
266. श्री महावीर जी अष्टगे की कुल कितनी संताने है तथा उनका नाम क्या है ?
267. मुजफ्फरनगर में आचार्य धर्मसागर जी ने 8 अप्रैल 1975 को 10 दीक्षायें दी जिसमें कितने सदस्य अष्टगे परिवार के थे ?
268. श्री महावीर जी अष्टगे के श्रीमति का नाम क्या है ?
269. बालक विद्याधर का जहां जन्म हुआ था वहां पर मंदिर बनवाने का सौभाग्य किसे प्राप्त हुआ ?
270. श्री महावीर प्रसाद जी दिल्ली वालों को मंदिर जाने की प्रेरणा किसने दी ?
271. मुनिश्री मल्लिसागर महाराज का 1984 का चातुर्मास कहां पर हुआ था ?
272. श्री महावीर प्रसाद जी ने मुनि श्री मल्लिसागर जी के पास जाकर कब और कहां मंदिर बनाने का संकल्प लिया था ?
273. श्री महावीर प्रसाद जी माचिस वाले दिल्ली ने आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के पास जाकर मंदिर बनाने का आशीर्वाद कब और कहां लिया ?
274. सदलगा में मंदिर का शिलान्यास कब हुआ था ?
275. सदलगा में जो महावीर प्रसाद जी माचिस वालो ने मंदिर बनवाया उसमें मूलनायक भगवान कौन से हैं तथा कौन से धातु के है ?
276. श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर सदलगा का पंचकल्याणक कब हुआ ?
277. श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर सदलगा का पंचकल्याणक कितनी पिच्छीधारियों के सान्निय में हुआ ?
278. बालक विद्याधर की बहन शांता जी का जन्म किस सन् में हुआ ?
279. बालक विद्याधर की बहन शांता जी ने सातवी प्रतिमा के व्रत कहां किससे लिये ?
280. बालक विद्याधर की बहन शांता जी की मातृभाषा कौन सी है ?

281. बालक विद्याधर की बहन स्वर्णा जी ने कहां तक शिक्षा किस माध्यम से की ?
282. बालक विद्याधर की बहन स्वर्णा जी का जन्म कब हुआ ?
283. बालक विद्याधर के भाई अनंतनाथ जी जन्म कब हुआ ?
284. बालक विद्याधर के भाई अनंतनाथ, शांतिनाथ ने ब्रह्मचारी व्रत कब लिया ?
285. बालक विद्याधर के भाई अनंतनाथ, शांतिनाथ ने ब्रह्मचारी व्रत कहां लिया ?
286. बालक विद्याधर के भाई अनंतनाथ, शांतिनाथ ने ब्रह्मचारी व्रत किससे लिया ?
287. बालक विद्याधर के बचपन के अनन्य मित्र कौन था ?
288. बालक विद्याधर के साथ किसने 14 वर्ष की उम्र में लग्न (शादी) तक के लिये ब्रह्मचारी व्रत लिया था ?
289. आचार्यश्री विद्यासागर जी ने मारूति को कब और कहां घर पर की समाधि करने की प्रेरणा दी ?
290. बालक विद्याधर का जन्म कहां हुआ था ?
291. जब बालक विद्याधर का जन्म हुआ था तब उनका वजन कितना था जिससे नर्स (परिचायिका) नवजात शिशु को निरोग घोषित किया था ?
292 भट्टारक मुनिश्री विद्यासागर जी समाधिस्थल कहां पर है ?
293 अक्कीवाट और सदलगा की दूरी कितने किलोमीटर है ?
294. किसने अमावस्या की रात को पूनम करके बतलाया था ?
295. बालक विद्याधर के कितने नाम थे नाम भी बताईये ?
296. मल्लप्पा जी 5 वर्ष तक प्रत्येक अमावस्या को किस क्षेत्र के दर्शन करने जाते थे ?
297. यह किसने कहा था कि विद्याधर अब तुम सच मुच में भगवान जैसे दिखने लगे हो ?
298. मल्लप्पा जी को विद्याधर के सभी भाई बहन क्या बोलते थे ?
299. बालक विद्याधर ने किस उम्र में यह कहां था कि मैं बड़ा हूँ मुझे भी नेहरू कहो ?
300. बालक विद्याधर को कितने वर्ष की उम्र में आचार्य श्री शांतिसागर के दर्शन एवं प्रवचनों का सौभाग्य प्राप्त हुआ था ?
301. बालक विद्याधर ने भक्तामर स्तोत्र कब कंठस्थ कर लिया था ?
302. बालक विद्याधर चित्र (पेन्टिंग) बनाना कितनी वर्ष की उम्र में सीख लिया था ?
303. बालक विद्याधर गुडसवारी करना कितनी वर्ष की उम्र सीख लिया था ?
304. बालक विद्याधर ने शतरंज के खिलाड़ी लोकप्पा जी को किसमें हराया था ?
305. आचार्य श्री देशभूषण जी का सदलगा में चातुर्मास हुआ था तब बालक विद्याधर की उम्र क्या थी ?
306. बालक विद्याधर का मूँजी बँधन संस्कार किसने किया और कौन से जनेऊ से किया था ?
307. बालक विद्याधर कितने वर्ष की उम्र से ध्यान लगाने लेगा थे ?
308. बालक विद्याधर डंठलों का बंडल बांधकर कितनी वर्ष की उम्र में लाना प्राप्त कर दिया था ?
309. बालक विद्याधर ने तैराकी कितने वर्ष की उम्र सीखी थी ?
310. बालक विद्याधर बावड़ी में कितने घंटे त क ध्यानमग्न रहने लगे थे ?
311. बालक विद्याधर ने 12 वर्ष की उम्र में अष्टमी चतुर्दशी का व्रत करना शुरु किया था तब किसका चातुर्मास चल रहा था ?
312. बालक विद्याधर के छोटे भाई को अनंतनाथ को तीन वर्ष की उम्र में कौन सा रोग हो गया था ?
313. बालक विद्याधर को चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज के प्रवचन सुनकर वैराग्य का जो बीज उत्पन्न हुआ था उसका अंकुरण कितने वर्ष की उम्र हो जाता है ?
314. बालक विद्याधर ने सर्वप्रथम ब्रह्मचारी व्रत (शादी) लग्न तक क्षुल्लक श्री सूर्यसेन जी महाराज से व्रत लिया था उस दिन क्या था तथा तारीख एवं दिन तथा नक्षत्र भी लिखे ?

315. बालक विद्याधर ने पट्ट महादेवी शातंला उपन्यास कितनी वर्ष की उम्र पढ़ा था ?
316. बालक विद्याधर ने प्रधानमंत्री पं. श्री जवाहरलाल नेहरू को कहां पर सुना था ?
317. बालक विद्याधर ने आचार्य विनोवा भावो के भाषण कहां पर सुने थे ?
318. बालक विद्याधर ने कौन सी टॉकीज में प्रथम फिल्म कौन सी देखी थी ?
319. बालक विद्याधर ने दूसरी फिल्म कौन सी देखी थी ?
320. बालक विद्याधर शर्कस में साइकिल चलाते हुये देखकर वैसी साइकिल चलाना सीखते समय कहां पर चोट आई थी ?
321. बालक विद्याधर को क्या खाना पसंद था ?
322. बालक विद्याधर की नवमी की शिक्षा कौन से विद्यालय में हुई ?
323. बालक विद्याधर ने कौन से महाराज को सात-आठ दिन में तत्त्वार्थ सूत्र कंठस्थ करके सुना दिया था ?
324. बालक विद्याधर को यह वाक्य किसने कहा था कि तू अच्छा विद्वान बनेगा ?
325. बालक विद्याधर ने मूलाचार का स्वाध्याय कितने वर्ष की उम्र किया ?
326. बालक विद्याधर कौन सा शतक बड़े ही मधुर सुरीली आवाज में गाते थे ?
327. आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज के आहार के बाद कौन से नगर में बालक विद्याधर रोज एक नया भजन गाते थे ?
328. बालक विद्याधर ने कितने वर्ष की उम्र में किसका प्रथम केशलोंच करने का सौभाग्य प्राप्त किया था ?
329. बालक विद्याधर को सन् 1963 सदलगा ग्राम में किसका केशलोंच करने का अवसर प्राप्त हुआ था ?
330. किसकी प्रेरणा से बालक विद्याधर ने बचपन में तत्वार्थ सूत्र कंठस्थ किया था ?
331. मुनिश्री आदिसागर जी की समाधि देखने का सौभाग्य बालक विद्याधर को कहां पर हुआ था ?
332. बेड़की हॉल में बालक विद्याधर जी को किसकी समाधि देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था ?
333. बोरगांव में बालक विद्याधर को किसकी समाधि देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था ?
334. सदलगा की गुफा में कौन से महाराज संल्लेखना देखने का अवसर प्राप्त हुआ था ?
335. बालक विद्याधर ने कितनी वर्ष की उम्र में दशलक्षण पर्व के एकाशन करना शुरु कर दिये थे ?
336. बालक विद्याधर से शतरंज की खेल में बार-बार उनका कौन सा मित्र हार जा रहा था ?
337. बालक विद्याधर कितने वर्ष की उम्र से वह अपने कार्य स्वयं करने लगे थे ? 8 वर्ष
338. सदलगा में कौन सी नदी बहती है ?
339. सदलगा से आचार्य श्री शांतिसागर की जन्मस्थली भोजग्राम कित्ते किलोमीटर की दूरी पर स्थित है ?
340. सदलगा से आचार्य श्री देशभूषण की जन्मस्थली कोथली ग्राम कितने किलोमीटर की दूरी
341. सदलगा से अतिशय क्षेत्र कुंभोज बाहुबलि कितने किलोमीटर की दूरी पर स्थित है ?
342. सदलगा से मुनि श्री कुलभूषण देशभूषण महाराज की निर्वाण स्थली कुंथुगिरि कितने किलोमीटर की दूरी पर स्थित है ?
343. बोरगांव में मुनि श्री नेमिसागर जी समाधि के बाद कितने मित्रो ने आपस में वैराग्य पथ पर चलेगे ऐसा निर्णय कर लिया था उनके नाम भी बताईये ?
344. बालक विद्याधर से आत्मकल्याण हेतु ज्ञान और चारित्र के संगम आचार्य श्री देशभूषण की शरण स्वीकार करो ऐसा कौन से महाराज जी ने कहा था ?
345. बालक विद्याधर कितने वर्ष की उम्र में गृह त्याग करने की योजना बनाना शुरु कर देते है ?
346. बालक विद्याधर ने घर से जाने का मुहूर्त निकलवाया उसकी तिथी, वार, नक्षत्र एवं सन् क्या था ?
347. घर पर ज्ञात न हो जाये इस कारण बालक विद्याधर को उनके कौन से मित्र ने 112 रूपये दिये थे ?
348. बालक विद्याधर के साथ वैराग्य पथ की इस यात्रा के प्रारंभिक चरण में विद्याधर के साथ

उनका दूसरा मित्र कौन साथ में गया था ?
349. बालक विद्याधर प्रथम आचार्य श्री देशभूषण के चरणों में कहां पर मिले थे ?
350. बालक विद्याधर ने आजीवन ब्रह्मचारी व्रत किनसे और कहां लिया था ?
351. बालक विद्याधर ने किनसे कहां और कब सप्तम प्रतिमा के व्रत ग्रहण किये थे ?
352. जब बालक विद्याधर जी ने श्रवणबेलगोल में सप्तम प्रतिमा के व्रत ग्रहण किये थे तब उनको घर छोड़े कितना समय हो गया था ?
353. बालक विद्याधर आचार्य श्री देशभूषण जी महाराज संघ स्तवनिधि से अजमेर के लिये रवाना हुये तो यात्रा में उन्हें कितने दिन लगे एवं कितने उपवास हो गये ?
354. बालक विद्याधर अजमेर के लिये कब निकले थे ?
355. बालक विद्याधर जब 24 मई 1967 रात्रि 12 बजे अजमेर पहुंचे तो किसके यहां रूके ?
356. बालक विद्याधर से यह वाक्य किसने कहा था पहले हिंदी तो सीख लो तब संस्कृत पढ़ना ?
357. बालक विद्याधर को मुनि ज्ञानसागर जी के पास जाने की सलाह किसने दी ?
358. आचार्य ज्ञानसागर जी के पास बालक विद्याधर को साथ में लेकर अजमेर से किशनगढ़ कौन कौन गये थे ?
359. एक अनगढ़ पत्थर को मूर्ति बनाने के लिये एक आलोक शिल्पी के हाथों में सौपने का सौभाग्य किसे प्राप्त हुआ।
360. आचार्य ज्ञानसागर जी ने विद्याधर हो विद्या लेकर उड़ जाओगे यह वाक्य कहने पर आजीवन किसका त्याग किया था ?
361. यदि तुम ध्यान अध्ययन के लिये दृढ़ संकल्पित हो तो मैं तुम्हें एक दिन विद्यानंदी बना दूंगा यह वाक्य किसने कहा था ?
362. आचार्य श्री विद्यानंद जी किस विषय के प्रकाण्ड विद्वान थे ?
363. बालक विद्याधर को आचार्य ज्ञानसागर जी के पास पहुंचने के कितने दिन बाद केशलोंच करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ ?
364. ब्रह्मचारी विद्याधर की साधना को देखकर आचार्य ज्ञानसागरजी को कितने अंक देने पड़े ?
365. बालक विद्याधर को मुनि दीक्षा देने का संकल्प आचार्य ज्ञानसागर जी ने कहां पर दिया था ?
366. 20 जून 1968 के दिन मुनि दीक्षा देने की घोषणा गुरुवर ज्ञानसागर महाराज जी ने किसके पश्चात् की थी ?
367. गुरुवर ज्ञानसागरजी दादिया से विहार कितने जून को अजमेर की ओर किया था ?
368. गुरुवर ज्ञानसागरजी विद्याधर की दीक्षा के पूर्व दादिया से विहार कर कितने जून को अजमेर में प्रवेश किया था ?
369. ब्रह्मचारी विद्याधर दीक्षा का समाचार तार-टेलीग्राम से सदलगा कितने जून को पहुंचा था ?
370. भाई महावीर अपने चचेरे भाई मल्लू को साथ लेकर कितने तारीख को अजमेर की ओर निकल पड़े थे ?
371. ब्रह्मचारी विद्याधर की बिनौली कब से कब तक कितने दिन निकली थी ?
372. ब्रह्मचारी विद्याधर 25 जून को बिनौली निकलवाने का सौभाग्य किसे प्राप्त हुआ था ?
373. ब्रह्मचारी विद्याधर 26 जून को बिनौली निकलवाने का सौभाग्य किसे प्राप्त हुआ था ?
374. ब्रह्मचारी विद्याधर 27 जून को बिनौली निकलवाने का सौभाग्य किसे प्राप्त हुआ था ?
375. ब्रह्मचारी विद्याधर 28 जून को बिनौली निकलवाने का सौभाग्य किसे प्राप्त हुआ था ?
376. ब्रह्मचारी विद्याधर 29 जून को बिनौली निकलवाने का सौभाग्य किसे प्राप्त हुआ था ?

377. ब्रह्मचारी विद्याधर 30 जून को बिनौली निकलवाने का सौभाग्य किसे प्राप्त हुआ था ?
378. ब्रह्मचारी विद्याधर 30 जून को बिनौली प्रातः 7.30 बजे निकाली गयी जिसमें कितने हाथी थे ?
379. ब्रह्मचारी विद्याधर 30 जून को बिनौली प्रातः 7.30 बजे निकाली गयी जिसमें कितने घोड़े थे ?
380. ब्रह्मचारी विद्याधर 30 जून को बिनौली प्रातः 7.30 बजे निकाली गयी जिसमें कितनी बग्गी थी ?
381. ब्रह्मचारी विद्याधर 30 जून को बिनौली प्रातः 7.30 बजे निकाली गयी जिसमें कितने ऊंट थे ?
382. ब्रह्मचारी विद्याधर 30 जून को बिनौली प्रातः 7.30 बजे निकाली गयी जिसमें कितने बैण्ड टोलिया थी?
383. ब्रह्मचारी विद्याधर 30 जून को बिनौली प्रातः 7.30 बजे निकाली गयी जिसमें कितने ढोल-नगाड़े थे ?
384. ब्रह्मचारी विद्याधर की बिनौली निकाली जा रही थी तब भेंट स्वरूप 2500 रूपये प्राप्त हुये थे जिनका उपयोग किसमें करने का निर्णय लिया था ?
385. भाई का वैराग्य तो सुमेर की तरह अचल है यह वाक्य किसने कहा ?
386. ब्र. विद्याधर की मुनि दीक्षा कब कहां हुई थी ?
387. दीक्षार्थी विद्याधर की माता बनने बनने का सौभाग्य किसे प्राप्त हुआ था ?
388. दीक्षार्थी विद्याधर की पिता बनने बनने का सौभाग्य किसे प्राप्त हुआ था ?
389. दीक्षार्थी विद्याधर ने दीक्षा के पहले कौन से द्रव्य से कौन सा विधान किया था ?
390. ब्र. विद्याधर को दीक्षा दी जायें इसकी स्वीकृति परिवारजनों में से किसने दी थी ?
391. आचार्य श्री ज्ञानसागर महाराज जी ने ब्र. विद्याधर जी को दीक्षा देने की अनुमति किससे मंगवाई थी ?
392. जिस समय बालक विद्याधर की दीक्षा हो रही थी उस समय आचार्यश्री शिवसागर जी महाराज कहां पर विराजमान थे ?
393. ब्र. विद्याधर की दीक्षा के संस्कार प्रारंभ होते ही ग्रीष्मकाल में क्या अतिशय हुआ था ?
394. बालक विद्याधर को दीक्षा देते ही गुरुवर ज्ञानसागर महाराज जी को कौन सी उपाधि से सम्मानित किया गया था ?
395. मुनि विद्यासागर जी की दीक्षा के समय आचार्य ज्ञानसागर जी द्वारा अनुवादित कौन से ग्रंथ का प्रकाशन हुआ था ?
396. मुनि विद्यासागर जी महाराज दीक्षा के समय भोजन दस हजार लोगों का बना था उस भोजन को कितने लोगों ने किया था ?
397. अजमेर के कौन से श्रेष्ठी ने आचार्य श्री के पचासवें संयमोत्सव वर्ष पर स्वर्ण रथ निर्माण कराया है ?
398. अजमेर का स्वर्ण रथ सबसे पहले आचार्य श्री के सान्निध्य में कहां पर और कब लाये थे ?
399. मुनिश्री विद्यासागर जी महाराज की दीक्षा के बाद आचार्य ज्ञानसागर महाराज जी को आहार कराने का सौभाग्य किसे प्राप्त हुआ था ?
400. मुनि श्री विद्यासागर महाराज जी का प्रथम पारणा कराने का सौभाग्य किसे प्राप्त हुआ था ?
401. मुनि श्री विद्यासागर महाराज जी का प्रथम पारणा कराने का सौभाग्य परिवारजनों में किसे प्राप्त हुआ था ?
402. महावीर भैया एवं मल्लू भैया दीक्षा के बाद किस श्रावक श्रेष्ठी के साथ घर वापस हुये थे ?
403. अन्ना जी ने विद्याधर के पहनने वाली सोने की तीन लड़ों वाली चेन (जनेऊ) एवं अंगूठी का क्या बनवाया था ?
404. मुनिश्री विद्यासागर महाराज जी का प्रथम वर्षायोग स्थापना कब और कहां हुई ?
405. आचार्य ज्ञानसागर महाराज जी का आहार होने की खुशी में अन्ना जी एवं अक्का जी ने

आजीवन कौन सा व्रत लिया था ?

406. मुनि श्री विद्यासागर महाराज जी को परिवारजन ने पड़गाहन के बाद किससे पूजा की थी ?
407. मुनि श्री विद्यासागर महाराज जी को परिवारजन ने पड़गाहन के बाद मित्र मारूति ने किससे पूजा की थी ?
408. मुनिश्री विद्यासागर महाराज का प्रथम मुनि दीक्षा दिवस कब और कहां मनाया गया था ?
409. गुरुवर ज्ञानसागर प्रयत्नशील थे जो कुछ भी मेरे पास हैं चारित्र या ज्ञान वह सब कुछ किस शिष्य में उडेल दू ?
410. मुनि श्री विद्यासागर जी प्रयत्नशील थे जो कुछ भी गुरुवर ज्ञानसागर जी से मिल रहा है उसे पूरा का पूरा किसमें ढाल दू ?
411. गुरुवर ज्ञानसागर जी की संल्लेखना के समय आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज मातृ कितने घंटे विश्राम करते थे ?
412. गुरुवर ज्ञानसागर जी महाराज का शरीर कृश था उन्हें शरीर में पीड़ा न हो इसीलिये आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज उनके शिराने क्या लगा देते थे ?
413. गुरुवर ज्ञानसागर महाराज जी की समाधि कब हुई थी ?
414. मां के बिना बताये भाई अनंतनाथ मुनि विद्यासागर जी दर्शन करने कब और कहां गये ?
415. भाई अनंतनाथ को मुनि श्री विद्यासागर महाराज जी के प्रथम दर्शन कहां हुये थे ?
416. आर्यिका श्री गुरुमति माताजी ने पाद प्रक्षालन को श्रावक से जल लाने के लिये कहने पर प्रायश्चित कहां लिया था ?
417. आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज कब और कहां से दो माह में उत्कृष्ट केशलोंच करते है ?
418. आचार्य श्री का मुनि अवस्था में प्रथम केशलोंच कब और कहां हुआ था ?
419. आचार्य श्री का मुनि अवस्था में द्वितीय केशलोंच कब और कहां हुआ था ?
420. मुनि श्री विद्यासागर महाराज जी ने मुनि दीक्षा के पहले कितनी बार केशलोंच किये ?
421. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के वर्तमान में कितने दांत भी शेष है ?
422. आपके गुरु महाराज तो बारहवें गुणस्थानवर्ती के निर्मोही साधक हैं यह किसने कहा था ?
423. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी का एक चौंके में आहार करेंगे ऐसा नियम कब और कहां से प्रारंभ हुआ ?
424. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने मुनि श्री समयसागर महाराज एवं मुनि श्री योगसागर महाराज जी को बुलाया और कहां एक चौंके में भी पड़गने का नियम लिया जा सकता है यह कहां पर कहां था ?
425. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज मुनि श्री समयसागर जी महाराज मुनि श्री योगसागर जी महाराज का एक चौकेमें नियम लेने के कितने दिन बाद तीनों का अलाभ (उपवास) हो गया था ?
426. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने स्वयंभू स्तोत्र का तीनों संधाओं में पढ़ने का नियम कहां और कब लिया ?
427. सन् 1999 में गोम्मटगिरि इंदौर वर्षायोग में आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने कौन से ग्रंथ का स्वाध्याय कराया था ?
428. जो साधन धर्म साधना में सहायक होते हैं वह क्या कहलाते थे ?
429. मुनियों के उपकरण कितने है नाम भी बताईये ?
430. पिच्छिका किसका उपकरण है ?
431. संयम के प्रति जागरूक बने रहने के लिये साधु किसका स्वाध्याय करते है ?

432. योग गुरु बाबा रामदेव आचार्य श्री विद्यासागर महाराज के दर्शनार्थ कहां पर कब पहुंचे थे ?
433. आचार्य कल्प विवेक सागर जी मुनि दीक्षा कब ओर कहा हुई ?
434. आचार्य कल्प विवेक सागर महाराज ने कितनी मुनि एवं आर्यिका दीक्षा दी ?
435. मुनि श्री पवित्रसागर महाराज जी की मुनि दीक्षा कब और कहां हुई एवं उनके गुरु कौन थे ?
436. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने लगातार नौ उपवास कहां और कब किये थे ?
437. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के नौ उपवास के बाद दीपावली के दिन पारणा कराने का सौभाग्य किसे प्राप्त हुआ था ?
438. आचार्यश्री विद्यासागर महाराज जी ने लगातार तीन उपवास 1990 में कहां किये थे ?
439. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने रक्षा बंधन के समय लगातार तीन उपवास मुक्तागिरि में किये उसकी पारणा कराने का सौभाग्य किसे प्राप्त हुआ था ?
440. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी का अमरकटंक से विहार करते हुये आहार खप्पर वाले घर में बरसते हुये पानी में कहां पर हुये थे ?
441. आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज प्रातः काल कितने बजे उठकर ध्यान करते है ?
442. मैंने अपने स्वयं का कल्याण करने दीक्षा प्राप्त की है यह बात आचार्य श्री विद्यासगर महाराज जी ने कहां कब की थी ?
443. शरीर को जान बूझकर कठिन तपस्या की अग्नि में झौंकना क्या कहलाता है ? 371. इंद्रियों को जाती हुई दृष्टि को रोकने का नाम क्या है ?
444. आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने लगातार सात दिन श्मशान में ध्यान करने कहां जाते थे ?
445. तप किसकी निवृत्ति के लिये परम रसायन है ?
446. बाह्य तप किसमें वृद्धि करते है ?
447. हमें तप की सुरक्षा किसकी तरह करना चाहिए ?
448. प्रमादजन्य दोष का परिहार क्या कहलाता है?
449. विनय गुण को कहां कहां दूसरे नंबर पर रखा है कोई तीन स्थान बतायें ?
450. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी को वर्षायोग में मूंछ वाला साप कहा और कब मिला था ?
451. किस सन् में वर्षायोग में ऊपर छहघरिया मंदिर बड़े बाबा के बीच पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर है वहां पर सर्प आचार्य श्री विद्यासागर जी के सामने काँचली छोड़कर गया था ?
452. सन् 1981 में आचार्य श्री पहाड़ पर शयन करते थे तब रात्रि में एक मोटा अजगर तखत के नीचे आकर बैठ जाता था वह स्थान कौन सा था ?
453. आप आपना सोच किसकी ओर जाग्रत करेंगे तभी पुरुषार्थ कर पायेंगे ?

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये

454. गुरु के प्रति भक्ति रखना चाहिये..... नहीं ?
455. गुरु से .....और.....मिलते है ?
456. मनुष्य जीवन दुर्लभ ..... समान है ?
457. ..... बिना जीवन की सार्थकता नहीं होती ?
458. 28 मूलगुणों का अच्छे से पालन करना किसका पहला कर्त्तव्य है ?
459. जो व्यक्ति मूलगुणों एवं आवश्यकों में कमी रखता है वह बड़े बड़े ग्रंथों का..... करता है यह ठीक नहीं ?
460. ..... की गोद में रहना चाहिए ?
461. धन्य है आचार्य भगवान जो मन वचन काय एवं कृतकारित अनुमोदना रूप हिंसा तो दूर

उससे भी अत्यंत..... दोष से भी स्वयं को सहज ही बचा लेते है ?
462. ब्रह्मचारी का अर्थ ..... से निवृत्ति नहीं बल्कि ..... निवृत्ति है ?
463. पांचों इन्द्रियों के विषय से विरक्त होने का नाम ही..... है ?
464. मुनियों को ..... और ..... दूर रहना चाहिए ?
465. आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज आर्यिकाओं को शिक्षा देते हुये कहते हैं कि कभी भी असंयमी पुरुषों के ..... नहीं रहना चाहिए ?
466. जिसको छोड़ने के लिये पुरुषार्थ करें किंतु छोड़ा ना जाये वह ..... है ?
467. हम तो निर्ग्रन्थ हैं ग्रंथ पढ़ते हैं पर अपने पास ..... नहीं रखते हैं ?
468. घड़ी की ओर ध्यान देना यह हो गया ..... एवं घंटी की ओर ध्यान देना यह..... है ?
469. ..... ही अहिंसा के पथ पर चल सकता है ?
470. निम्न भाषा से ..... धक्का लगता है ?
471. ..... को वचन से बंधना नहीं चाहिए ?
472. मुनियों को जैसा मिले वैसा ले लेना ..... समिति है ?
473. जो निर्दोष ..... का पालन करता है उसका मन हमेशा-हमेशा प्रसन्न रहता है ?
474. पराजित होने का मूल कारण ..... लोलुप्ता है ?
475. अपनी अपनी इंद्रिय को विषयों से बचने का ..... करना ही इंद्रिय निरोध हैं ?
476. निरोध करने के लिये..... की कोई आवश्यक्ता नहीं अपितु अधिक चिंतन करने की आवश्यक्ता है ?
477. आप ..... रोकना चाहते है तो इंद्रिय निरोध करना सीखों ?
478. यदि निर्जरा करना चाहते हो तो पाचों इंद्रियों को ..... रखों ?
479. हम चौंके में सफल हो गये तो..... से भी ज्यादा निर्जरा चौंके में हो सकती है ?
480. पर्वत की चोटी में बैठकर तप करने में वो निर्जरा नहीं होती तो निर्जरा हमारी निंदा परख .....सुनने में होती है ?
481 अपने मन को वश में करने वाले ही..... माने गये है ?
482. जिसका.....रूपी सरोवर शांत है वहां रागद्वेष रूपी उत्पन्न नहीं हो सकती है ?
483. मानसिक साधना ..... मंत्री है और शारीरिक..... है ?
484. मन को ..... बाजार में मत भेजो ?
485. पंचेन्द्रिय एवं ..... रूपी गेट बंद रखो ?
486. हरी नहीं, ...का नाम लेना चाहिए ?
487. खड़े होकर भोजन करने से ..... क्षमता ज्ञात हो जाती है ?
488. जो केवल ज्ञान प्राप्ति के लिये श्रम करे वह ..... है ?
489. ..... निधि हैं इसकी सुरक्षा करों ?
490. ..... और ..... के द्वारा स्वर्ग प्राप्त होना अच्छा है ?
491. ..... तप के बिना भीतरी तप का उद्भव संभव नहीं है ?
492. उपवास..... के रोगो के दूर करने के लिये कारण है।
493. इंन्द्रियां विषयों की ओर न जावे एवं मन ख्याति पूजा लाभ की ओर न जावे यही..... है ?
494. मूलगुण ..... हैं तप उनकी .....?
495. तृप्ति पूर्वक भोजन न करने का नाम ही ..... है ?
496. जैन जगत में ..... व .....से सच्चा वास्ता होता है ?
497. ..... कर्मक्षय व मुक्ति के लिये होना चाहिए ?

498. तप के माध्यम से मातृ..... नहीं होता संवर भी होता है ?
499. जिसकों हमने अपना आराध्य माना उन पर शंका नही करना ..... होना है ?
500. ..... के प्रति राग करते-करते विषयों के प्रति राग कम होने लग जायेगा ?

उपरोक्त प्रश्न आर्यिका श्री पूर्णमति माताजी द्वारा रचित ज्ञानधारा से लिये गये हैं।

संक्षेप में उत्तर दीजिये

501. पीलू ने जैनधर्म में सबसे पहले कौन सी चीज याद की थी ?
502. ऐसी कौन सी निधि है जो सबको समान मिलती है ?
503. विद्याधर को कौन सी चर्चा पसंद नहीं थी ?
504. गिल्ली डंडा खेलते समय गुफा में विद्याधर को किसके दर्शन हुए ?
505. किन आचार्य संघ के आगमन पर विद्याधर सबसे आगे धर्मध्वजा लेकर चले थे ?
506. मल्लप्पा जी ने एक पत्नी व्रत किससे लिया था ?
507. कौन से मुनि भगवंतों के साथ विद्याधर को स्वाध्याय में बैठने की अनुमति मिल गई थी ?
508. मूँजी बन्धन संस्कार कितनी वर्ष की उम्र में हुआ था ?
509. विद्या योगेन रक्ष्यते का क्या अर्थ है ?
510. कृत्रिम चैत्यालय के चिन्तन में तीन मण्डप कौन से थे ?
511. आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज बुंदेलखण्ड के किस ग्राम में कुएँ से पानी को सही तरीके से निकालने व बिलछानी डालने की प्रक्रिया से प्रभावित हुये थे ? और उन्होंने क्या कहा था ?
512. ज्ञानसागर जी महाराज ने विद्याधर को क्या कहकर आश्वासन दिया था ?
513. ज्ञानधारा में कितनी भाषाओं का प्रयोग हुआ है ?
514. मां के लिये साड़ी कहाँ से लाये थे ?
515. परमानन्द का बजता रहे साज सदा इसलिये क्या अर्पण किया था ?
516. विद्याधर घर से मंदिर की दूरी कितनी बताते थे ?
517. इष्ट का वियोग हर पल कितना लम्बा लगता है ?
518. आचार्य कुंदकुंद स्वामी और जिनसेनाचार्य ने कितनी उम्र में दीक्षा ले ली थी ?
519. विशाल जनसमूह के बीच क्या घोषणा हुई थी ?
520. व्याकरण में और जीवन में किसकी महिमा है ?
521. दिखावट, बनावट और सजावट में क्या है ?
522. भारतीय संस्कृति क्या कहती है ?
523. गृह त्याग के बाद, पहली बार माता-पिता को विद्याधर जी कहाँ मिले थे ?
524. दीक्षा के लिये क्या आवश्यक है ?
525. गुरु समीप बैठे ब्र. विद्याधर से एक विद्वान सेठ ने कुल कितने प्रश्न पूछे थे ?
526. कौन खिलाने-पिलाने, फूल सा रखने पर भी शूल देता है ?
527. विचारने योग्य तीन चीजें क्या हैं?
528. उपयोग रूपी गाड़ी की विकार को खाई में गिरने से कौन बचा लेता है ?
529. ज्ञान की आँख खुलती है तो उसे क्या कहते हैं ?
530. ज्ञानधारा में कितने खण्ड हैं उनके नाम लिखिये ?
531. सप्तम प्रतिमाधारी ब्र. विद्याधर दक्षिण से उत्तर जाने वाले थे, ज्यों ही संत भवन से बाहर

निकले तो क्या शुभ शकुन हुआ ?

532. बालक विद्याधर नौ वर्ष की उम्र में किसकी चर्या करते थे ?
533. कौन प्रत्येक आत्मा में प्रवाहमान, ध्रुवधावमान, सतत गतिमान रहती है ?
534. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने फिरोजाबाद से विहार करते हुये सर्वप्रथम कौन से सिद्धक्षेत्र के दर्शन किये थे ?
535. विद्याधर ने आचार्य ज्ञानसागर जी के दर्शन सर्वप्रथम कहाँ किये थे ?
536. आचार्य श्री विद्यासागर जी के गुरु ने समाधि के कितने दिन पूर्व चारों प्रकार के आहारों का त्याग कर दिया था ?
537. शांतिनाथ एवं अनन्तनाथ ने ब्रह्मचर्य व्रत कब और कहाँ लिया था ?
538. विद्याधर के पिता श्री मल्लप्पा जी कौन से महाराज के संघ में चले गये थे ?
539. मल्लप्पा जी एवं श्रीमंती जी ने किस शहर में दीक्षा ग्रहण की थी ?
540. संतों के सरताज आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने कन्नड़ में प्रवचन कहाँ किया था?
541. आचार्य श्री के आने पर कलकत्ता जाने पर अखबार के मुख्य पृष्ठ पर क्या छपा ?
542. आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने अपने गुरुवर के साथ कितने चातुर्मास किये ?
543. प्रारंभ में लुभावना और अंत में डरावना क्या है ?
544. साईकिल सवार किस हालत में आराध्या को मिला ?
545. कौन विकारों में जीता है और कौन विकारों को जीतता है ?
546. विद्याधर ने, मुझे कालांतर में मुनि बनना है दर्द सहने का पाठ अभी से सीख लेना चाहिये यह किस प्रसंग में कहा था ?
547. कौन सा क्षेत्र जहाँ आचार्य श्री के साथ मुनि श्री मल्लिसागर जी का चातुर्मास हुआ था ?
548. विद्याधर ने चलती बस में 108 का क्या अर्थ लगाया ?
549. किस स्थान पर आचार्य देशभूषण जी महाराज को बिच्छू ने काटा था ?
550. जिस माह में सदलगा में महावीर प्रसाद जी विवाह रचा रहे थे उसी माह में उनके परिवार जनों के सदस्यों के साथ क्या हो रहा था ?

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये

551. बालक विद्याधर के हाथ ..... का चिन्ह था ?
552. डेढ़ वर्ष की उम्र में पीलू ने ..... की यात्रा की थी ?
553. भले.....सबसे कम है पर.....सबसे अधिक है ?
554. विद्याधर ने बाढ़ पूरित नदी में ..... घण्टे नाव चलाई थी ?
555. बालू के ग्रास और ..... चबाने के समान है दीक्षा ?
556. देश को चलाने..... चाहिए ?
557. ..... हैं वे जो औंरो को सुखी करके प्रसन्न होते हैं ?
558. उपयोग का ..... करना ही .....सदुपयोग करना है ?
559. रूपवती नहीं ..... लाऊँगा ?
560. अपनों के घेरे में .....है और अपने घर में.....हैं ?
561. मन में विचार ..... अधिक है कोमल ?
562. खाली दिमाग ..... ज्ञान से भरा ..... भगवन् का घर ?

563. ..... एक गलती समूचे विश्व में झलकती है ?
564. प्राचीन भारतीय अर्थ व्यवस्था के प्रमुख घटक .....व..... थे ?
565. यह कैसी..... फट गई धोती खा गई ..... ?

हाँ या ना उत्तर लिखिये

566. जिद करना या मचलना विद्या के स्वभाव में नहीं था ?
567. ताते सी मधुर सुरीली आवाज के कारण गिनी से हो गया पीलू ?
568. गिल्ली डंडा खेलते-खेलते गेंद गुफा में चली गई थी ?
569. मुनि श्री मल्लिसागर जी महाराज (गृहस्थ अवस्था के पिता) ने दीक्षा लेने के एक दिन बाद ही आजीवन नामक का त्याग कर दिया था ?
570. सीधे को टेड़ा करना, विद्याधर को बचपन से ही आता था ?
571. जो कुएँ में होता है वही बाल्टी में आता है, जो गुरु में होता है वही शिष्य में आता है ?
572. हिंदी बोलते समय सारा मस्तिष्क सक्रिय होता है ?
573. मारूति ने आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज से ब्रह्मचर्य व्रत लिया था ?
574. सुणो भई खुशिया.... इस भजन की रचयित्री आर्यिका रत्न 105 श्री पूर्णमति माताजी हैं ?
575. ज्ञानार्जन के लिये मन की धरती कठोर होनी चाहिए ?
576. विद्याधर बावड़ी में नहाते नहीं थे, पद्मासन लगाकर ध्यान करते थे ?
577. दीक्षा की भावना ले, बिना बताये ही मल्लप्पा जी मैसूर चले गये थे ?
578. भिखारी उपहास, अविकारी उपासना का पात्र होता है ?
579. मैं यहाँ हूँ -सुनते ही श्रीमंती की श्वासों का प्रवाह सहज हो गया था ?
580. अर्द्ध रात्रि के समय थूबौन जी में नाग-नागिन का जोड़ा आचार्य श्री के दर्शन को आया था ?
581. तृतीय दीक्षा दिवस पर मुनि श्री विद्यासागर जी महाराज ने उपवास किया था ?
582. पंडित जी ने 3 लड़ी का चमकता चाँदी का जनेऊ पहनाया था विद्याधर को ?
583. धार्मिक क्रिया करते समय कभी भी माँ को परेशान नहीं करना, यह तो विद्याधर ने बचपन से ही ठान लिया था ?
584. जब ब्र. विद्याधर आचार्य ज्ञानसागर जी महाराज के पास आये तब उनके तीन निर्जल उपवास हो गये थे ?
585. आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का जन्म शरद पूर्णिमा के दिन हुआ था ?

यह वाक्य किसने किससे कहाँ ?

586. मैं उड़ने नहीं स्थिर होने आया हूँ ?
587. रोना अच्छी बात नहीं, इससे पाप लगता है ?
588. मरण और वैराग्य को कौन रोक सकता है ?
589. हीरा भी लाकर दूँ और परख भी मैं करूँ ?
590. डरो मत मैं हूँ ना ?
591. शरीर अलग कर आत्मा देख रहा हूँ ?
592. आप बनना अकलंक जैसा, मैं बनूँगा निकलंक - सा
593. तुम्हारे पास पैसा नहीं, परमात्मा है ?
594. क्या करोगे बड़े होकर ?
595. पावन तीर्थ पर कब पधारे ?
596. तुम्हें तो माला ही दे गये ? मुझको तो मालामाल कर गये ?
597. मुझे चिंता नहीं अपने मोक्ष की, चिंतित हूँ- क्या होगा इन जीवों का ?

598. संकेत दिया है जिनने, साथ ही शक्ति भी भेजी है उनने ?
599. मैं इसमें देख रहा हूँ अपना भविष्य ?
600. नीचे से लगाना चाहते हो या ऊपर से गिरवाना चाहते हो ?

दिगम्बरत्व और दिगम्बर मुनि लेखक बाबू कामता प्रसादजी

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये

601. ईसाई मतानुसार आदम और हब्बा..... रहते थे ?
602. भीलों का अध्ययन करने पर पाया गया कि वे .....रूप में रहते थे ?
603. मनुष्य का निज रूप ..... ही है जो वास्तु धर्मरूप है ?
604. दिगम्बर मुनि ..... रूप होते है ?
605. भगवान ऋषभेदव के ज्येष्ठ पुत्र भरत के नाम से इस देश का नाम .....पढ़ा ?

संक्षिप्त में उत्तर दीजिये

606. दिगम्बरत्व और दिगम्बर मुनि पुस्तक के लेखक के नाम क्या है ?
607. बाबू कामता प्रसाद जी का जन्म कब हुआ था ?
608. महात्मा गांधी ने किसको मनुष्य के शरीर की योग्य पौशाक माना है ?
609. जिसके भीतर रागद्वेष से रहित नग्नता हो वही बाह्य नग्न दिगम्बर होता है उसे क्या माना है ?
610. वस्तु के स्वभाव को क्या कहां है ?
611. बालक जन्म से जैसा होता है उसे क्या कहते है ?
612. वैदिक शास्त्रों में विष्णु का आठवां अवतार किसे कहा है ?
613. महाव्रत कितने होते है ?
614. समिति कितनी होती है ?
615. मुनियों के आवश्यक कितने होते है ?
616. मुनिराज कितनी इंद्रियों का निरोध करते है ?
617. मुनिराजों के 28 मूलगुणों में शेषगुण कितने होते है ?
618. मुनिराजों के मूलगुणों के अतिरिक्त और कोई गुण होते है क्या ?
619. निर्ग्रन्थ शब्द का उल्लेख किसमें मिलता है ?
620. राजा दशरथ श्रमणों को आहार देते थे यह रामायण के कौन से कांड में आया है ?
621. रामायण के कौन से कांड के कौन से सर्ग तथा श्लोक में राजा दशरथ को मुनियो को आहार देना बताया है ?
622. बौद्ध ग्रंथों में भगवान महावीर को किस नाम से जाना जाता है ?
623. भगवान महावीर को किसके समकालीन बताया गया है ?
624. भगवान महावीर से प्रभावित होकर सम्राट श्रेणिक के किस पुत्र ने जैनेश्वरी दीक्षा ली थी ?
625. हेमांग देश के राजा का नाम क्या था ?
626. विनयपिटक में भगवान महावीर का उल्लेख किस रूप में मिलता है ?
627. भगवान महावीर स्वामी के कितने गणधर थे ?
628. भगवान महावीर स्वामी के संघ में कितने मुनिराज थे ?
629. भगवान महावीर स्वामी के संघ में कितने साधारण शिक्षक मुनि थे ?
630. भगवान महावीर स्वामी के संघ में कितने अंगपूर्वधारी मुनिराज थे ?
631. भगवान महावीर स्वामी के संघ में कितने अवधिज्ञानी मुनिराज थे ?
632. भगवान महावीर स्वामी के संघ में कितने विक्रियाऋद्धिधारी मुनिराज थे ?

633. भगवान महावीर स्वामी के संघ में कितने मनः पर्यय ज्ञानधारी मुनिराज थे ?
634. भगवान महावीर स्वामी के संघ में कितने अनुत्तरवादी मुनिराज थे ?
635. भगवान महावीर स्वामी के संघ में कितने केवलज्ञानी मुनिराज थे ?
636. नंद राजा ने कौन सी दीक्षा ली थी ?
637. चंद्रगुप्त मौर्य ने किससे मुनि दीक्षा ली थी ?
638. चंद्रगुप्त मौर्य की समाधि कहां पर हुई थी ?
639. सिकन्दर कौन से मुनि को यूनान ले गया था ?
640. हठयोग का श्रेष्ठतम रूप क्या है ?
641. अथर्ववेद के कौन से अध्याय में महाव्रत दिगम्बर साधु के अनुरूप हैं ऐसा आया है ?
642. विशेषतर तप में लीन रहने से दिगम्बर मुनि को क्या कहते थे ?
643. मुनियों के गण में रहने का दिगम्बर मुनि किस नाम से जाने जाते है ?
644. वृद्ध श्रावक शब्द किसका द्योतक है ?
645. दिगम्बर ऋद्धिधारी साधु के लिये क्या कहते है ?
646. आरटाल (धारवाड़) के शिलालेख में कौन से मुनि का उल्लेख किया है ?
647. दिगम्बर जैनाचार्य श्री शुभचन्द्र जी किस राजा के समकालीन थे ?
648. भट्ट अकलंक देव कितनी भाषाओं के ज्ञाता थे ?
649. विष्णु नंदी जी किस सन् में आचार्य हुये ?
650. वज्र कुमार मुनि किस सन् में आचार्य हुये ?
651. किसके लिये आत्मोन्नति की पराकाष्टा संभव है ?
652. नोक के बराबर भी परिग्रह का ग्रहण किसके लिये नहीं होता है ?
653. वस्त्रधारी मनुष्य क्या नहीं पा सकता है ?
654. किसके बिना धर्म का मूल्य कुछ भी शेष नहीं रहता ?
655. विकारी होना किसके लिये कलंक है ?
656. किसके बिना नग्नता का कौड़ी मोल नहीं है ?
657. कैसा मन और कैसा तन ही मनुष्य का आधार दृष्टि है ?
658. शुक्राचार्य कैसे थे और वे किस वेष में रहते थे ?
659. तालाब में कई देवकन्यायें नंगी होकर जल क्रीड़ा कर रही थी किसके वहां से निकलने पर उनको किसी प्रकार का क्षोभ उत्पन्न नहीं हुआ था ?
660. किसने सबसे पहले दिगम्बरत्व का उपदेश दिया था ?
661. भगवान ऋषभेदव किसके पुत्र थे ?
662. ज्ञान वैराग्य सन्यासी को कैसा होना पड़ता है ?
663. दिगम्बर साधु किसके लिये पूज्य पुरुष है ?
664. बालों को हाथ से उखाड़ कर फेक देते हैं इस क्रिया को क्या कहते है ?
665. दिगम्बरत्व की अवस्था किससे मुक्ति पाने के लिये आवश्यक है ?
666. किस मजहब को मानने वाले भी सैकड़ो दिगम्बर साधु रहे है ?
667. दिगम्बर साधु के कितने भेद बताये है ?
668. कौन से साधु के दर्शन होना दुर्लभ हो जाते है ?
669. जो साधु तिलतुशमात्र परिग्रह नहीं रखते उन्हें क्या कहते है ?
670. गृह त्यागी दिगम्बर मुनिराज को क्या कहते है ?

671. कौशल का राजा प्रसेनजित किसको नमस्कार करता था ?
672. कौन से साहित्य से भी यह प्रकट हैं कि निर्ग्रन्थ महावीर रहे थे ?
673. श्वेताम्बर भी अपने को निर्ग्रन्थ न कहकर किस संघ को ही निर्ग्रन्थ संघ मानते है ?
674. पांच महाव्रतों को पालन करने के कारण दिगम्बर मुनि को क्या कहते है ?
675. ममत्व त्यागी होने के कारण से दिगम्बर मुनि को क्या कहते है ?
676. योगनिरत होने के कारण से दिगम्बर साधु को क्या कहते है ?
677. वस्त्र रहित मुनि को क्या कहते है ?
678. यम नियमों का पालन होने से दिगम्बर मुनि को क्या कहते है ?
679. जो मुनि दीर्घ तपस्वी होते है उनको क्या कहते है ?
680. आत्म साधना में लीन दिगम्बर मुनि को क्या कहते है ?
681. सूर्य के उदय हो और अस्तकाल की तीन घड़ी छोडकर एक बार भोजन करने को क्या कहते है ?
682. अरहन्त देव निर्ग्रन्थ गुरु और जिन शास्त्रों को मनवचन काय की शुद्धि सहित नमस्कार करने को क्या कहते है ?
683. ऋषभादि चौबीस तीर्थंकरों मन वचन काय की शुद्धता पूर्वक स्तुति करने को क्या कहते है ?
684. जीवन -मरण, संयोग-वियोग, मित्र-शत्रु, सुख-दुख, भूख-प्यास को क्या कहते है ?
685. पूर्णतः मन वचन काय पूर्वक अहिंसा धर्म को पालन करने को क्या कहते है ?
686. साधुओं के कितने मूलगुण होते है ?
687. पूर्णतः अपरिग्रह धर्म के पालन करने को क्या कहते है ?
688. प्रयोजनवश निर्जीव मार्ग से चार हाथ जमीन देखकर चलने को क्या कहते है ?
689. सुंगधी दुर्गंधी में रागद्वेष नहीं करने को क्या कहते है ?
690. निश्चित क्रिया रूप एक नियत काल के लिये जिन गुणों की भावना सहित देह में ममत्व को छोड़कर स्थिर होने को क्या कहते है ?
691. अपने हाथ से मस्तक, दाढ़ी, मूंछ के बालों को उखाड़ने को क्या कहते है ?
692. अंगुलि, नख, दातौन, तृण आदि से दन्तमल को शुद्ध नहीं करने को क्या कहते है ?
693. दिशायें जिनकी वस्त्र है इसलिये जैन मुनि को क्या कहते है ?
694. जिनेन्द्र भगवान द्वारा उपदिष्ट नग्न भेष का पालन करने के कारण दिगम्बर मुनि किस नाम से प्रसिद्ध है ?
695. विशेषतर तप में लीन होने के कारण दिगम्बर मुनि को क्या कहते है ?
696. मुनि व श्रावक आदि के लिये धर्मगुरु होने के कारण दिगम्बर मुनि को किस नाम से अभिहित होते है ?
697. वस्त्ररहित होने के कारण दिगम्बर मुनि को क्या कहते है ?
698. स्नान उबटन अंजन लेपन आदि का त्याग होने से मुनिराज का कौन से मूलगुण का पालन होता है ?
699. अपने हाथों को भोजन पात्र बनाकर भीत आदि के आश्रय रहित चार अंगुल के अन्तर से समपाद खड़े रहकर तीन भूमियों के शुद्धता से आहार ग्रहण करने को क्या कहते है ?
700. पूर्णतः सत्य धर्म का पालन करने को क्या कहते है ?

संस्कार सागर चातुर्मास विशेषांक 2022

701. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी द्वारा कुंडलपुर में कितने निर्यापक बनायें गये ?
702. आचार्य श्री सौरभसागर महाराज जी को आचार्य पद कब और कहां मिला ?
703. आचार्य श्री प्रज्ञासागर महाराज जी को आचार्य पद कब और कहां मिला ?

704. आचार्य श्री ज्ञेयसागर महाराज जी ने 03 फरवरी 2022 को किसे गणिनी पद दिया ?
705. आर्यिका विपुलमति माताजी जयपुर में किसने गणिनी पद दिया ?
706. 23 जुलाई 2021 से 21 जुलाई 2022 तक कितनी समाधि हुई ?
707. 23 जुलाई 2021 से 21 जुलाई 2022 तक कितनी दीक्षायें हुई ?
708. वर्तमान में कुल कितने आचार्य है ?
709. सन् 2022चातुर्मास तक कुल कितने मुनि, आर्यिका, एलक, क्षुल्लक, क्षुल्लिका आदि साधु है ?
710. सन् 2022चातुर्मास तक कुल कितने मुनिराज है ?
711. सन् 2022चातुर्मास तक कुल कितनी आर्यिकायें है ?
712. सन् 2022चातुर्मास तक कुल कितने क्षुल्लक महाराज है ?
713. 14 अगस्त 2021 को आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने दयोदय तीर्थ जबलपुर में कितनी क्षुल्लक दीक्षायें दी थी ?
714. आचार्यश्री सुनीलसागर महाराज जी ने 15 अक्टूबर 2021 अंधेश्वर में कितनी दीक्षायें दी ?
715. आचार्य श्री सुंदरसागर महाराज जी ने 10 दिसंबर 2021 बांसवाडा में कितनी दीक्षायें दी?
716. गणिनी आर्यिका विशाश्री माताजी ने 27 जनवरी 2022 गया बिहार में कितनी दीक्षायें दी?
717. गणाचार्य श्री विरागसागर महाराज जी ने 15 जनवरी 2022 भिण्ड में कितनी दीक्षायें दी ?
718. आचार्य श्री सुबलसागर महाराज जी ने 14 नवम्बर 2021 को डालीगंज लखनऊ में कितनी दीक्षायें दी?
719. आचार्य श्री विशुद्धसागर महाराज जी ने 14 नवम्बर 2021 को सम्मेद शिखर मधुवन झारखंड में कितनी दीक्षायें दी?
720. आ. श्री सौभाग्यसागर महाराज जी ने 6 नवम्बर 2021 को महरौली दिल्ली में कितनी दीक्षायें दी ?
721. आ. श्री वर्धमानसागर महाराज जी ने 21 अगस्त 2021 को बांटेगांव धामगिरि में कितनी दीक्षायें दी ?
722. आ.श्री वर्धमान सागर महाराज जी ने 13 अगस्त 2021 को कोथली में कितनी दीक्षायें दी ?
723. आ.श्री विमर्शसागर महाराज जी ने 11 दिसबंर 2021 को महमूदाबाद सीतापुर में कितनी दीक्षायें दी ?
724. आ.श्री विभवसागर महाराज जी ने 14 दिसंबर 2021 को बांसवाडा में कितनी दीक्षायें दी ?
725. क्षुल्लक श्री देवानंद सागर महाराज जी की एलक दीक्षा कहां और कब हुई तथा क्या नाम रखा गया ?
726. आ. विद्यासागर महाराज जी ने कुंडलपुर पंचकल्याण के अवसर पर कितनी क्षुल्लक दीक्षायें दी ?
727. क्षुल्लक श्री धैर्यसागर महाराज जी की एलक दीक्षा कब और कहां हुई ?
728. आचार्य उदारसागर महाराज जी ने 21 अप्रैल 2022 बांसा तारखेड़ा में कितनी दीक्षायें दी?
729. आचार्य देवनंदी महाराज ने 25 फरवरी 2022 को णमोकार तीर्थ पर कितनी दीक्षायें दी ?
730. आ. श्रीप्रज्ञासागर महाराज जी ने 24 अप्रैल 2022 को तपोभूमि उज्जैन में कितनी दीक्षायें दी ?
731. आ. श्री सुनीलसागर महाराज जी ने 24 मई 2022 को बलुन्दा राजस्थान में कितनी दीक्षायें दी ?
732. मुनि श्री शांतिसागर महाराज जी की समाधि कहां और कब हुई ?
733. आ. श्री विद्यासागर महाराज जी का 2022चातुर्मास कहां तथा कितने शिष्यों के साथ हो रहा है ?
734. निर्यापक मुनि श्री समयसागर महाराज जी का 2022 चातुर्मास कहां कितने मुनिराजों के साथ हो रहा है ?
735. निर्यापक मुनि श्री योगसागर महाराज जी का 2022 चातुर्मास कहां कितने मुनिराजों के साथ हो रहा है ?
736. निर्यापक मुनि श्री नियमसागर महाराज जी का 2022 चातुर्मास कहां कितने मुनिराजों के

साथ हो रहा है ?
737. निर्यापक मुनि श्री सुधासागर महाराज जी का 2022 चातुर्मास कहां कितने मुनिराजों के साथ हो रहा है ?
738. निर्यापक मुनि श्री समतासागर महाराज जी का 2022 चातुर्मास कहां कितने मुनिराजों के साथ हो रहा है ?
739. निर्यापक मुनि श्री प्रशांतसागर महाराज जी का 2022 चातुर्मास कहां कितने मुनिराजों के साथ हो रहा है ?
740. निर्यापक मुनि श्री अभयसागर महाराज जी का 2022 चातुर्मास कहां कितने मुनिराजों के साथ हो रहा है ?
741. निर्यापक मुनि श्री संभवसागर महाराज जी का 2022 चातुर्मास कहां कितने मुनिराजों के साथ हो रहा है ?
742. निर्यापकमुनि श्री वीरसागर महाराज जी का 2022 चातुर्मास कहां कितने मुनिराजों केसाथ हो रहा है ?
743. मुनि श्री प्रमाणसागर महाराज जी का 2022 चातुर्मास कहां कितने मुनिराजों के साथ हो रहा है ?
744. मुनि श्री उत्तमसागर महाराज जी का 2022 चातुर्मास कहां कितने मुनिराजों के साथ हो रहा है ?
745. मुनि श्री कुंथुसागर महाराज जी का 2022 चातुर्मास कहां कितने मुनिराजों के साथ हो रहा है ?
746. मुनि श्री प्रणम्यसागर महाराज जी का 2022 चातुर्मास कहां कितने मुनिराजों के साथ हो रहा है ?
747. मुनि श्री अजितसागर महाराज जी का 2022 चातुर्मास कहां हो रहा है ?
748. मुनि श्री विमलसागर महाराज जी का 2022 चातुर्मास कहां कितने मुनिराजों के साथ हो रहा है ?
749. मुनि श्री विनम्रसागर महाराज जी का 2022 चातुर्मास कहां कितने मुनिराजों के साथ हो रहा है ?
750. मुनि श्री निर्दोषसागर महाराज जी का 2022 चातुर्मास कहां कितने मुनिराजों के साथ हो रहा है ?
751. मुनि श्री दुर्लभसागर महाराज जी का 2022 चातुर्मास कहां कितने मुनिराजों के साथ हो रहा है ?
752. मुनि श्री आगमसागर महाराज जी का 2022 चातुर्मास कहां कितने मुनिराजों के साथ हो रहा है ?
753. मुनि श्री निस्पृहसागर महाराज जी का 2022 चातुर्मास कहां कितने मुनिराजों के साथ हो रहा है ?
754. मुनि श्री निरंजनसागर महाराज जी का 2022 चातुर्मास कहां हो रहा है ?
755. आर्यिका श्री गुरुमति माताजी का 2022 चातुर्मास कहां कितनी आर्यिकाओं साथ हो रहा है ?
756. आर्यिका श्री दृढ़मति माताजी का 2022 चातुर्मास कहां कितनी आर्यिकाओं साथ हो रहा है ?
757. आर्यिका श्री मृदुमति माताजी का 2022 चातुर्मास कहां कितनी आर्यिकाओं साथ हो रहा है ?
758. आर्यिका श्री ऋजुमति माताजी का 2022 चातुर्मास कहां कितनी आर्यिकाओं साथ हो रहा है ?
759. आर्यिका श्री तपोमति माताजी का 2022 चातुर्मास कहां कितनी आर्यिकाओं साथ हो रहा है ?
760. आर्यिका श्री पूर्णमति माताजी का 2022 चातुर्मास कहां कितनी आर्यिकाओं साथ हो रहा है ?
761. आर्यिका श्री गुणमति माताजी का 2022 चातुर्मास कहां कितनी आर्यिकाओं साथ हो रहा है ?
762. आर्यिका श्री अंनतमति माताजी का 2022 चातुर्मास कहां कितनी आर्यिकाओं साथ हो रहा है ?
763. आर्यिका श्री चिंतनमति माताजी का 2022 चातुर्मास कहां कितनी आर्यिकाओं साथ हो रहा है ?
764. आर्यिका श्री आदर्शमति माताजी का 2022 चातुर्मास कहां कितनी आर्यिकाओं साथ हो रहा है ?
765. आर्यिका श्री उपशांतमति माताजी का 2022 चातुर्मास कहां कितनी आर्यिकाओं साथ हो रहा है ?
766. आर्यिका श्री विज्ञानमति माताजी का 2022 चातुर्मास कहां कितनी आर्यिकाओं साथ हो रहा है ?
767. आचार्य अनेकांतसागर महाराज जी का 2022 चातुर्मास कहां कितने मुनिराजों केसाथ हो रहा है ?
768. आचार्य देवनंदीसागर महाराज जी का 2022 चातुर्मास कहां कितने मुनिराजों केसाथ हो रहा है ?
769. आचार्य गुप्तिनंदी महाराज जी का 2022 चातुर्मास कहां कितने मुनिराजों के साथ हो रहा है ?

770. आचार्य कुंथुसागर महाराज जी का 2022 चातुर्मास कहां कितने मुनिराजों के साथ हो रहा है ?
771. आचार्य कनकनंदी महाराज जी का 2022 चातुर्मास कहां कितने मुनिराजों के साथ हो रहा है ?
772. आचार्य मयंकसागर महाराज जी का 2022 चातुर्मास कहां कितने मुनिराजों के साथ हो रहा है ?
773. आचार्य निर्भयसागर महाराज जी का 2022 चातुर्मास कहां कितने मुनिराजों केसाथ हो रहा है ?
774. आचार्य प्रज्ञासागर महाराज जी का 2022 चातुर्मास कहां कितने मुनिराजों के साथ हो रहा है ?
775. आचार्य पुष्पदंतसागर महाराज जी का 2022 चातुर्मास कहां कितने मुनिराजों केसाथ हो रहा है ?
776. आचार्य संभवसागर महाराज जी का 2022 चातुर्मास कहां कितने मुनिराजों के साथ हो रहा है ?
777. आचार्य चन्द्रप्रभसागर महाराज जी का 2022 चातुर्मास कहां कितने मुनिराजों केसाथ हो रहा है ?
778. आचार्य सिद्धांतसागर महाराज जी का 2022 चातुर्मास कहां कितने मुनिराजों केसाथ हो रहा है ?
779. आचार्य सौभाग्यसागर महाराज जी का 2022 चातुर्मास कहां कितने मुनिराजों केसाथ हो रहा है ?
780. आचार्य सुविधीसागर महाराज जी का 2022 चातुर्मास कहां कितने मुनिराजों केसाथ हो रहा है ?
781. आचार्य सुनीलसागर महाराज जी का 2022 चातुर्मास कहां कितने मुनिराजों केसाथ हो रहा है ?
782. आचार्य सुंदरसागर महाराज जी का 2022 चातुर्मास कहां कितने मुनिराजों के साथ हो रहा है ?
783. आचार्य सुबलसागर महाराज जी का 2022 चातुर्मास कहां कितने मुनिराजों केसाथ हो रहा है ?
784. आचार्य वर्द्धमानसागर महाराज जी (गुरु धर्मसागरजी) का 2022 चातुर्मास कहां कितने मुनिराजों के साथ हो रहा है ?
785. आचार्य विरागसागर महाराज जी का 2022 चातुर्मास कहां कितने मुनिराजों केसाथ हो रहा है ?
786. आचार्य विशुद्धसागर महाराज जी का 2022 चातुर्मास कहां कितने मुनिराजों केसाथ हो रहा है ?
787. आचार्य विशदसागर महाराज जी का 2022 चातुर्मास कहां कितने मुनिराजों केसाथ हो रहा है ?
788. आचार्य विभवसागर महाराज जी का 2022 चातुर्मास कहां कितने मुनिराजों केसाथ हो रहा है ?
789. आचार्य विमर्षसागर महाराज जी का 2022 चातुर्मास कहां कितने मुनिराजों के साथ हो रहा है ?
790. आचार्य विनिश्चयसागर महाराज जी का 2022 चातुर्मास कहां कितने मुनिराजों केसाथ हो रहा है ?
791. आचार्य विनम्रसागर महाराज जी का 2022 चातुर्मास कहां कितने मुनिराजों केसाथ हो रहा है ?
792. आचार्य विवेकसागर महाराज जी का 2022 चातुर्मास कहां कितने मुनिराजों केसाथ हो रहा है ?
793. आचार्य वैराग्यनंदी महाराज जी का 2022 चातुर्मास कहां कितने मुनिराजों के साथ हो रहा है ?
794. आचार्य वसुनंदी महाराज जी का 2022 चातुर्मास कहां कितने मुनिराजों के साथ हो रहा है ?
795. ग.आर्यिका ज्ञानमति माताजी का 2022 चातुर्मास कहां कितनी आर्यिकाओं के साथ हो रहा है ?
796. ग. आर्यिका विशुद्धमति माताजी का 2022 चातुर्मास कहां कितनी आर्यिकाओं के साथ हो रहा है ?
797. ग. आर्यिका शुभप्रकाशमति माताजी का 2022 चातुर्मास कहां कितनी आर्यिकाओं केसाथ हो रहा है ?
798. ग. आर्यिका विमलप्रभा माताजी का 2022 चातुर्मास कहां कितनी आर्यिकाओं के साथ हो रहा है ?
799. ग. आर्यिका विशाश्री माताजी का 2022 चातुर्मास कहां कितनी आर्यिकाओं केसाथ हो रहा है ?
800. ग. आर्यिका विभाश्री माताजी का 2022 चातुर्मास कहां कितनी आर्यिकाओं के साथ हो रहा है ?

स्वतंत्रता संग्राम में जैन पुस्तक से

801. वे कौन से तीर्थंकर हैं जिनके काल में गणतंत्र की परम्परा थी ?
802. मोर्यवंश की स्थापना करने वाला कौन सा जैन सम्राट हुआ है ?
803. अरिष्टनेमि का नाम किस साहित्य में मिलता है ?
804. नेमिनाथ के तीर्थकाल में कौन सा युद्ध हुआ ?
805. संविधान सभा में कितने जैन सदस्य थे ?

806. मध्यभारत के मुख्यमंत्री कौन रहे ?
807. मध्यप्रदेश के वे कौन से जैन मुख्यमंत्री थे जिनका जन्म राजस्थान झालरापाटन में हुआ हो ?
808. इंदौर के वे कौन से जैन थे जिन्हें पद्मश्री पुरस्कार मिला हो ?
809. वे कौन से प्रसिद्ध उपन्यासकार हुए हैं जो जैन थे पर जैन नहीं लिखते थे ?
810. छतरपुर के वे कौन से स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे जो विधायक रहें हों ?
811. वे कौन से स्वतंत्रता संग्राम सेनानी हैं जो डॉ. महेन्द्र कुमार न्यायाचार्य के छोटे भाई थे ?
812. स्वतंत्रता संग्राम में जैन नामक पुस्तक का संकलन किसने किया ?
813. रतनलाल मालवीय संविधान सभा के सदस्य थे उनका जन्म कहाँ हुआ ?
814. कुसुमकान्त जैन संविधान सभा के सदस्य थे उनका जन्म कहाँ हुआ ?
815. बलवन्त सिंह मेहता संविधान सभा के सदस्य थे उनका जन्म कहाँ हुआ ?
816. भवानी अर्जुन खिमजी संविधान सभा के सदस्य थे उनका जन्म कहाँ हुआ ?
817. चिमनभाई चकुभाई शाह संविधान सभा के सदस्य थे उनका जन्म कहां हुआ ?
818. कर्नल गुरुबख्शसिंह बिल्लो को शिवीपुरी मैं बसाने वाले कौन थे ?
819. वौ कौन से जैन राजनेता थे जो 25 वर्ष तक आगरा से लोकसभा सदस्य रहे ?
820. श्री बनारसीदास चतुर्वेदी ने किसे अखिल भारत के चोटी के हिन्दी सेवक कहा था ?
821. अजित प्रसाद जैन किस प्रदेश के राज्य पाल रहे ?
822. उत्तरप्रदेश काँग्रेस कमेटी के अध्यक्ष अजित प्रसाद जैन कब रहे ?
823. अर्जुनलाल सेठी का जन्म कहा हुआ था ?
824. संविधान सभा के सदस्य अजित प्रसाद जी का जन्म कहाँ हुआ था ?
825. बाहुबली और भरत के युद्ध को कौन सा युद्ध कहा गया ?
826. विश्व की मूल लिपी कौन सी है ?
827. अग्निकेशी वातरशना आदि के रूप में किसकी उपासन की गई है ?
828. बात रशना का अर्थ क्या है ?
829. श्री आदिनाथ और श्री महावीर स्वामी जी की सुन्दर मूर्ति किस म्यूजियम में है ?
830. वह कौन सा पुराण है जिसके 47वें अध्याय में ऋषभ देव के पुत्र भरत का भारत कहा गया हो ?
831. ऋषभदेव की इन्द्र ने शिश्नदेव के नाम से उपासना किस वेद में की है ?
832. सिन्धु घाटी की मोहर नं. 3,5 में किस तीर्थंकर का चिन्ह अंकित हे।
833. वह कौन सा इतिहासकार है जिसमें सिंधुघाटी से प्राप्त 3,5 मोहर को ऋषभदेव से संबधित माना हो ?
834. षटकर्मों का उपदेश किस तीर्थंकर ने दिया था ?
835. सम्राट सिकन्दर अपने साथ कौन से मुनि को ले गया था ?
836. सम्राट चन्द्रगुप्त मोर्य कौन से आचार्य का भक्त था ?
837. सम्राट खारबेल ने कहाँ प्राचीन लेख लिखवाया ?
838. उदयगिरि खण्डगिरि की गुफालेख की भाषा कौन सी है ?
839. वह कौन सा सेनापति था जिसने श्रवणबेलगोला की बाहुबली की मूर्ति का निर्माण करवाया ?
840. चित्तौड़ के राजा तेजसिंह की वह कौन सी रानी थी जिसने पार्श्वनाथ का सुन्दर मंदिर बनवाया ?
841. महात्मा गांधी के अध्यात्मक गुरु कौन थे ?
842. होयसलवंश की महादेवी कौन थी ? जिसने श्रवणबेलगोला में समाधि ली हो ?
843. वे कौन से जैनाचार्य थे जिन्हें अमोघवर्ष राष्ट्रकूट वंशी राजा अपना गुरु मानता था ?

844. वे कौन से राज ऋषि हैं जिन्होंने प्रश्नोत्तर रत्नमाला ग्रंथ की रचना की हो ?
845. वे कौन से मुनि हैं जो स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे ?
846. वह कौन से क्षुल्लक जी थे जिन्होंने अपनी एक चादर देश के लिये दान दे दी हो ?
847. वह कौन से क्रान्तिकारी थे जिन्होंने जेल में जिनदेव के दर्शन बिना भोजन नहीं किया ?
848. गढ़ाकोटा में हुए जैन अमर शहीद का नाम क्या है ?
849. दमोह के जैन अमर शहीद कौन है ?
850. मण्डला के जैन अमर शहीद का क्या नाम है ?
851. अमर शहीद मोतीचन्द्र शाह का जन्म कहां हुआ ?
852. अमर शहीद वीर साताप्पा टोपण्णावर का जन्म कहाँ हुआ ?
853. अमर शहीद कुमारी जयावती संघवी का जन्म कहां हुआ ?
854. अमरशहीद नाथालाल शाह का जन्म अहमदाबाद के पास कौन से गांव में हुआ ?
855. अमर शहीद अन्नापत्रा वाले का जन्म कब और कहां हुआ ?
856. अमर शहीद मगनलाल ओसवाल के पिताजी का क्या नाम था ?
857. अमर शहीद भूपाल अणुसपुरे का जन्म कहाँ हुआ था ?
858. अमर शहीद कन्दीलाल जैन का जन्म कहां हुआ ?
859. अमर शहीद मुलायमचंद जैन का जन्म कहां हुआ ?
860. अमर शहीद चौधरी भैयालाल का जन्म कहां हुआ ?
861. अमर शहीद चौथमल भंडारी का जन्म कहां हुआ ?
862. अमर शहीद भूपाल पंडित ने कितने बार जेल यात्रायें की ?
863. अमर शहीद भारमल का जन्म कहां हुआ ?
864. अमर शहीद हरिशचन्द्र दगडोवा का जन्म कहां हुआ ?
865. अमर शहीद लाला हुकुमचंद के पिता का नाम क्या था ?
866. अमर शहीद अमरचंद वांठिया का जन्म कहाँ हुआ ?
867. अमर शहीद फकीरचंद को कितने वर्ष की आयु में फाँसी दी गई ?
868. जैन अमर शहीद कितने हुए है ?
869. श्रीमति अंगूरी देवी स्वतंत्रता सेनानी के पिता का नाम क्या था ?
870. अर्जुनलाल के पिताजी का नाम क्या था ?
871. स्वतंत्रता सेनानी अमृतलाल शास्त्री के पिता का नाम क्या था ?
872. स्वतंत्रता सेनानी अयोध्या प्रसाद का गोयलीयने प्रसिद्ध कौन सी कृति रची ?
873. आयोध्या प्रसाद जी किस ग्रंथमाला के सम्पादक रहे ?
874. वे कौन से स्वतंत्रता संग्राम सेनानी है जो अखबार हाकर से नगर पालिका अध्यक्ष तक बने।
875. मंडी बामोरा के वे कौन से स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे जो कवि भी थे ?
876. जावद म.प्र. से विधानसभा सदस्य रहने वाले स्वतंत्रता सेनानी जैन कौन थे ?
877. अत्याचार कलमबत सहना तुझे कसम ईमान की ये पंक्तियां किस जैन स्वतंत्रता सेनानी ने लिखी ?
878. वह कौन सा जैन महाविद्यालय था जो स्वतंत्रता सेनानियों का गढ़ माना जाता रहा हो ?
879. हिन्दी भाषा को भारतीय नाम देने वाले कौन से विद्वान स्वतंत्रता सेनानी थे ?
880. गढ़कोटा के वे कौन से जैन स्वतंत्रता सेनानी थे जो व्यायामशाला चलाते थे ?
881. राजस्थान के वे कौन से स्वतंत्रता सेनानी थे जो महाधी वक्ता रहे हो ?
882. जैन स्वतंत्रता सेनानी वे कौन थे जिन्होंने 13 वर्ष की उम्र में बलि चढ़ाने का विरोध किया हो ?

883. ललितपुर के वे कौन से प्रसिद्ध कवि हुए हैं जो स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे ?
884. मध्यप्रदेश में पत्रकार पितामह के नाम से प्रसिद्ध कौन से स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे ?
885. कोटा के वे कौन से स्वतंत्रता सेनानी समाजवादी नेता थे जो प्रसिद्ध लेखक और पत्रकार रहे हो ?
886. वे कौन से जैन स्वतंत्रता संग्राम सेनानी रहे हैं जो महामहोपाध्याय की उपाधि से विभूषित थे ?
887. सहारनपुर के वे कौन से स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे जिनका नाम एक प्रसिद्ध पक्षी से जुडा हो ?
888. पाटन के वे कौन से स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे जो राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के मुख्य शिक्षक रहें हो ?
889. नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के निजि चिकित्सक कौन से जैन स्वतंत्रता सेनानी थे ?
890. सागर के वे कौन से स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे जो दमोह से सांसद रहें हो ?
891. उदासीन आश्रम सागर के वे कौन से ब्र. थे जो स्वतंत्रता संग्राम सेनानी रहें हो ?
892. सस्ता साहित्य मण्डल के संस्थापक एवं जैन स्वतंत्रता सेनानी हुए हैं ?
893. आगरा जिले के वे कौन से स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे जो क्षुल्लक पद पर आसीन हुए हों ?
894. वे कौन से प्रसिद्ध पंडित स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे जिनका जन्म महरौनी में हुआ हो ?
895. ब्रह्मचारी पूरनचंद लुहाड़िया का जन्म कहां हुआ ?
896. वो कौन से सिद्धांत शास्त्री हुए हैं जो स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे और सिद्धान्ताचार्य थे ?
897. बीना के वे स्वतंत्रता संग्राम सेनानी रहे हैं जो व्याकरणाचार्य रहें हो ?
898. सिलवानी के वे कौन से स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी जो विधानसभा सदस्य रहें हों ?
899. रीवा के वे कौन से स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे जो ग्राम सेवक रहे हों ?
900. वो कौन से स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी रहें हैं जो राजस्थान के जलियावाला काण्ड से जुडे रहे हो?

हुकुमचंद जी सांवला द्वारा रचित जैन गौरव पुस्तक

901. दुर्विनीत ने किस कथा ग्रंथ का संस्कृत अनुवाद किया ?
902. मुस्कर गंग ने किस धर्म को गंगवाड़ी का राज्य धर्म बनाया था ?
903. महामेघ वाहन खारबेल ने किस नदी के किनारे महाविजय प्रसाद का निर्माण कराया ?
904. महामेघ वाहन खारबेल ने यूनानी किस नरेश को भारत के बाहर खदेड़ा था ?
905. मौर्य सम्राट बिन्दुसार की मृत्यु कब हुई ?
906. सम्राट अशोक का वह कौन सा पुत्र था जो जैन धर्म का अनुयायी था ?
907. कुनाल की करूण कहानी कौन से जैन आचार्यों ने लिखी है ?
908. सम्राट संप्रति मोर्य कब सिंहासन आरूढ़ हुआ ?
909. शाली सुखमोर्य किसका पुत्र था ?
910. मौर्यवंश का अंतिम राजा कौन हुआ ?
911. दशरथ मोर्य की हत्या किसने की थी ?
912. कलिंग देश में किस तीर्थंकर का समवशरण आया था ?
913. अठारहवें तीर्थं की पारणा कहाँ हुई ?
914. महामेघ वाहन खारबेल का जन्म कब हुआ ?
915. कोलतुंग चोल ने अपने राज्य में किस पदार्थ का आयात बन्द कराया था ?
916. विष्णुवर्धन कौन से वंश का राजा था ?
917. विष्णुवर्धन होयसल की पट्टमहादेवी का क्या नाम था जिसने समाधि ली हो ?
918. राजा शांतिवर्म के पिता का नाम क्या था ?
919. राजा राजेन्द्रचोल के गुरु कौन थे ?
920. राजा भोज देव परमार किसका पुत्र था ?

921. राजाभोज देव के राज्यकाल में न्याय का कौन सा ग्रंथ लिखा गया ?
922. राजाभोज देव परमार के जैन सेनापति का क्या नाम था ?
923. महारानी मृगावती ने किससे दीक्षा ली थी ?
924. वीर विक्रमादित्य का दूसरा नाम क्या था ?
925. दद्दिग और माधव ने कौन से राजवंश की स्थापना की ?
926. मयूर पिच्छिका को किसने अपना राज्य चिन्ह बनाया था ?
927. छोटे भाई माधव ने कितने वर्ष राज्य किया ?
928. भगवान महावीर स्वामी के मातामाह नाना का नाम क्या था ?
929. महाराजा चेट किस गणतंत्र आत्मक संघ के अध्यक्ष थे ?
930. भगवान महावीर स्वामी की नानी का नाम क्या था ?
931. महाराजा चेटक के बज्जी संघ में कितने राजा उपाधि धारी थे ?
932. वह कौन सा राजा था जिसने भगवान महावीर स्वामी की देहाकार स्वर्णमयी प्रतिमा प्रतिष्ठित कराई हो ?
933. महाराज उद्यायन के उस पुत्र का नाम क्या था जिसने मुनि दीक्षा ली हो ?
934. महाराजा बिम्बसार का दूसरा नाम कौन सा था ?
935. महाराजा चेटक किस नगरी का राजा थे ?
936. महाराजा श्रेणिक किस वंश के राजा थे ?
937. महाराजा बिम्बसार ने भगवान महावीर स्वामी से कितने प्रश्न किये थे ?
938. महाराजा श्रेणिक की वह कौन सी रानी है जो महाराजा चेट की पुत्री थी ?
939. भगवान महावीर स्वामी की मौसी का नाम क्या था जो राजा श्रेणिक की महारानी हो ?
940. चिलाती पुत्र ने किससे दीक्षा ली थी ?
941. चन्द्रगुप्त के राजनैतिक गुरु का नाम क्या था ?
942. मंत्री चाणक्य का मूल नाम कौन सा था ?
943. चन्द्रगुप्त मौर्य ने किससे दीक्षा ली ?
944. चन्द्रगुप्त मौर्य ने किस राज्यवंश का उच्छेद किया था ?
945. धनानन्द की किस पुत्री के साथ चन्द्रगुप्त का विवाह हुआ था ?
946. शैल्युकस की किस पुत्री के साथ चन्द्रगुप्त का विवाह हुआ था ?
947. चन्द्रगुप्त मौर्य की समाधि किस तीर्थ पर हुई ?
948. बिन्दुसार चन्द्रगुप्त की किस रानी का पुत्र था ?
949. बिन्दुसार ने किस तीर्थ पर जैन मंदिरों का निर्माण कराया ?
950. जैन गौरव ग्रंथ का प्रकाशन कहाँ से हुआ ?
951. बिन्दुसार कब सिंहासन आरूढ़ हुआ ?
952. कुब्ज विष्णुवर्धन के राज्यकाल में कौन से जैन आयुर्वेदाचार्य हुये ?
953. कुब्ज विष्णुवर्धन चालुक्य के राज्यकाल में कौन सा आयुर्वेद ग्रंथ रचा गया ?
954. अंगराज नरेश द्वितीय की पत्नी का क्या नाम था ?
955. महाराजा विमलादित्य चालुक्य कब हुआ ?
956. गोविन्द तृतीय जगत्तुंग के कार्यकाल में कौन से जैनाचार्य हुये हैं ?
957. आचार्य जिनसेन के गुरु कौन थे ?
958. अमोघवर्ष प्रथम के धर्मगुरु और राजगुरु कौन थे ?
959. आचार्य जिनसेन ने जयधवला में कितने हजार श्लोक लिखें ?

960. सम्राट अमोघवर्ष प्रथम के पिता का नाम क्या था ?
961. आचार्य जिनसेन ने कोन से पुराण ग्रंथ की रचना की ?
962. तृतीय माधव ने किसके साथ विवाह किया ?
963. महाराजा माधव तृतीय का उत्तराधिकारी कौन हुआ ?
964. अवनीत गंग के पुत्र का नाम क्या था ?
965. शिवमार प्रथम नरेश के जैन गुरु कौन थे ?
966. शिवमार नरेश का राज्यकाल कब से कब तक रहा ?
967. शिवमार प्रथम के पुत्र का नाम क्या था ?
968. शिवमार प्रथम के पोते का नाम क्या था जिसने राजगद्दी संभाली हो ?
969. श्री पुरुष मुत्तरस का काल क्या है ?
970. शिवमार द्वितीय किसका पुत्र था ?
971. गंगवंशीय नरेश शिवमार द्वितीय कितनी बार राज्य च्युत हुआ ?
972. गंगवंशी शिवमार द्वितीय कितने वर्ष राष्ट कूटों के बंदी गृह में रहा ?
973. राचमल्ल सत्यवाक्य का राज्यकाल कब से कब तक रहा ?
974. ऐरेय गंग के पुत्र का क्या नाम था ?
975. राचमल्ल सप्तवाक्य द्वितीय ने सर्वनन्दि देव को किस इलाके के बारह ग्राम प्रदान किये थे ?
976. गंगवंश का अंतिम राजा कौन हुआ ?
977. कदम्ब वंश किस धर्म का अनुयायी था ?
978. काकुस्थ वर्मन के भाई का क्या नाम था ?
979. मृगेश वर्मन किसका पुत्र था ?
980. काकुस्थ वर्मन के पुत्र का क्या नाम था ?
981. रवि वर्मन कदम्ब की माँ का नाम क्या था ?
982. रवि वर्मन कदम्ब के पिता का नाम क्या था ?
983. रवि वर्मन कदम्ब का राज्यकाल कब से कब तक था ?
984. रविवर्मन के चाचा का नाम क्या था ?
985. रविवर्मन के कांची के किस नरेश को परास्त किया था ?
986. रविवर्मन के पुत्र का नाम क्या था ?
987. कदम्ब वंश का अंतिम शासक कौन हुआ ?
988. वातापी के चालुक्य सम्राट पुलकेशी के छोटे भाई का नाम क्या था ?
989. चालुक्यों ने आंध्रप्रदेश में कितने वर्ष राज्य किया ?
990. आत्मानुशासन ग्रंथ के रचयिता कौन से आचार्य हुये हैं ?
991. सम्राट कृष्ण द्वितीय शुभतुंग के विद्यागुरु कौन थे ?
992. इन्द्र तृतीय के पौत्र का क्या नाम था ?
993. महाराज उदायन की पट्टरानी का क्या नाम था ?
994. चामुण्डराय सेनापति ने कौन से भगवान की मूर्ति का निर्माण कराया था ?
995. वह कौन सा सेनापति जो दोनों हाथों से तलवार चलाता था ?
996. वह कौन सा सेनापति था जो युद्ध के बाद सामायिक करता था ?
997. क्रांतिकारी अमर शहीद लाला हुकुमचंद का जन्म कब हुआ ?
998. अमर शहीद साबूलाल जैन का जन्म कहां हुआ ?
999. वह कौन से एलक जी हैं जो अमर शहीद साबूलाल जी के रिश्तेदार थे एवं मुहल्ले में रहते थे ?
1000. अमर शहीद उदयचंद जैन का जन्म कहां हुआ ?

दिशा बोध

निर्लोभता

1. जो पुरुष सन्मार्ग छोड़कर दूसरे की सम्पत्ति लेना चाहता है, उसकी दुष्टता बढ़ती जायेगी और उसका परिवार क्षीण हो जायेगा।
2. जो पुरुष बुराई से विमुख रहते हैं, वे लोभ नहीं करते और न ही दुष्कर्मों की ओर ही प्रवृत्त होते हैं।
3. जो मनुष्य अन्य लोगों को सुखी देखना चाहते हैं, वे छोटे-मोटे सुखों का लोभ नहीं करते, और न अनीति का ही काम करते हैं।
4. जिन्होंने अपनी पाँचों इन्द्रियों को वश में कर लिया है और जिनकी दृष्टि विशाल है, वे यह कहकर दूसरों की वस्तुओं की कामना नहीं करते कि - ''ओ हो ! हमें इनकी अपेक्षा नहीं है।''
5. वह बुद्धिमान और समझदार मन किस काम का, जो लालच में फँस जाता है और अविचार के कामों के लिए उतारू होता है।
6. वे लोग भी, जो सुयश के भूखे हैं , और सन्मार्ग पर चलते हैं, नष्ट हो जायेंगे; यदि वे धन के चक्कर में पड़कर कोई कुचक्र रचेंगे तो।
7. लालच द्वारा एकत्र किये हुए धन की कामना मत करो, क्योंकि भोगने के समय उसका फल तीखा होगा।
8. यदि तुम चाहते हो कि हमारी सम्पत्ति कम न हो, तो तुम अपने पड़ौसी के धन-वैभव को हड़पने की कामना मत करो।
9. जो बुद्धिमान मनुष्य न्याय की बात को समझता है और दूसरों की वस्तुओं को लेना नहीं चाहता, लक्ष्मी उसे ढूँढती हुई उसके घर चली जाती है क्योंकि वह श्रेष्ठता को जानती है।
10. दूरदर्शिता हीन लालच नाश का कारण होता है; पर जो यह कहता है कि 'मुझे किसी वस्तु की आकांक्षा ही नहीं', उस तृष्णा विजयी की 'महत्ता' सर्व विजयी होती है।

कहानी

गौरव-गाथा

लेखकः 105 एलक श्री सिद्धांतसागर जी महाराज

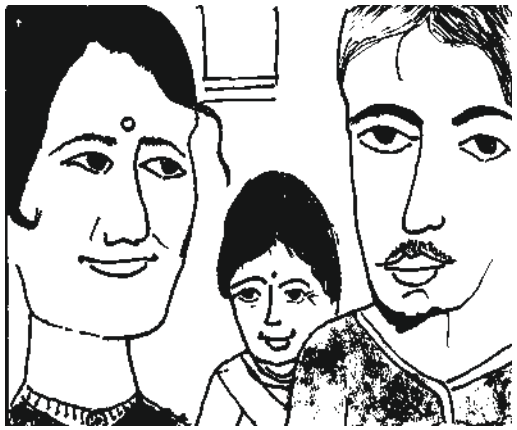

13 अक्टूबर की शाम गुजर चुकी थी। अंधेरा आसमान में छा चुका था, छतों पर सुहागने अपने अपने करवा लेकर जा चुकी थीं, और गाथा अपने पति का इंतजार कर रही थीं। गाथा की सहेलियाँ व्यंग्यबाण गाथा पर चला रही थीं। क्यूँ गाथा तुम्हारे गौरव जी कहाँ गाये ? गाथा ने भी मौन धारण करके कुछ नही बोलना ही उचित समझा क्योंकि चारों ओर छतों पर बहुएँ अपने-अपने पति के साथ हंसी-मजाक चुहल कर रहीं थी। गाथा किस-किस को जबाब देती। परन्तु वह बार-बार नीचे झांककर गौरव की प्रतिक्षा कर रही थी। छत पर लगे झूले पर गाथा बैठ गई। अपनी ठुडी पर हाथ लगाकर तर्जनी से अपने कान की बाली को घुमा रहा थी। और सोच रही थी कि रोज तो वो नौ बजे तक आ ही जाते थे। पर आज करवाचौथ के दिन मेरे धैर्य की परीक्षा लेना क्यों अच्छा लगा। अब मैं किस-किस को जबाब दूँ।

गाथा ने अपना मोबाइल उठाया और गौरव को फोन लगाया किन्तु कभी फोन लग जाता तो उठता नहीं और कभी फोन उठ भी जाये तो नेटवर्क चला जाता था। बुदबुदा कर गाथा कहने लगी। कई लोग सही कहते हैं। बीएसएनएल मतलब बाहर से नहीं लगता है, भीतर से नहीं लगता, भाभी से नहीं लगता है, भाई से नहीं लगता है। और गुस्से में उसने अपने मोबाईल को झूले पर पटकते हुये कहा बेदर्दी गौरव आज मुझे पता लगा कि तुम्हारे दूर रहने की तड़पन क्या हो सकती है। मेरी पड़ोसने आज जले पर नमक छिड़ककर बार-बार पूछकर मेरे मजे ले रही हैं। वे नहीं जानती की मेरे जीवन में मैंने कभी करवाचौथ को मनाया ही नहीं, मैं जानती हूँ कि एक पत्नि अपने पति की रक्षा के लिये साल में चार उपवास कर लेती है। परन्तु पतिदेव क्या पत्नि की रक्षा के लिये एक भी उपवास करते हैं। खैर छोड़ो आज भी कहीं

निश्चित तौर पर गौरव किसी न किसी काम में बहुत व्यस्त हो गये होंगे। उनकी कोई न कोई मजबूरी अवश्य होगी अन्यथा मैं दस साल से देख रही हूँ कि वे करवचौथ को कितना भी काम क्यों न हो तो भी शाम तो मेरे साथ ही बिताते थे। खैर कोई बात नहीं आज इंतजार की घड़ियाँ ही मेरे प्रेम की सही परीक्षा ले रही हैं।

थकी माँदी गाथा झूले पर लेट गई ठंडी ठंडी हवा ने उसकी आँखों में कब नींद समा दी उसे मालूम ही नहीं चला कब चांद आसमान पर खिलखिला कर हंसने लगा अपनी किरणों से गाथा की पलकों सहलाने लगा उसे पता ही नहीं चला वह तो निद्रा देवी की गोद में समा चुकी थी। ऐसी नींद जिसने विरह की वेदना को हर लिया था। जब चारों ओर सन्नाटा छा चुका था। सभी दम्पत्ति निंद्रा में मग्न हो चुके थे। तभी अचानक गौरव की गाड़ी का हार्न बजने लगा ध्वनि को तीव्रता बढ़ रही थी। झूले से नीचे उतरकर शनैः शनैः छत की मुडेर की ओर गतिमान हुइ नीचे झांका देखा स्कॉपियों खडी थी हार्न बज रहा था। गाथा ने कहां क्यों कहाँ रहे अभी तक अरे सुबह हो जाने देते फिर आते क्यों इतनी जल्दी आ गये आज मैं दरवाजा नहीं खोलूंगी आप या तो गाड़ी में ही सो जाइए या अपनी मम्मी को जगाईये। जब दोनों गौरव गाथा में बहस चल रही थी तब सुनीता की भी नींद खुल गई। सुनीता ने डपटते हुये कहा। ये घर है कोई होटल नहीं कि आप जब चाहे चले आये। गौरव ने चुपचाप अपनी गाड़ी गैरेज में लगायी और सुनीता के दरवाजे खोलने के बाद वह अपने कक्ष में चला गया। वह जानता था कि आज सुनीता की बमबार्डिंग सहन करना पड़ेगी।

गाथा ने अपने कक्ष का दरवाजा बन्द किया और धीरे से बोली आज मैंने एक कहानी पढ़ी थी जिसमें एक शिवभूति नाम के व्यक्ति कि आदत हर रोज देर रात आने की पड़ चुकी थी। उसकी इस आदत से पत्नि परेशान हो चुकी थी और वह अपने पति की शिकायत सास से किया करती थी एक दिन उसकी सास ने कहा बेटा तुम सो जाओ आज मैं जागती हूँ। और जैसे ही शिवभूति घर में प्रवेश करने लगा तो उसकी माँ ने झंड़ककर उससे कह दिया कि इस घर में तुम्हें कोई जगह नहीं है। इस घर का दरवाजा नहीं खुल सकता है। जिस घर का दरवाजा खुला हो उस घर में जाओ रात बिताओ। गाथा इतना कहने के बाद चुप हो गई। गौरव ने धीरे से कहा फिर क्या हुआ सुनाते जाओ चुप क्यों हो गई। गाथा ने कहा आगे सुनाऊँ तो सुनो, रात में भटकता हुआ शिवभूति साधुओं के खुले उपाश्रय के द्वार में प्रवेश कर गया। रात उपाश्रय में बिताई सुबह उठा तो वह गुरु शरण में चला गया और उसने श्वेतांबर गुरुदेव से दीक्षा ले ली और वह श्वेतांबर मुनि बन गया।

गौरव ने कहा अच्छा पर में श्वेतांबर मुनि बनने वाला नहीं हूँ। मैं तो तेरे कच्चे धागे से बंधा

हुआ हूँ। मैं बनूंगा तो दिगम्बर साधु बनुगा। गाथा ने कहा आगे की कहानी भी तो सुनो वह शिवभूति भी दिगम्बर साधु बन गया था।

एक दिन वह अपनी नगरी गुरुदेव के साथ आया और वहां के राजा सहस्त्रमल ने उसके सम्मान में रत्न जड़ित कम्बल भेंट किया। जिसे शिवभूति ने ग्रहण कर लिया। और उस कम्बल से उसे बहुत मोह हो गया। एक दिन अवसर पाकर के उनके गुरुदेव ने उस कम्बल के टुकड़े-टुकड़े कर दिये और सभी साधुओं को परिमार्जन करने के लिये दे दिये। अपने कम्बल के टुकड़े होने के बाद शिवभूति बहुत दुखी हुआ और उसने संघस्थ साधुओं के समक्ष अपनी वेदना व्यक्त की तो संघस्थ स्थिवीर साधुओं ने शिवभूति को समझाया कि पहले तो साधु दिगम्बर ही होते थे। नग्नरूप से साधना करते थे। क्योंकि जैन श्रमण परिग्रह मुक्त होकर के साधना करते हैं। ये तो कलि काल का प्रभाव है, कि हम लोग वस्त्र धारण करके साधना कर रहे हैं। तो शिवभूति ने अपने स्थिवीर साधु का सम्बोधन सुन कर निश्चय कर लिया की मैं भी दिगम्बर रहकर साधना करूँगा। उसके इस निर्णय को संघस्थ साधुओं ने समय के प्रतिकूल बताया। पर वह नहीं माना और वह दिगम्बर रूप धारण करके मोक्ष मार्ग की साधना करने लगा।

गौरव ने गाथा से पूछा कि आगे फिर क्या हुआ। तो गाथा ने कहा हुआ क्या उस पुस्तक में लिखा था बस इस शिवभूति से दिगम्बर पंथ को शुरुआत हुई। गौरव ने कहा तुम्हें अभी और पढ़ना पढ़ेगा। मैंने भी कुण्डलपुर की लायब्रेरी में भद्रबाहु चरित्र एक ग्रंथ को एक बैठक में पढ़ा था। उस ग्रंथ का सारांश यह है कि आचार्य भद्राबाहु एक गृहस्थ के यहाँ आहार करने गये उस गृहस्थ के झूले में झूल रहे बच्चे ने संकेत दिया कि आगामी समय में बारह वर्ष का अकाल पढ़ने वाला है। इस संकेत से निमित्त ज्ञान लगाकर पूज्य भद्रबाहु स्वामी ने निश्चय कर लिया की अब हमें संघ सहित अकाल की भीषणता से बचने के लिये दक्षिण भारत की ओर जाना पड़ेगा। अन्यथा साधना में शिथिलता आयेगी और संयम पथ से कोई भी साधक विचलित हो सकेगा। इसलिये उन्होंने अपने समस्त संघस्थ श्रमणों को आदेश दिया कि वे सब संघ के साथ दक्षिण की ओर विहार करेंगे।

आचार्य श्री का आदेश का समाचार श्रेष्ठियों और श्रावकों तक पहुँचा तो उनमें हडकंप मच गया। वे सब आचार्य श्री के पास निवेदन लेकर आये कि कुछ संघ को यहाँ पर रोक दिया जाये। अन्यथा बारह वर्ष में उत्तर भारत भीषण अकाल की चपेट में आने से शिथिलाचार तो नहीं आयेगा। पर धर्म से शून्य हो जायेगा। और बौद्धों का प्रभाव एक छत्र हो जायेगा। आचार्य भद्रबाहु ने अपने आदेश में कोई भी परिवर्तन नहीं किया। ओर सब साधु मिलकर संघ सहित दक्षिण भारत को और विहार कर गये। लेकिन उत्तर भार में वही हुआ जिसकी

आचार्य भद्रबाहु को आशंका थी। घटना दर घटना समय बीतने के बाद श्वेतांबर जैन मत चलन में आ गया।

गाथा ने कहा इसका मतलब यह हुआ कि आपने भी कुछ पढ़ा है। पर मैं इस किसी विवाद में उलझना नहीं चाहती। मैं तो सिर्फ इतना कहना चाहती हूँ। कि शिवभूति की माँ में और तुम्हारी माँ में कितना अंतर है। गौरव ने कहा नहीं मैं ये नही मानता हूँ कि एक माँ अपने बेटे को मात्र देर से आने पर इस तरह घर से बाहर निकाल सकती है। मेरी माँ जानती है कि मैं किसी तरीके से आवारागिर्दी नहीं कर सकता हूँ। मैं किसी जरूरी काम से ही रूकता हूँ। कुण्डलपुर में इतना बड़ा मंदिर बन रहा है। जिसकी सारी जिम्मेदारी मैं और रेशू ही तो उठा रहे हैं। इसमें भी कितनी समस्यायें आती हैं कभी पत्थर समय पर नहीं आता हैं तो कभी कारीगरों की हड़ताल हो जाती है। तो कभी जनरेटर खराब हो जाता है। आज जनरेटर खराब हुआ उसे सुधरवाने के लिये मुझे मैकेनिक कुण्डलपुर ले जाना पड़ा। एक मैकेनिक से जब ठीक नहीं हुआ तो दूसरा मैकेनिक बुलवाया अब यदि आज जनरेटर ठीक नहीं होगा। तो कल मंदिर का काम रूक जाता फिर आचार्य श्री के सामने मैं क्या जबाब देता। इसीलिये मुझे बिलंब हुआ है। गाथा इतना सहयोग तो तुम्हें भी देना होगा। गाथा ने कहा मैं धार्मिक कार्य में कभी भी बाधक नहीं बन सकती हूँ। परन्तु यह भी तो बताओ कि मैं अपनी सहेलियों के ताने कैसे सहन करूँ ? क्योंकि जब करवाचौथ को शुभ घड़ी में सब सहेलियाँ अपने-अपने पतियों के साथ मौज मस्ती कर रहीं थी और मैं अकेली छत पर सिर्फ चुहल कदमी करती रही। मेरी सब सहेलियां यह पूछती रही कि क्या बात है। गाथा आज तुम अकेली ही हो मैं मानती हूँ कि तुम लोग जैन हो इसलिये करवाचौथ नहीं मनाते परन्तु दोंनो मिलकर साथ तो उठ बैठ सकते हो।

गौरव ने कहा देखो गाथा मैं सदैव 10 बजे के पहले हर हालत में घर जा आता हूँ। क्योंकि मेरे मम्मी पापा ने मुझे बचपन से ही संस्कार दिये कि, बेटा किसी भी हाल में हो 10 बजे के पहले घर में प्रवेश कर जाना चाहिये। मैंने भी इस नियम का अन्तर मन से पालन किया है। अच्छा तुम ही बताओ कि मैं कब 10 बजे के बाद घर आया हूँ। साल में एक, दो, दिन तो ऐसे होंगे कि जब में किसी धर्म के कार्य से ही कुण्डलपुर में ही व्यस्त हो जाता हूँ मैं जानता हूँ कि गाथा बिना मम्मी को बतायें ही दरवाजा खोल देगी। पर तूने आज गजब ही ढ़ा दिया मम्मी को बताकर मेरे ऊपर डाँट पड़वाने की तुमने ठान ही ली थी।

गाथा ने कहा सचमुच में मैंने ठान ही लिया था कि आज आपको मम्मी की अदालत में पेश करना ही है। पर आप मुझे क्षमा जरूर करेंगे। और इस तकरार को यही पर विराम दे देंगे। क्षमा आप जैसे वीरों का आभूषण है। आप क्षमा करें और भूल जायें हम दोनों गौरव गाथा बन जायें।

हमारे गौरव

अमर शहीद कन्धीलाल जैन

मध्यप्रदेश में गांधी जी के नमक सत्याग्रह के साथ-साथ जंगल सत्याग्रह भी प्रारंभ हुआ था (म.प्र) में नमक बनाने का कोई स्थान नहीं अतः यहाँ जनता ने जंगल कानून तोड़कर नमक कानून तोड़ा था। इसी कानून को तोड़ने वाले अमर शहीद कन्धीलाल जैन का जन्म 1894 में सिलौड़ी (जबलपुर मध्यप्रदेश) कस्बे के सेठ मटरूलाल के यहाँ हुआ था। अन्य लोगों के साथ-साथ कन्धीलाल भी झण्डा उठाकर गांव-गांव घूमे और जंगल कानून भंग किया। पुलिस ने इन लोगों पर लाटियों और कोड़ों से प्रहार किये, पर गिरफ्तार किसी को भी नहीं किया इधर जनता ने विदेशी कपड़ों की होली जलाई। सिलौड़ी और आस-पास के लोगों ने पुलिस का सामाजिक बहिष्कार किया। जनता ने अंग्रेजी सिक्के (कल्दार) को मुद्रा से इंकार कर दिया और सिलौड़ी मण्डल को पूर्ण स्वतंत्र घोषित कर दिया। गांव की पुलिस चौकी के सिपाही भाग खड़े हुये ओर आला अफसरों को सूचना दी गई।

अराजकता को दबाने के लिये जिले के अधिकारियों ने एस.डी.ओ छत्तर सिंह को विशेष पुलिस बल के साथ भेजा और कोड़े मारने तथा लाठी चार्ज का अधिकार उसे दिया। छत्तर सिंह 12 सितम्बर 1930 को सिलौड़ी पहुँचा और ग्राम में मार्शल लॉ लागू कर दिया। खुले आम जनता को मारा गया और तरह-तरह की धमकियां दी गई। चुनौती भरे स्वर में छत्तर सिंह ने कहा कि है कोई माई का लाल जो सत्याग्रह करने की कोशिश करे कन्धीलाल ने इस चुनौती को स्वीकार किया। अपनी गृहस्थी और अबोध बच्चों की परवाह न कर उन्होंने 15 सितम्बर को संकीर्तिन समापन के जुलूस का नेतृत्व किया। वे जुलूस के आगे-आगे नारे लगाते चलते रहे।

कविता

मैं निर्दोषी (हाइकू)

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज

मैं निर्दोषी हूँ
प्रभु ने देखा वैसा
किया करता

तुम से मेरे
कर्म कटे मुझसे
तुम्हें क्या मिला

हमसे कोई
दुखी नहीं हो बस
यही सेवा है

योग का क्षेत्र
अंतर्राष्ट्रीय नहीं
अंतजर्गत है

अंगुलिबेढ़ा के दर्द से पार होने के उपाय

❊ जिनेन्द्र कुमार जैन (इन्दौर) मो. 9977051810 ❊

हाथ की अंगुली के अग्रमण या मध्यभाग और नाखून के पास प्रदाह होकर बड़ी भारी जलन और जोर का दर्द होना और उसमें पीव भर जाना अंगुलिबेढ़ा या विसहरी या नौघेरा तथा अंग्रेजी में ह्रिटली या फिलॉन (Whitlower Felon) कहते हैं। यह तीन प्रकार का होता है

1. चर्म संबंधी (Cutaneours) 2. चमड़ी के नीचे (Sub-Cutancous) 3. पेशीय संबंधी (Tendinous)

1. चर्म संबंधी- जब अंगुली की सिर्फ ऊपर की चमड़ी प्रदाहित होती है जिसमें जलन व मामुली दर्द होता है और एक फफोला सा होकर उसमें पानी जैसा पनीला खून जम जाता है। यह प्राथमिक उपचार से ठीक हो जाता है।

2. चमड़ी के नीचे- यह अंगुली के अग्रभाग में नाखून की जड़ में होता है जिससे नाखून और चारों तरफ के टिशुओं में तीव्र प्रदाह, दर्द और जलन होती है, रोगाक्रान्त स्थान गम हो जाता है, जोर की टीस होती है, प्रदाह फैलकर ऊपर की ओर चला जाता है। अंगुली में पीव बनकर पक जाती है। दर्द फैलकर हाथों तक चला जाता है। यह भी प्राथमिक उपचार व चिकित्सा से ठीक हो जाता है।

3. पेशीय संबंधी- यह ही वास्तविक रोग है और इसी का प्रदाह और दर्द बहुत ही कष्टदायक होता है, इसमें अंगुली की पेशीयाँ और उसके आवरण में प्रदाह होता है जो कभी-कभी अंगुली की भीतरी हड्डी व उसके परदा (पेरियॉस्टियम) और अंगुली के अग्रभाग के अलावा बीच की हड्डी व जोड तक फैल जाता है। जिसके कारण सारी बांह और बगल की गांठे सूज जाती है।

कारण- अंगुलियों में कांटा, पिन तीखी चीजें चुभ जाने से, चोट लगने से, जल जाने से, नाखुन काटने में असावधानी, नाखून के पास संक्रमण होने तीखे हानिकारक अम्लीय रसायन व पाउडर, सफाई में उपयोग होने वाले तीव्र रसायनों का खुले हाथों से उपयोग करने, किसी तरह शरीर का रक्त विषाक्त आदि इस रोग के प्रमुख कारण हैं।

लक्षण- प्रदाह के कारण तेज बुखार, जबरदस्त दर्द और बैचेनी होना, एक तरह की भीषण अव्यक्त दर्द और जलन होना, हाथ की हथेली लाल गरम होकर उल्टी तरफ फूल जाना, हाथ नीचे करने से दर्द बढ़ना, रोगी एक मिनिट स्थिर नहीं रह सकता, कभी-कभी तो चिल्ला उठता है व रो देता है, रोगी दूसरे हाथ से अंगुली की जड़ मसलकर दर्द घटाने की कोशिश करता रहता है।

सावधानियाँ- नाखूनों को संक्रमण से बचाने के लिये नाखूनों और आसपास की त्वचा साफ सूखी रखना, अंगुली में कांटा पिन व किसी तीखी चीजों लगने से बचाव करना व हानिकरक तेज रसायनों आदि का उपयोग दस्ताने पहन कर करना, हानिकारक वासी भोजन विषाक्त पदार्थों का नहीं खाना चाहिये।

दुष्परिणाम - 1. समय पर उपचार न करने व अनदेखी करने से अंगुली में पीव और दूषित पदार्थ जल्द बाहर नहीं निकलने से भीतर से भीतर सड़ जाने से अंगुली विकृत हो सकती है।

2. अंगुली के दोनों और डिजिटेल घमनी रहती है उसके कट जाने पर अधिक रक्तस्त्राव हो सकता है।

3. अनदेखी करने से कभी-कभी कैंसर होने का कारण भी बन सकता है। चिकित्सा प्रदाह व जलन शुरु होने ही गरम पानी में थोड़ा सा नमक मिलाकर अंगुली डुबाकर रखने से आराम मिलता है यदि गरम पानी सहन न होवे तो ठंडे पानी में थोड़ा सा नौसादार मिलाकर पट्टी भिगोकर अंगुली पर लपेटे, जब पट्टी सूख जाये या गरम हो तो पुनः इसी घोल से गीला करना चाहिये आराम मिल जाता है।

4. अंगुली व नाखून पक जाने पर अरंडी के बीज दूध के साथ पीस करके पुलटिस से सिकाई करने से आराम हो जाता है। होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति में इस रोग का प्रभावी उपचार संभव है जिसमें रोग की प्राथमिक अवस्था में डायस्कोरिया, आइरिस बर्स के मदर चिंटर के बाहरी प्रयोग से दर्द ठीक हो जाता है। रोग की तीव्रता बढ़ने नाखुन के नीचे हिस्से में सूजन, नाखुन मांस में धस जाना, पीप जम जाना व हड्डी में घाव व सड़ने लगने पर साइलिसिया, नाइट्रिकएसिड माइरिस्टिका से विफेरा, एसिड फ्लोरिक, हिपर सल्फ, कैलकेरिया सल्फ आदि का उपयोग किया जाता है। ये औषधियाँ भाग जानकारी के लिये दी गई हैं उपचार पूर्व कुशल, समर्पित चिकित्सक से परामर्श व इलाज कराना चाहिये। अनदेखी असावधानी से नहीं पकता है तब अस्त्र-चिकित्सा (ऑपरेशन) ही विकल्प रहता है।

अंगुलि बेढ़ा एक भीषण अव्यक्त दर्द होता है जिसका उपयुक्त समय पर उपचार से दर्द से पार होकर स्वस्थ निरोगी जीवन प्राप्त कर सकते हैं।

एमबीबीएस की पढ़ाई होगी अब हिंदी माध्यम से

आचार्य श्री जी का हिंदी भाषा अभियान अब दिखा धरातल पर

म.प्र. के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान को प्रबल इच्छा शक्ति के चलते म.प्र. में अब एमबीबीएस की पढ़ाई हिन्दी माध्यम से करने की न केवल घोषणा की गई बल्कि अध्ययन हेतु कोर्स पुस्तकों का विमोचन भी केन्द्रिय गृह मंत्री अमित शाह के हाथों सम्पन्न हुआ। सूत्रों के अनुसार विगत 5 वर्षों में जैनाचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के दर्शनार्थ महामहिम राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला जी के अलावा कई केन्द्रीय मंत्रीगण एवं म.प्र. के मुख्यमंत्री पधारे आचार्य श्री जी ने सदैव चिकित्सा, तकनीकी एवं न्यायलयीन कार्यवाही/फैसलों में मातृभाषा हिन्दी माध्यम से किये जाने हेतु चर्चा की थी। शिवराज सिंह को आचार्य श्री जी का परम भक्त माना जाता है ऐसे में लंबे समय से उनके मन में इसे अमली जामा पहनाने की भावना बलवती थी जो आज पूर्ण हुई। आने वाले समय में तकनीकी शिक्षा भी हिन्दी माध्यम से ही शुरु करने की बात कही। इस प्रकारर भारत में एमबीबीएस की पढ़ाई हिंदी माध्यम से कराने वाला म.प्र. पहला राज्य बन गया है। अल्प संख्यक प्रकोष्ठ दिगम्बर जैन महासमिति के राष्ट्रीय चेयरमेन अनिल बड़कुर, प्रकाश जैन पत्रकार, मुकेश जैन, नीरज जैन, शुभम जैन, विक्की जेन, शैलेन्द्र जैन, नीटू भैया, सहित कई वरिष्ठजनों ने सरकार के इस सराहनीय फैसलें की प्रशंसा कर देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, गृहमंत्री अमित शाह, मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान, शिक्षा मंत्री एवं इस योजना से जुड़े सभी नेता गण या अधिकारियो का आभार व्यक्त किया गया।

हास्य तरंग

1. कर्ज से दवा व्यक्ति भगवान से प्रार्थना करता है, भगवान मुझे उठा ले इस महंगाई के जमाने में कर्ज नहीं उतार सकता हूँ। लगातार प्रार्थना करते हुये एक काली छाया भैंसे की सवारी आती दिखी व्यक्ति पूंछता है आप कौन? काली छाया मैं यमराज तुम्हें लेने आया हूँ। व्यक्ति क्यों मजाक करते हो? इसके पहिले कई दिनों से लक्ष्मी जी को पुकार रहा था वे तो प्रकट नहीं हुई। युवराज बोले वे पिछले कई महीनों से देश से भगोडे धनवान व्यक्तियों के साथ विदेशी यात्रा पर गई है।

2. मरीज-डॉ. से पूंछता है यह रेडक्रास चिन्ह का क्या मतलब है, पास ही सांसे भर रहे मरीज ने बताया खड़ा होकर अस्पताल आओ और वापिस लेट कर जाओ।

3. सेठी जी ने मकान बचेने के लिये प्रॉपर्टी ब्रोकर्स से बात तय कर ली किन्तु दूसरे दिन उन्होंने मकान बेचने से प्रापर्टी ब्रोकर्स से मना कर दिया। जिसका कारण उन्होंने बताया कि आज जो मकान बेचने का विज्ञापन छपा है, जिसे पढ़कर मुझे मालूम पड़ा कि मेरे मकान में इतनी सारी खूबियाँ है।

4. मालबिन-नई नौकरानी से पूंछती है कि तुमने बड़कुल जी के यहाँ काम किया था इसका तुम्हारे पास क्या सबूत है। नौकरानी - जी उनके यहां के कई कीमती सामान मेरे पास है।

5. धर्मचंद (अपनी पत्नी से)- सुनो आज मैंने दुनिया का सबसे बड़ा मूर्ख व्यक्ति देखा है। पत्नी झल्लाते हुये दिवास पर लगे आइने के सामने खड़े हुये थे क्या?

6. भावित को घर पर आये मेहमान ने समझाया बेटा जब भी खांसी छीके आये तो मुंह के आगे हाथ या रूमाल रख लिया करो। भावित दादा जी फिक्र की कोई बात नहीं मेरे दांत आपकी तरह नकली नहीं है।

संकलनः जिनेन्द्र कुमार जैन, गौरीनगर

संस्कार खेल

शरीर विकास के कुछ खेल

✲ गुरु शिष्य

खिलाड़ियों की संख्या- 15-20

खेल वर्ग- दो दलों का खेल

खेल विधि- 15-20 संख्या के दो दलों की अलग-अलग पहचान होगी। दोनों एक-एक स्वयं सेवक को गुरु बनाकर रहेंगे। दोनों अपने-अपने क्षेत्र के छोटे मंडल में बैठाएंगे। खेल प्रारंभ होने पर सभी मैदान में फैलाकर दूसरे दलवालों को बलपूर्वक उठाकर अपने गुरु के पास लायेंगे, गुरु उनके सिर पर हाथ रखकर उन्हें अपना चोला बना लेगा। ऐसा सभी चेले खेल से बाहर हो जायेंगे। अन्त में जिस दल के खिलाड़ी दूसरे पक्ष के गुरु को ही उठा लायेंगे। वह दल विजयी होगा।

✲ बंदी बनाना

खिलाड़ियों की संख्या- 10-15

खेल वर्ग- दो दलों का खेल

खेल विधि- आमने-सामने पर्याप्त दूरी पर खड़े दो दल दोनों में से क्रमशः एक-एक स्वयंसेवक दूसरी ओर जायेगा। दूसरी ओर के सभी स्वयंसेवक अपना बाया पैर रेखा पर बांया हाथ सामने तथा दाहिना हाथ कमर या सिर के पीछे रखकर खड़े होंगे। दूसरे द से आया स्वयंसेवक (मोहन) इस दल के जिस खिलाड़ी के हाथ को स्पर्श करेगा वह मोहन को उसकी सीमा रेखा से पहले छूने का प्रयास करेगा। सफल होने पर मोहन को सोहन का अन्यथा सोहन को मोहन का बन्दी बनकर उसके पीछे बैठना होगा। जिसके पीछे बंदी बैठे हैं यदि वह खिलाड़ी स्वयं ही किसी का बदी बन जाता है तो उसके द्वारा बनाये गये सब बंदी भी छूट जायेंगे। जिस दल के सब लोग बंदी बन जायेंगे। वह पराजित माना जायेगा।

बाल कहानी

असावधानी देती विपत्ति

गर्मी का मौसम चल रहा था खजूर के झाड़ों में बहुत सारे खजूर लग चुके थे प्रदीप का मन हर मौसम के फल खाने के लिये सदैव उत्सुक रहता था मीठे-मीठे खजूर खाने के लिये आज फिर उसने जुगाड़ लगाने की सोची थी इसलिये वह जैन समाज के अध्यक्ष राकेश जी के पास आया और कहा नन्ना क्या कर रहे हो नन्ना ने कहा कुछ नहीं फुरसत में बैठे हैं। आजकल ग्राहकी कुछ भी नहीं है तो प्रदीप ने कहा चलो तो फिर अपन खजूर खा आयें तो नन्ना ने कहा अरे यार इतनी गर्मी में कौन जाए नन्ना ने टालते हुये कहा प्रदीप तुम्हें फालतू के काम क्यों सूझते हैं प्रदीप ने कहा अभी बादल छा रहे हैं और पानी गिर जायेगा तो खजूर का स्वाद ही बदल जायेगा फिर वो मजा नहीं आयेगा। प्रदीप ने नन्ना का हाथ खींचा और खजूर तोड़ने ले जाने के लिये वह खीचने लगा। नन्ना ने कहा तो क्या खजूर नीचे जमीन पर लगे हैं पहले बांस लेना पड़ेगा, उसमें एक हसियां भी लगाना पड़ेगा, तब कहीं हम खजूर खा पायेंगे।

नन्ना और प्रदीप सब व्यवस्था लेकर नदी के किनारे अपने खेत के खजूर तोड़ने चले गये। खेत में पहुँचकर बांस में लगे हंसियां से खजूर काटने लगे और प्रदीप खजूर की गैरों में से खजूर तोड़कर झोले में भरने लगे। राकेश नन्ना खजूर तोड़ने मे व्यस्त थे। और प्रदीप भरने में राकेश नन्ना का हंसिया कब मधुमक्खी के छत्ते पर लग गया ये उन्हें पता ही नहीं चला और मधुमक्खियों ने दोनों पर आक्रमण करना शुरु कर दिया नन्ना ने हंसिया और बांस जमीन पर पटका और दौड़ लगा दी और जोर से चिल्लाए प्रदीप भागो-भागो पर प्रदीप तो खजूर भरने में मस्त था फिर प्रदीप को जैसे ही मधुमक्खियों ने काटा वह भी दौड़कर भागा और झोले के सारे खजूर फैल गये। दोनों को खजूर तो नहीं मिले पर मुंह जरूर सूज गये मक्खियों के डंक से और उन्हें शिक्षा मिल गयी कि थोड़ी असावधानी आपत्ति का कारण बन जाती है।

संस्कार गीत

हर घर चरखा कर हथकरघा

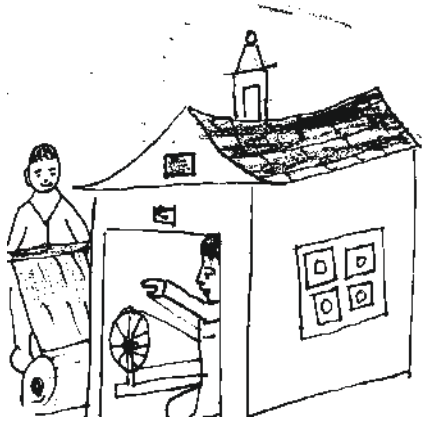

धर्म अहिंसा का सपना साकार तभी होगा
हर घर चरखा कर हथकरघा स्वाभिमान भी होगा

1.
स्वर्ग में बापू सुर असुरों से
यही तो कहने वाले
अब भारत तो पूर्ण स्वदेशी
मिट गये दिल के छाले
जैन संत अभियान चलाते
अभियान चलाते विद्यासागर
स्वप्न पूर्ण मम होगा

2.
खादी के तागे में करूणा चरखा गीत अलापें
मोहन राम की गायें मिलकर भूली रूदन विलापें
महावीर के उपदेशों का अब सम्मान ही होगा

3.
मन वचन काया प्रभु प्रार्थना पावन अब तो होगी
नारायण की भक्ति अनुपम, नर सेवा से होगी
अब भारत तो स्वर्ग बनेगा, हर्षित जन जन होगा

बाल कविता

धीरज

धीरज धन जिस जन के होता
वह निर्धन क्या हो सकता
आतम का विश्वास है जिसके
वह धीरज क्या खो सकता
जिसके लगन लगी हो दिल में
नहीं कभी वो सो सकता
जिसने हिम्मत कभी न हारी
क्या मुश्किल में रो सकता
धीरज धारी सब पर भारी
पाप कालिमा धो सकता

समाचार

दीक्षायें सम्पन्न

कोटा- मुनि श्री विश्रुतसागर महाराज जी के करकमलों से ब्र. श्रेय भैया कोटा की क्षुल्लक दीक्षा 02 अक्टूबर 2022 को श्री दिगम्बर जैन मंदिर कोटा राजस्थान में हुई जिनका नाम क्षुल्लक श्री निर्वेगसागर महाराज रखा गया।

महावीर जी- आचार्य श्री वर्धमान सागर महाराज जी के करकमलों से ब्र. नरेन्द्र जी जैन तथा ब्र. शांता देवी जैन को 29 अगस्त 2022 को श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र महावीर जी में दीक्षायें दी गई। जिनका नाम क्रमशः मुनि श्री प्रबुद्धसागर जी, आर्यिका प्रणतमति माताजी रखा गया।

महावीर जी- आचार्य श्री वर्धमान सागर महाराज जी के करकमलों से 5 अक्टूबर 2022 को श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र महावीर जी में ब्र. साधना दीदी, बा. ब्र. नेहा दीदी, बा. ब्र. दीप्ति दीदी, बा. ब्र. पूनम दीदी को आर्यिका दीक्षायें दी गई। जिनके नाम क्रमशः आर्यिका श्री निर्मोहमति माताजी, आर्यिका श्री विश्वयशमति माताजी, आर्यिका श्री पद्मयशामति माताजी, आर्यिका श्री दिव्ययशामति माताजी रखा गया।

झुमरी तलैया (विहार)- मुनि श्री विशल्यसागर महाराज जी के करकमलों से ब्र. संतोष भैया को एलक दीक्षा 6 अक्टूबर 2022 को श्री दिगम्बर जैन मंदिर झुमरी तलैया विहार में दी गई। जिनका नाम एलक तत्त्वार्थसागर रखा गया।

बांटेगांव (महाराष्ट्र)-आचार्य श्री वर्धमान सागर महाराज जी के करकमलों से ब्र. राजेन्द्र जैन सांगली, ब्र. चंद्रकांत जी बिटवे को मुनि दीक्षा 6 अक्टूबर 2022 को दी गई जिनके नाम क्रमशः मुनि श्री आगमसागर जी महाराज, मुनि श्री अध्यात्मसागरजी महाराज रखा गया।

वैराग (महाराष्ट्र)- आचार्य श्री सुयशनंदी महाराज के करकमलों से ब्र. कनकमाला दीदी (काकस महाराष्ट्र)की आर्यिका दीक्षा 30 सितम्बर 2022 को श्री दिगम्बर जैन मंदिर वैराग ता. वारसी सोलापुर महाराष्ट्र में हुई। जिनका नाम आर्यिका सवित्रश्री माताजी रखा गया।

जयपुर- आचार्य श्री सुनीलसागर महाराज जी के करकमलों से 3 अक्टूबर 2022 को क्षुल्लिका दीक्षा हुई जिनका नाम क्षुल्लिका अहिंसामति माताजी रखा गया।

जयपुर- आचार्य श्री सुनीलसागर महाराज जी के करकमलों से 14 अक्टूबर 2022 को श्रीमति हिम्मत देवी पाड़वा डूंगरपुर राजस्थान की आर्यिका दीक्षा हुई जिनका नाम आर्यिका दीक्षा हुई जिनका नाम आर्यिकाश्री सत्यमति माताजी रखा गया। आपने लगातार 11 उपवास किये।

आगामी दीक्षा

सहारनपुर (उ.प्र.)- आचार्य श्री ज्ञेयसागर महाराज जी के करकमलों से ब्र. आदीश भैया, ब्र. सुनीता दीदी की दीक्षा 30 अक्टूबर 2022 को सहारनपुर (उ.प्र) में संपन्न होगी।

समाधिमरण

सम्मेदशिखर- मुनि श्री पुण्यसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र सम्मेदशिखर जी मधुवन मध्यलोक में उनकी ही शिष्या आर्यिका उत्कर्षमति माताजी की समाधि 9.10.2022 शरदपूर्णिमा के दिन हुई।

जयपुर- आचार्य श्री सुनीलसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में क्षुल्लिका अहिंसामति माताजी का समाधिमरण 7 अक्टूबर 2022 को श्री दिगम्बर जैन मंदिर भट्टारक जी की नसिया

जयपुर में हुआ।

जयपुर- आचार्य श्री सुनीलसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में आर्यिका सत्यमति माताजी का समाधिमरण 24 अक्टूबर 2022 को श्री दिगम्बर जैन मंदिर भट्टारक जी की नसिया जयपुर में हुआ।

सम्मेद शिखर- आचार्य श्री विरागसागर जी की शिष्या आर्यिका श्री विश्वधर्मश्री माताजी का समाधिमरण श्री सिद्धक्षेत्र सम्मेद शिखर जी मधुवन बीसपंथी कोठी में भगवान महावीर के निर्माण उत्सव 25 अक्टूबर 2022 को प्रातः 6.06 मिनट पर हुआ।

पिच्छिका परिवर्तन

शहपुरा-मुनिश्री का 26 अक्टूबर 2022 को शहपुरा भिटोनी में हुआ जिसमें निर्यापक मुनि श्री वीरसागर महाराज जी की पुरानी पिच्छिका श्रीमती विभा डॉ. प्रतीक जैन मुनिश्री विशालसागर महाराज जी की श्रीमति सुनीता संतोष जैन लम्हेटा, मुनि श्री धवलसागर महाराज जी की श्रीमती संतोष जैन चरगुंवा वालो को प्राप्त हुई।

नारनोल- मुनिश्री का 16 अक्टूबर 2022 को नारनोल हरियाणा में हुआ जिसमें मुनिश्री पावनसागर महाराज जी की पुरानी पिच्छी श्रीमती नेहा संदीप जैन नारनोल, मुनि श्री सुभद्रसागर जी महाराज विजयकुमार जैन नारनोल को प्राप्त हुई।

नागपुर- निर्यापक मुनि श्री योगसागर का पिच्छिका परिवर्तन 27 अक्टूबर 2022 को हुआ जिसमें निर्यापक मुनिश्री योगसागर महाराज जी की पिच्छि श्रीमति नीलम मनोज जैन, विनीतसागगर जी की ब्र. नानु दीदी, सौम्यसागर जी की आशीष पंचमलाल जैन, अतुलसागर जी की सुचिता मोदी, निस्सीमसागर जी की श्रीमती नेहा सिद्धार्थ जैन, मुनि श्री शाश्वतसागरजी की श्रीमति बबली नितेश जैन नागपुर वालो को प्राप्त हुई।

स्वदेशी जागरण मंच का राष्ट्रीय अधिवेशन

आचार्य श्री विद्यासागर जी के सान्निध्य में एलक श्री सिद्धांतसागर महाराज जी के मार्गदर्शन में श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र अंतरिक्ष पार्श्वनाथ शिरपुर महाराष्ट्र में स्वदेशी जागरण मंच का राष्ट्रीय अधिवेशन दिनांक 19 नवम्बर से 20 नवम्बर 2022 को सम्पन्न होगा जिसमें राष्ट्रीय संयोजक -कश्मीरा लाल, राष्ट्रीय मंत्री- सतीशचंद जी उपस्थित रहेंगे। तथा इसमें राष्ट्र के 300 प्रतिनिधि उपस्थित होकर स्वदेशी जागरण हेतु चिंतन करेंगे।

समवशरण विधान सम्पन्न

इंदौर- आर्यिका श्री पूर्णमति माताजी के ससंघ सान्निध्य में 16 अक्टूबर से 20 अक्टूबर 2022 तक श्री दिगम्बर जैन मंदिर तुलसीनगर में समवशरण विधान ब्र. नितिन भैया के विधानाचार्यत्व में संपन्न हुआ।

अर्हत्चक्र विधान

इंदौर - आर्यिका श्री गुणमति माताजी के सान्निध्य में 1 नवम्बर 9 नवम्बर 2022 तक श्री दिगम्बर जैन मंदिर तिलकनगर के तत्त्वाधान में चमेलीबाग पार्क में ब्र. दीपक भैया के विधानाचार्यत्व में संपन्न होगा।

मंदिर शिलान्यस एवं जैनेश्वरी दीक्षा

किशनपुरा (शाहगढ़)- आचार्य श्री विभवसागर महाराज के ससंघ सान्निध्य में श्री दिगम्बर जैन मंदिर किशनपुरा शाहगढ़ का शिलान्यास एवं बा. ब्र. अक्षय भैया, बा. ब्र. सरिता दीदी की दीक्षा 30 नवम्बर से 2 दिसम्बर कार्यक्रम सम्पन्न होगी।

आगामी पंचकल्याणक

कुंदकुंद भारती (दिल्ली)- आचार्य श्री श्रुतसागर महाराज के सान्निध्य में कुंदकुंद भारती दिल्ली में दिनांक 02 दिसम्बर से 07 दिसम्बर 2022 तक पंचकल्याण प्रतिष्ठा

महोत्सव प्रतिष्ठाचार्य नरेश जी हस्तिनापुर के प्रतिष्ठाचार्यत्व में संपन्न होगा।

कंचनबाग इंदौर-मुनि श्री आदित्यसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में श्री दिगम्बर जैन श्राविका आश्रम कंचनबाग इंदौर में रत्न प्रतिमा का अरिष्ट नेमिनाथ जिनबिंब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा (स्फटिक मणी की विश्व की सबसे बड़ी प्रतिमा) 30 नवम्बर से 05 दिसम्बर 2022 को संपन्न होगा।

विद्या पैलेस इंदौर-मुनि श्री आदित्यसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में श्री दिगम्बर जैन मंदिर विद्या पैलेस इंदौर में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा 21 नवम्बर से 26 नवम्बर 2022 प्रतिष्ठाचार्य ब्र भरत जी शास्त्री के प्रतिष्ठाचार्यत्व में संपन्न होगा।

छावनी इंदौर-मुनि श्री आदित्यसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में श्री दिगम्बर जैन मंदिर छावनी इंदौर में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा 26 नवम्बर से 30 नवम्बर 2022 प्रतिष्ठाचार्य ब्र भरत जी शास्त्री के प्रतिष्ठाचार्यत्व में संपन्न होगा।

मधुवन शिखरजी- अंर्तमना आचार्य श्री प्रसन्नसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में 28 जनवरी से 3 फरवरी 2023 को पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र बीसपंथी कोठी मधुवन शिखर जी में सम्पन्न होगा।

नवरंगपुर (उड़ीसा)- मुनि श्री सुव्रतसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में श्री दिगम्बर जैन मंदिर नवरंगपुर उड़ीसा की पंचकल्याण प्रतिष्ठा 10 से 14 नवम्बर 2022 को संपन्न होगी।

सिद्धायतन (शिखरजी)- अंर्तमना आचार्य श्री प्रसन्नसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में 5 फरवरी से 10 फरवरी 2023 को पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र सिद्धायतन में सम्पन्न होगा।

आष्टा- श्री नेमिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर आष्टा में मुनि श्री भूतबलि महाराज ससंघ सान्निध्य में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव 2 से 7 दिसम्बर 2022 तक प्रतिष्ठाचार्य विमल जी बनेठा जयपुर के प्रतिष्ठाचार्यत्व में संपन्न होगा।

शरद पूर्णिमा कार्यक्रम सम्पन्न

पंचबालयति इंदौर- आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के अवतरण दिवस पर श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर इंदौर में गरबा प्रतियोगिता सम्पन्न हुई जिसमें प्रथम स्थान विद्यासागर ग्रुप पंचबालयति मंदिर इंदौर, द्वितीय स्थान स्कीम नं. 78, तृतीय स्थान महालक्ष्मी नगर इंदौर को प्राप्त हुआ । तथा अंजली नगर इंदौर ने विशेष स्थान पाया।

श्री 1008 सिद्धचक्र महामण्डल विधान का भव्य आयोजन

बावनगजा- श्री सिद्धक्षेत्र बावनगजा में प्रथम देव श्री आदिनाथ प्रभु के चरणों में संत शिरोमणि आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज के आशीर्वाद से उनके शिष्य पूज्य श्री दुर्लभसागर जी मुनिराज एवं पूज्य श्री संधानसागर जी महाराज के सान्निध्य में दिनांक 1 से 8 अक्टूबर 2022 तक सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन ब्र. जिनेश मलैया जी के विधानाचार्यत्व में सानंद सम्पन्न हुआ । विधान के पुण्यार्जक उदयनगर इंदौर निवासी श्रीचंदजी-मधुबाला जी, दीप्तिजी-दीपेश जी, प्रियंका जी-रूपेश जी, आर्जव, अर्हम, और अर्घ परिवार थे।

शरद पूर्णिमा बनी सार्थक मूकमाटी प्रयोगशाला

इस युग के चर्या शिरोमणि, अध्यात्म सरोवर के राजहंस, संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी मुनिराज का 77वाँ अवतरण दिवस उनके द्वारा रचित मूकमाटी ग्रंथ पर

मूकमाटी प्रयोगशाला राष्ट्रीय विद्वत संगोष्ठी का आयोजन दिनांक 9-10 अक्टूबर 2022 को पूज्य श्री दुर्लभसागर जी मुनिराज एवं पूज्य श्री संधानसागर जी मुनिराज ससंघ सान्निध्य में किया गया। संगोष्ठी में देश के अलग- अलग हिस्सों से पधारे मूर्धन्य विद्वानों की सहभागिता प्राप्त हुई। जिसमें प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र जी शिमला, डॉ. सुरेन्द्र कुमार भारती बुरहानपुर, पं. विनोद जैन रजवांस, ब्र. जिनेश मलैया इंदौर, ब्र. विनोद जी छतरपुर, ब्र. आकाश जी बनारस, डॉ. पंकज जैन इंदौर, डॉ. सोनल जैन दिल्ली, पं. अशोक जी इंदौर उपस्थित हुये एवं मूकमाटी प्रयोगशाला में विमर्श किया । संगोष्ठी का पुण्यार्जन श्रीचंदजी-मधुबाला जी, दीप्ति जी-दीपेश जी, प्रियंकाजी-रूपेश जी, आर्जव, अर्हम, अर्घ उदयनगर इंदौर निवासी परिवार ने किया। संयोजन ब्र. धर्मेन्द्र जी दिल्ली, एवं डॉ. मुकेश जैन विमल इंदौर ने रहे।

यशोवर्धन का विमोचन श्री सिद्धक्षेत्र बावनगजा आदि में

ऐतिहासिक कृति यशोवर्धन जो कि जेजाक भुक्ति के अधिपति यशोवर्मन (गोल्लाचार्य) जो कि डॉ. श्री सुनील जी सांधेलिया के द्वारा लिखित पुस्तक का विमोचन दिनांक 10 अक्टूबर 2022 को सिद्धक्षेत्र श्री बावनगजा में पूज्य श्री दुर्लभसागर जी मुनिराज एवं पूज्य श्री संधानसागर मुनिराज के सान्निध्य में मूकमाटी प्रयोगशाला में पधारे विद्वानों द्वारा किया गया। यह कृति भारत और जैन समाज के अनेकों अनछुये पहलुओं को प्रकाशित करती है । तथा 11 अक्टूबर 2022 को कटंगी में 14 अक्टूबर 2022 को बी.एस.एन.एल ऑफिस जबलपुर तथा बेंगलोर में 18 अक्टूबर 2022 को आचार्य सुनीलसागर महाराज जी के सान्निध्य में भट्टारक जी की नसिया जयपुर में तथा 19 अक्टूबर को आचार्य श्री वर्धमानसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में महावीर जी में लोकार्पण किया गया।

हाई स्कूल विदवास का नामकरण न्यायमूर्ति विमलादेवी जैन

म.प्र. शासन सामान्य प्रशासन के निर्देशानुसार, प्रभारी मंत्री सागर से अनुमोदित स्कूल शिक्षा विभाग मंत्रालय भोपाल से प्रस्तावित हाई स्कूल विदवास जिला सागर का नामकरण न्यायमूर्ति श्रीमती विमला देवी जैन किया गया जिसका आदेश कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट सागर द्वारा गत दिवस जारी किया।

श्रीमती विमला जैन सागर जिले के छोटे से ग्राम विदवास के स्व. सेठ श्री सुंदरलाल जी जैन की सुपुत्री है । म.प्र. उच्च न्यायालय में न्यायाधीश रहकर आपने समस्त जैन समाज को गौरान्वित किया है। आप श्री सुरेशचंद जी जैन (कलेक्टर) आई.ए.एस की धर्मपत्नी है । धार्मिक एवं सामाजिक कार्यक्रमों में आपकी सहभागिता हमेशा रहती है।

हाई स्कूल विदवास का नाम श्रीमति न्यायमूर्ति विमला जैन रखने समस्त जैन समाज द्वारा म.प्र. शासन एवं मा. प्रभारी सागर को धन्यवाद ज्ञापित किया है एवं श्रीमति विमला जैन को बधाई-शुभकामनायें प्रेषित की हैं।

कुष्ट रोग निवारण कुआँ

अंतरिक्ष पार्श्वनाथ शिरपुर पवली दिगंबर मंदिर में यह वही का कुँवा है जहां से अंतरिक्ष पार्श्वनाथ भगवान की मनोज्ञ प्रतिमा प्राप्त हुई इसी पानी के पीने की वजह से राजा श्रीपाल का कुष्ट रोग समाप्त हो गया था आज भी इसी पानी को पीने से लोगों की अनेका प्रकार की बीमारी चर्म रोग आदि नष्ट हो जाते है इसी कुँवे के पानी में अगर ईट डाली जाये तो वह ईट तैरती है यह परंपरा सालों से चलती आ रही है और लोग ठीक हो रहे हैं बस अंतरिक्ष बाबा पर श्रद्धा रखना जरूरी है।

वर्ग पहेली 277

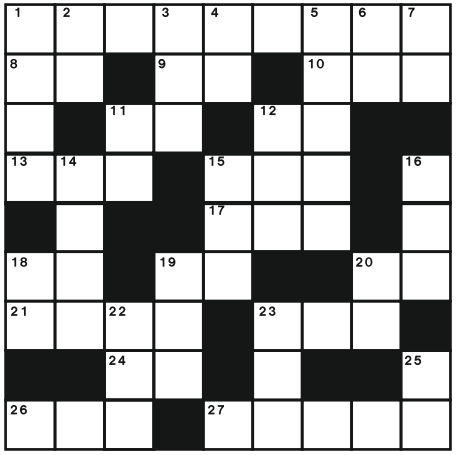

बाये से दाये

1. भारत के प्रथम प्रधानमंत्री -9
8. योग एक अंग मृत्यु का देवता -2
9. यश, कीर्ति -2
10. वनस्पति, वृक्ष -3
11. सौ, शतक, सौ की संख्या -2
12. प्रमाण, घमंड, मद -2
13. लवण, नोन -3
15. पतंग, सूरज, चंद्रमा, कनकौआ -3
17. पंगत, भोज, अन्नपूर्णा -3
18. सेवा, त्याग, वैय्यावृत्ति देने का भाव -2
19. पैर, पांव -2
20. विद्यालय, गुरुकुल शिक्षा मंदिर -2
21. सेना, फौज -4
23. शास्त्र, जिनवाणी -3
24. अभिमत, विचार -2
26. दृष्टि -3
27. आचार्य ज्ञानसागर जी का समाधिस्थल नगरी -5

ऊपर से नीचे

1. प्रवचनसागर के एक टीकाकार -4
2. बाँया, प्रतिकूल -2
3. चाँदी, रजत -2
4. शव, मुर्दा -2
5. मध्यप्रदेश का एक शहर -5
6. सीमा, अवधि, मर्यादा -2
7. छवि, फिगर, -2
11. संदेह -2
12. हाथी, चंडाल, -3
14. रसोइघर, चौका -4
15. पलका, खाट -3
16. पशुशाला गौ-निवास -3
18. दलहन, द्विदल -2
19. तह -3
22. कटि -3
23. दर्पण -3
25. ऊर्वरक -2

वर्ग पहेली 276 का हल

1 श	2 र	द	3 पू	र्णि	4 मा		5 मा	6 त
7 त	ह		र्ण		8 घ	9 मा	सा	न
10 क	म	ल		ला		रू		य
			11 सु	र	12 प	ति		
13 शी	14 ल		न		व		15 ज	16 ग
17 त	ल		18 य	19 म	न		20 न	ग
21 ल	क	ड़ी		ग		22 सु	म	न
ना			23 सु	र	24 भी			
थ		25 म	त		26 त	क	ली	फ

.....सदस्यता क्र. .....

पता : .....

.....

जैन विद्या संस्कृति प्रश्न मंच

संस्कार सागर के नवम्बर 2022 में दिया गया है। उत्तर भरकर देने की अंतिम दिनांक 23 फरवरी 2023 है।

प्रथम पुरुस्कार	द्वितीय पुरुस्कार	तृतीय पुरुस्कार	सान्त्वना पुरुस्कार
1लाख रूपये	51हजार रूपये	31हजार रूपये	सभी प्रतिभागियों को

प्रथम पुरस्कार प्रदाता

गजेन्द्र माया देवी जैन

गिन्नी ग्रुप

रियम इस्टेट डेवलोपर्स एण्ड बिल्डर्स

गिन्नी ग्रुप, यु.जी. 7–8 ओनम प्लाजा, इन्दौर (म.प्र.)

Mo.: 093032-15856, 098270-31356, Ph.: 0731-4041356

Website - www.ginnireality.com ✲ Email : ginnireality@yahoo.com

द्वितीय पुरस्कार प्रदाता

श्रीमति मणि आजाद मोदी

मोदी प्रिंटर्स

76/बी–1, पालोग्राउंड इंण्डस्ट्रीयल एरिया

पत्रिका के प्रेस के पीछे इन्दौर

फोन : 0731- 4954171, मो. 98260-16543

तृतीय पुरस्कार प्रदाता

स्व. श्रीमति स्वाती जैन

की तृतीय पुण्यस्मृति में

कु. पलक नीरज जैन

स्वाती इन्टरप्राइजेस (दिल्ली)

प्रश्न पत्र भरने के लिये पुस्तकें कार्यालय एवं बेबसाईट पर उपलब्ध है।

संस्कार सागर पढ़िए क्लिक पर Click पर www.sanskarsagar.org

सम्पर्क करें – 0731–4003506, 8989505108, 8989121008

प्रिंटिंग दिनांक 28/10/2022, पोस्टिंग दिनांक : 03/11/2022